डी वेलरा

—नारायणप्रसाद् अरोड़ा

इमन डी वेलरा

का

जीवन चरित्र

लेखक

बा० नारायण प्रसाद अरोडा बी० ए०

१९३२

प्रथमवार १००० प्रति]

[मूल्य १)

परिचय

प्रामाणिक इतिहास हमें बतलाता है कि सन ११६९ में हेनरी दूसरे ने पोप एडरियन चतुर्थ से आयरलैण्ड भेंट में पाया। ११७१ में वह स्वयम् आयरलैण्ड गया और पादरियों की सभा करके आयरलैण्ड को रोमन धर्म पद्धति के अनुसार ईसाई धर्म पर दृढ़ किया। इसी समय इंगलैंड के अधिपति लार्ड आव आयरलैण्ड कहलाये। हेनरी अष्टम ने पहले पहल 'किंग (राजा) आव आयर लैण्ड' की उपाधि ग्रहण की। इस तरह हमें मालूम होता है कि बारहवीं शताब्दी ईस्वी के अन्त में आयरलैण्ड पराधीनता के पाश में बँधा और सोलहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में इसके पैरों की बेड़ियां दृढ़तम हो गईं।

इस बीच में कभी भी आयरलैण्ड अपनी स्वतन्त्रता के लिए हाथ पैर हिलाने से रुका नहीं। आयरलैण्ड का यह सात सौ वर्ष की पराधीनता का इतिहास उन लोगों के हृदयों में अवश्य सम्वेदना उत्पन्न करेगा, जो स्वयम् हजार वर्ष से इस अवाञ्छनीय परिस्थिति को स्वयम् अनुभव कर रहे हों, क्योंकि 'घायल की गति घायल जाने जापै बीती होय'।

इस पुस्तक के लेखक श्रीयुत नारायण प्रसाद जी अरोड़ा (बी. ए., भूतपूर्व एम. एल. सी.) हैं। आपने अन्तिम बार

सन् १९३२ के आरम्भ में राजनीतिक कैदी की हैसियत से जेल जाने के पहले कुछ लोकोपकारी साहित्य निकालने का मुझसे परामर्श किया था किन्तु मैं बहुत बीमार था। इन्हीं दिनों वह हवाले हवालात हुए और अन्त में अपराधी निर्धारित होकर कारागार निवासी बने। प्रत्येक बुराई में भलाई भी हुआ करती है, यह जगत् बुराइयों और भलाइयों की खिचड़ी है। हमारे मित्र ने जेल में अनेक विषयों की पुस्तकें जो हाथ पड़ीं पढ़ीं और उन पर नोट लिए। उसी विविध विषय विभूषित नोट बुक का एक पृष्ठ डी वेलरा का जीवन चरित्र है।

मालूम होता है कि परिस्थिति साम्य के कारण अथवा नैसर्गिक अभिरुचि के कारण, जो भी हो, सहस्रों मील के अन्तर पर एक टापू में बैठे हुए स्वनाम धन्य डी वेलरा ने अपनी वीरता, विद्वत्ता और देश-प्रेम निष्ठता से मेरे मित्र अरोड़ा जी का मन हर लिया। अभी तक पब्लिक और प्राईवेट कामों की झंझटों ने इन्हें डी वेलरा के जीवन वृतान्त पढ़ने का अवसर न दिया था, जेल में शान्ति और सुभीते के साथ एक अंग्रेज़ का लिखा हुआ 'डी वेलरा चरित्र' पढ़ कर इनका मन उस वीर प्रवर पर मुग्ध हो गया।

स्वाभाविक बात है, सच है कि वीर पुरुष किसी देश का हो, किसी जाति का हो, किसी धर्म का हो—शत्रु हो या मित्र—पूजार्ह है, संसार की प्रतिष्ठा का पात्र है, जगत् के स्नेह का भाजन है। वीर, विद्वान भावुक-हृदय पर अधिकारी हुए बिना

नहीं रहता। वीर-गाथाओं को आबाल वृद्ध सभी प्रेम से बारम्बार सुनने और पढ़ने को उत्सुक रहते हैं।

मानव ज्ञान पर मनुष्य मात्र का अधिकार होता है, गुण गरिमा और ज्ञान, विज्ञान एक देशीय नहीं होते। वीर और विद्वान विश्व बन्द्य होते हैं। इनके चरित्रों से संसार के अगणित नर नारी अनुप्राणित और दीक्षित होते हैं।

डी वेलरा कोई साधारण पुरुष नहीं है, इसका असाधारण व्यक्तित्व, भांति भांति के रंगों या संयोगों से रञ्जित इसका जीवन, इसका स्वदेश-प्रेम-परिस्रावित हृदय प्रमाणित करता है कि यह क्रामवेल, हेम्पडन, वाशिंगटन, मटजीनी सदृश वीर, उदार चेता पुरुषों का समकक्ष है, वह संसार के बड़े से बड़े देशप्रेमी शूर का हमपल्ला है। आज गुणग्राही संसार उसके सद्गुणों की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करता है। फिर भला मेरे मित्र नारायण प्रसाद इसके चरित को पढ़ कर मन्त्र मुग्ध क्यों न होते, इसके शिक्षाप्रद जीवन का संक्षिप्त वृतान्त अपने देश के बालकों के हाथ में रखने का प्रयत्न करने में कैसे चूकते ?

वेलरा अपनी मातृ भूमि की ममता-मद्य से उन्मत्त है किन्तु किसी अन्य जाति, देश या धर्म का अनिष्ट नहीं चाहता। यहां तक कि जिस ग्रेट ब्रिटेन से वह अपने जन्म सिद्ध अधिकारों के लिए झगड़ता आया है और झगड़ रहा है उसका भी अकल्याण नहीं चाहता, उसके प्रति भी कोई दुर्भाव नहीं रखता। इसी का नाम वीरता है। हमारी यह धारणा विचारशील पाठक पाठि-

काओं को इस पुस्तक को मनोयोग के साथ पढ़ने में बिल्कुल सत्य मिलेगी।

हमारे देश वासी, आयरलैण्ड के उद्धार करने के व्रत के व्रती, सात सौ वर्ष की पराधीनता के बन्धन को हटाने के प्रण धारी, दुखियों के साथ हार्दिक सम्वेदना रखने वाले, स्वाधीनता के पुजारी, डी वेलरा के चरित पाठ से अध्यवसाय, एकनिष्ठता देशप्रेम, निर्भीकता, वीरता, सदाचार आदि मनुष्योचित गुणों को ग्रहण करके अपना जीवन सफल बना सकते हैं।

राधामोहन गोकुल जी

ईमन डी वेलेरा
(३६ वर्ष की अवस्था में)

हिन्दी प्रेस, प्रयाग

ॐ

ईमन डी वेलरा

प्रथम अध्याय

ईमन डी वेलरा का जन्म १४ अक्टूबर १८८२ को न्युयार्क नगर में हुआ था। इनके पिता का नाम विवियन डो वेलरा था, जो स्पेनिश जाति के थे। इनकी माता का नाम केथराइन कोल था, जो लेमरिक नगर के ब्रूरी नामक स्थान की रहनेवाली थीं।

सन् १८८२ में आयलैंड की वास्तविक स्थिति क्या थी ? वहाँ पर शासकों का दमन चक्र बड़े वेग से चल रहा था। पार्नल, डिलन, सेक्सटन और फादर शीनी जो आगे चल कर डी वेलरा के ग्राम पुरोहित बने थे—जेल में डाल दिये गये थे। इस प्रकार डी वेलरा के जन्म ही से आयलैंड की स्वतन्त्रता के एक नये आन्दोलन का आरम्भ होता है। यद्यपि उस आन्दोलन की सीमा परिमित थी और इसमें सफलता भी केवल आंशिक ही हुई, किन्तु इस आन्दोलन ने आयलैंड की राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के विकट संग्राम की नींव डाल दी।

बचपन ही से 'डि वेलरा' एक स्वस्थ बालक था। यद्यपि उसमें स्थूल-काय होने के कोई लक्षण न थे, परन्तु उसका चेहरा भरा हुआ था। मुख पर एक प्रकार की आभा थी, अतएव वह प्रसन्न मुख दिखलाई देता था। उसकी केवल आकृति ही आकर्षक न

था; किन्तु बाल-काल ही से उसमें सिपाहियों की सी आन बान भी थी और उसकी चाल ढाल से मालूम देता था कि वह एक बड़े प्रजातन्त्र का नागरिक होने योग्य है। स्पेनिश पिता और आयरिश माता से पैदा होने के कारण उसके रक्त में दोनों वीर जातियों की अदम्य युद्ध-प्रियता उपस्थित थी। यद्यपि डी वेलरा के प्रारम्भिक बाल्यकाल में यह विशिष्ट लक्षण बहुत प्रत्यक्ष रूप से नहीं दिखाई देते थे तथापि उसके आयर्लैंड भेजे जाने के पहले, जब कि वह ढाई वर्ष का भी नहीं हुआ था, एक ऐसी घटना हो गई जो विशेष महत्व की है। कहा जाता है कि एक रोज गली में खेलते हुये वह एक अमीर अंगरेज़ के घर में चला गया। जब उस अंगरेज़ ने इस बालक को अपने घर में देखा तो उसने उसे अपने पास बुला लिया। उसने उसके सामने दो झंडे पेश किये, एक युनियन जेक था और दूसरे पर तारे और धारियाँ बनी थीं। डी वेलरा ने दोनों को देखा और कुछ देर सोचने के बाद उसने अमरीकन झण्डा उठा लिया। उस अंगरेज़ ने हँसते हुये बालक डी वेलरा से कहा, "अच्छा अब आओ और वह झण्डा मुझे दे दो और यह तुम ले लो। किन्तु बालक ने उस दूसरे झण्डे को लेने से इन्कार किया और अपने हाथ वाले झण्डे को जोर से पकड़ लिया। वह अंगरेज़ बोला "अच्छी बात है, लो तुम दोनों ले जाओ।" यह कह कर उस अंगरेज़ ने युनियन जेक को बालक की जेब में खोंस दिया। किन्तु ज्योंही उसने ऐसा किया त्योंही बालक डी वेलरा ने उसे अपनी जेब से निकाल कर ज़मीन पर फेंक दिया और अपने हाथ बाँध कर उस अंग्रेज़ के सामने बड़ी शान से अकड़ कर खड़ा हो गया। यद्यपि यह एक बच्चों का खेल था और बालक ने सहज स्वभाव से ही अमरीकन झण्डे को पसन्द किया था, किन्तु इस छोटी सी घटना में आयरिश जाति के

भावी नेता की मनोभावना को एक चमत्कारिक छटा दिखलाई देती है।

जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, डी वेलरा के पिता स्पेनिश जाति के थे। वह बड़े विद्वान और योग्य थे। अमरीका आने के पहले उन्होंने स्पेन में बड़ी ख्याति प्राप्त कर ली थी। वह कई भाषाओं के पण्डित और गान विद्या के अच्छे मर्मज्ञ थे। बाल्य-काल ही से उन्होंने गान विद्या सीखना आरम्भ कर दिया था और यदि ३२ वर्ष की अवस्था ही में उनकी मृत्यु न हो गई होती तो उत्तम गायकों में उनका दर्जा बहुत ऊँचा हुआ होता। उन्होंने आयरिश गान विद्या का अध्ययन भी आरम्भ किया था किन्तु मौत ने उसे सफल न होने दिया। विवियन डी वेलरा केवल आयरिश गान विद्या के अध्ययन से ही सन्तुष्ट नहीं हुये; किन्तु अपने विवाह के पश्चात् इनके पास जितना समय फुरसत का बचता था, वह उसे आयरिश भाषा के अध्ययन में लगाते थे और आठ ही दस महीने में साधारणतः अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। वह अपने जीवन का एक दिन भी ऐसा न व्यतीत होने देते जिसमें उनके शब्द भाण्डार की वृद्धि न होती हो। आयरिश भाषा में उनकी बात चीत सुनकर डी वेलरा की माता को बड़ा आनन्द आता था। जब कोई अतिथि उनके घर पर आता तो वह आयरिश ढंग से उससे सलाम करके उसका स्वागत करते। जब विवियन आयरिश भाषा में बात चीत करते करते पूर्ण रूप से अपने भावों को व्यक्त न कर पाते और दूसरी भाषा का प्रयोग करने लगते तब ख़ूब मज़ाक होता और उस परिहास में वह स्वयं भी शामिल हो जाते।

विवियन डि वेलरा को अपने देश स्पेन के इतिहास पर बड़ा गर्व था। वह अक्सर कहा करते थे कि यद्यपि घरेलू कलह के

कारण स्पेन में कुछ बेचैनी है किन्तु स्पेन के लोग आयरलैंड वालों की तरह विदेशियों की दस्तन्दाजी सहन नहीं कर सकते। सच तो यह है कि दोनों ही देशों में यह बात एकसाँ थी, दोनों ही विदेशी हुकूमत के सख्त विरोधी थे। जिस बात को विवियन डी वेलरा केवल इतिहास की दृष्टि से देखते थे उसी बात का उनके पुत्र ईमन को एक जीवित प्रश्न के रूप में सामना करना पड़ा। जब जोजेफ बोनापार्ट ने स्पेनिश लोगों को एक राजीनामा करने के लिये समझाने की कोशिश ठीक उसी तरह की जिस तरह लायड जार्ज ने आयरिश लोगों की उमंगों को दबाने का प्रयत्न किया था और यह कार्य इसलिये नहीं किया गया था कि उसे स्पेन वालों से कोई खास प्रेम था या वह उनका कोई सुव्यवस्थित संगठन बनाना चाहता था बल्कि उसकी वास्तविक इच्छा यह थी कि स्पेनवालों पर अपने अधिकारों की सत्ता किस प्रकार दृढ़ता के साथ स्थापित करे। उस समय स्पेनवालों का उस संगठन की ओर कैसा रुख था इसे एक अंग्रेज ने इन शब्दों में व्यक्त किया है:—

"स्पेन के लोग उस राज्यव्यवस्था के गुणों और औगुणों की तनिक भी परवा नहीं करते थे। यदि वह संसार की अच्छी से अच्छी शासन व्यवस्था होती तो भी वे उसे ठुकरा देते। विदेशियों से सम्बन्ध रखने वाली हरेक वस्तु उनकी दृष्टि में भयानक प्रतीत होती थी। इसके अलावा उन्होंने तो अपनी इच्छा के अनुसार नई सरकार बनानी आरम्भ भी कर दी थी, क्योंकि तीन सौ वर्षों से अभ्यस्त न होने पर भी उनमें आत्म-शासन की क्षमता और योग्यता बाकी थी।

जिस समय बोनापार्ट यह सोच रहा था कि स्पेन का शासन कैसे किया जाय, उसी समय स्पेन के भिन्न भिन्न जिलों में आयरिश

सीनफीन सभाओं की तरह सभायें स्थापित हो रही थीं, जिनका उद्देश्य यह था कि किस प्रकार बोनापार्ट के परिवर्धित अधिकारों की रोक टोक की जाय। फलतः जनता की देश-भक्त पार्टी ने विदेशी आक्रमणकारी के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी और किसी प्रकार के भी समझौता करने से इन्कार कर दिया। अंग्रेजों की सहायता लेकर स्पेन स्वतन्त्र हो गया।

ईमन डी वेलरा की माता का नाम केथराइन कोल था। वह लेमरिक प्रदेश के ब्रूरी नामक स्थान की रहनेवाली थी। उसके निवास-स्थान के ज़िले भर में उसकी बड़ी इज्ज़त थी। जिस समय वह सन् १८७९ के अक्टूबर मास में अमेरिका जाने लगीं, उस समय सारे जिले के लोग बड़े दुःखी हुये। अमेरिका पहुँच कर उन्होंने संयुक्त राज्य में काफ़ी भ्रमण किया। अपने पति की तरह उन्होंने भी उच्च शिक्षा प्राप्त की थी, शिक्षा के ही कारण उन्हें अपने भ्रमण में बहुत आनन्द प्राप्त हुआ। अपनी युवा-वस्था ही से वह एक योग्य और आदर्श महिला थीं।

अमेरिका में ईमन डी वेलरा का जन्म होना हमें यह स्मरण कराता है कि अमेरिका और आयरलैंड का सम्बंध बहुत प्राचीन-काल से रहा है। अमेरिका के सामाजिक, राजनैतिक, व्यापारिक और सामरिक जीवन में आयरलैंड के लोगों का विशेष हाथ रहा है। अमेरिका के बड़े बड़े लोगों में आयरिश लोगों ने खास स्थान प्राप्त किये थे। वाशिङ्गटन की आधी फ़ौज आयरिश थी। अमेरिका के बड़े बड़े धनीलोगों में अनेक आयरिश भी हुये हैं। सारांश यह कि अमेरिका की सभ्यता को बनाने और उसे वर्तमान उच्च शिखर पर पहुँचाने में तथा संसार की महती जातियों में उसकी गणना करवाने में आरम्भ काल ही से आयरिश लोगों का विशेष हाथ रहा है।

दूसरा अध्याय

सन् १८८४ के आरम्भ ही से ईमन डी वेलरा के पिता बीमार पड़ गये और इसी साल के अन्त में इस असार संसार से चल बसे और बालक ईमन तथा उसकी माता को दुःख सहन करने के लिये छोड़ गये। इस प्रकार के दुःख और चिन्ता को वही समझ सकता है जिसने यह अनुभव किया हो कि घर के सिरधरा और जीविका के एक मात्र सहारा के उठ जाने से एक बड़े कुटुम्ब की क्या दशा होती है और वह भी न्यूयार्क सदृश बड़े और व्यापारिक नगर में। डी वेलरा की माता के सामने एक बड़ी समस्या उपस्थित हो गई। यद्यपि उनकी दशा साधारणतया अच्छी थी परन्तु वह अमीर नहीं थी। अतएव आगे चलकर उनके सामने अपनी और अपने बच्चे की परवरिश का प्रश्न अवश्य उपस्थित होने वाला था। चूंकि वह एक सुयोग्य और विदुषी महिला थीं इसलिये उन्हें अपने लिये समुचित काम के ढूढ़ने में कोई कठिनाई नहीं हुई, किन्तु सबसे कठिन समस्या तो यह थी कि उनकी अनुपस्थिति में बालक ईमन की सेवा सुश्रुषा कौन करे।

वे इसी चिन्ता में निमग्न रहती थीं कि दैवयोग से एक रोज उनके भाई एडमन्ड का पत्र आया कि, "मैं आयरलैंड आने वाला हूँ। मेरा स्वास्थ्य ख़राब हो गया है और डक्टरों ने मुझे यही सलाह दी है कि कुछ दिन के लिये आयरलैंड जाने से मेरा स्वास्थ्य सुधर जायगा।" इस पत्र को पाते ही ईमन की माता के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि यदि मैं ईमन को अपने भाई के साथ अपनी माता के पास भेज दूँ तो बहुत अच्छा हो। इस विचार को उसने अपने भाई एडमन्ड पर प्रकट किया और एक पत्र अपनी माता एली-

जेवेथ को लिखा। दोनों उसके विचार से सहमत हुए। अब ईमन को आयरलैंड भेजने का प्रबन्ध होने लगा। परन्तु सच बात यह है कि अपने बालक को उसके मामा के साथ आयरलैंड भेजने में उसे अपने कलेजे पर पत्थर रखना पड़ा।

एडमन्ड कोल का कुटुम्ब बड़ा था। उसके कई लड़कियाँ और तीन लड़के थे। अतएव उन्हें कुछ महीनों के बाद ही अपना स्वास्थ्य सुधार कर अमरीका लौटना पड़ा। उनके लौटने के साथ आठ वर्ष पश्चात् डी वेलरा की माता ने अपना पुनर्विवाह कर लिया और अब वह मिसेज़ ह्वीलराइट कहलाने लगीं। नये पति से उनके दो सन्तानें हुईं, एक लड़की और दूसरा लड़का। किन्तु लड़की का दस वर्ष की अवस्था में ही देहान्त हो गया और बालक ह्वीलराइट पढ़ कर पादरी बनने का इच्छुक हुआ। मिसेज़ डी वेलरा को यह देख कर बड़ा सन्तोष हुआ कि उनका एक बालक अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिये और दूसरा ईश्वर की सेवा के लिये लालायित है।

ता० २० अप्रेल सन् १८८५ को एडमण्ड कोल डी वेलरा को लेकर अमरीका से आयरलैंड पहुँचे। पहुँचते ही डी वेलरा को उन्होंने अपने भाई पेटरिक कोल के सिपुर्द कर दिया। पेटरिक कोल ने उसी रोज़ से अपने होनहार भानजे की पूरी देख रेख आरम्भ कर दी और उसका चरित्र और भविष्य बनाने में कोई उपाय बाकी न छोड़ा।

यथा समय ईमन डी वेलरा ब्रूरी के राष्ट्रीय स्कूलों में भेजे गये। यद्यपि ईमन को छोटी अवस्था में असाधारण उन्नति करने वाला बालक नहीं कहा जा सकता किन्तु उसने आरम्भ काल ही से अपनी मानसिक शक्ति और पढ़ने में मनोयोग की आदत का चमत्कार दिखला दिया। डी वेलरा के सबसे प्रथम अध्यापक का नाम

जानकेली था। यह बहुत योग्य परिश्रमी और निष्ठावान अध्यापक थे। उन्हें बालकों की भलाई का बड़ा ध्यान रहता था। वह बालकों को केवल किताबी शिक्षा देकर ही सन्तुष्ट न होते थे किन्तु बालकों की धार्मिक और नैतिक शिक्षा पर भी पूरा ज़ोर देते थे। उनके पढ़ाये हुये बालकों पर एक विशेष छाप रहती थी जिससे वे कहीं भी पहचाने जा सकते थे। प्रार्थना का भाव उस स्कूल की एक विशेषता थी। उत्तम शिक्षा की उपयोगिता पर बालकों को बहुधा व्याख्यान सुनाये जाते थे। एक दिन दर्जे में अध्यापक महोदय ने डी वेलरा से कहा, "तुमको और सब अच्छे लड़कों को एक दिन बाइसिकिल, घड़ी और चेन मिलेगी।" यद्यपि स्कूल मास्टर का डंडा लड़कों को भय दिखला कर कुछ उपयोगी अवश्य साबित हो सकता है परन्तु उसमें यह शक्ति नहीं है कि वह स्वतन्त्रता के भाव और विद्यालय का प्रेम उत्पन्न कर सके। ये बातें तो बुद्धिमत्ता पूर्ण दी हुई नेक सलाह से ही प्राप्त होती हैं।

जब डी वेलरा पहले दिन स्कूल गये तब वह मखमल का एक सुन्दर सूट पहने हुये थे। उस सूट को पहने हुये वह बहुत चुस्त व चालाक दिखलाई पड़ते थे। उनके स्कूल मास्टर को उनका नाम ठीक लिखने के लिये कई बार उनसे पूछना पड़ा और अन्त को एक दूसरे लड़के की सहायता से ज्यों त्यों करके स्कूल में भर्ती होने की पहली मुसीबत दूर हुई।

स्कूल में प्रवेश होने के दो तीन वर्ष बाद डी वेलरा ने भविष्यत् में होनहार होने का लक्षण दिखलाना आरम्भ कर दिया। जब वह अपने दर्जे का पाठ याद कर लेता तो वह ऊँचे दर्जे में इस अभिप्राय से चला जाया करता कि वहाँ के लोगों से उन विषयों पर अधिक जानकारी प्राप्त करे जिन्हें उसने अपने दर्जे में पढ़ा था। ऐसा कोई विषय नहीं था जिसे वह अच्छी तरह समझ न

लेता हो, किन्तु बाल्यकाल से ही उसने गणित में आपेक्षिक विशेषज्ञता प्राप्त कर ली थी, सुतराम् राष्ट्रीय स्कूल छोड़ने के पहले ही वह उसी स्कूल के ऊँचे दर्जों के लड़कों को गणित पढ़ाने के लिये नियत कर लिया गया। बारह वर्ष के पश्चात् वह पढ़ने लिखने में और भी मेहनती हो गया। जब देखो तब किताब उसके हाथ में। भोजन करने बैठा तो सामने मेज पर किताब खुली हुई! उसके मामा का कहना है कि उसकी अभिरुचि साहसिक कामों की पुस्तकों के पढ़ने की ओर अधिक थी, नपोलियन और वेलेस के विषय में उसने खूब पढ़ा था। एलेक्जेन्डर डूमा की लिखी हुई 'तीन सिपाही' नामक पुस्तक तो उसे इतनी पसन्द थी कि वह बिना कहीं अटके उसके अध्याय के अध्याय दोहराता चला जाता था। उसकी धारणा शक्ति विचित्र थी। निबन्ध लिखने की उसमें बड़ी शक्ति और योग्यता थी। जो पुस्तकें उसने पढ़ी थीं उन पर उसने बड़े बड़े सुन्दर लेख लिखे हैं। किन्तु दुर्भाग्यवश वे लेख अब अप्राप्य हैं। नाटकों में भाग लेने का इसे बड़ा प्रेम था, किन्तु वह पार्ट ऐसे अफसर का लिया करता था जिसमें पेटी कमर में कस कर तलवार लेनी पड़े और कुछ वीरता सूचक काम करना हो।

डि वेलरा के बचपन के मानसिक विचारों की एक बड़ी विलक्षण बात यह थी कि वह बड़ी लगन के साथ स्थानीय गिरजाघर में अतिनिर्दिष्ट धार्मिक उपदेश सुनने जाया करता। उसे पादरी की वक्तृत्व-शक्ति और उपदेश दोनों ही में आनन्द प्राप्त होता था। जब उपदेश समाप्त हो जाता तो वह उस पर अपने साथियों के साथ वाद विवाद करता और वह योग्यता दिखलाता जो विद्वानों और वयोवृद्ध लोगों में भी न पाई जाती।

जैसा वह विद्या प्रेमी था वैसा ही वह खेल कूद में भी पूर्ण

उत्साह से भाग लेता था। जब वह पुस्तकों में निमग्न न होता तो फुटबाल खेलता या १०० गज की दौड़ में अपनी योग्यता का परिचय देता, अथवा और किसी खेल में लग जाता। उसके लिये और कोई बीच का रास्ता ही न था। वह अपना एक क्षण भी व्यर्थ न जाने देता। जब कभी और बहुधा ही ऐसा होता कि ब्रूरी की टीम जीत कर आती तो लोग एक दूसरे को प्रोत्साहन देने के लिये शोर मचाते। इस विजय घोष के समय डी वेलरा सबसे आगे, सबसे ज्यादा और खुलकर शोर मचाने वालों में होता।

उसके मामा का कहना है कि डी वेलरा बड़ा खिलाड़ी था। कभी कभी ऐसा होता था कि वह भेजा तो जाता किसी दूसरे काम से पर रास्ते में उसके कुछ खिलाड़ी दोस्त मिल जाते तो वह उनके साथ खेलने में लग जाता। घर आने पर अगर जवाब तलब किया जाता तो सच्चा कारण बता देता, किन्तु महीना पन्द्रह दिन बाद फिर वही बात। छोटे मोटे खेलों में उसे कोई आनंद न आता। उसे कुआँ खोदने का बड़ा शौक था। वह अक्सर अपने एक दो साथी को लेकर इधर उधर निकल जाता और बैठा बैठा कुआँ खोदा करता। इसमें उसे बहुत आनंद मिलता यद्यपि इससे लाभ कुछ भी न होता, सारी मेहनत व्यर्थ ही जाती।

तेरह वर्ष की अवस्था में डी वेलरा की प्रतिभा ने उसके अध्यापकों का ध्यान आकर्षित किया और उनमें से एक ने उसके मामा पेटरिक कोल से कहा कि यह बालक बड़ा होनहार है, आप इसे हाई स्कूल भेजिये। यद्यपि कोल महोदय की आमदनी बहुत परिमित थी, किंतु यह बड़ी तारीफ़ की बात है कि उन्होंने डी वेलरा को हाई स्कूल भेजना बड़े हर्ष से स्वीकार कर लिया और अपने भानजे की ऐसी तारीफ़ सुन कर उन्हें बड़ा आनन्द हुआ।

अतएव आपने अपने और खर्चों को घटा कर बड़ी चतुराई के साथ डी वेलरा की शिक्षा के लिये सहर्ष बचत निकाली।

डी वेलरा के मामा बड़े सज्जन और उद्योगी पुरुष थे। यह ईश्वर की कृपा थी कि डी वेलरा को उनके अधीन रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कोल मजदूर आन्दोलन में विशेष भाग लेते थे और बहुधा मज़दूरों की सभाओं में व्याख्यान भी दिया करते थे। १९१६ की क्रान्ति तक राजनीति में वह विलियम ओ-ब्रायन के पक्ष में रहे। उनका कहना है कि बचपन में डी वेलरा को राजनीति से चिढ़ थी। कोल महाशय के घर में अक्सर लोग आया करते थे और जब कभी वर्तमान राजनैतिक नेताओं की बातों पर बहस होने लगती डी वेलरा अपनी पुस्तक उठा कर अलग पढ़ने लग जाता। हाँ, यद्यपि यह सत्य है कि वह इन वाद विवादों में कोई भाग नहीं लेता था, किन्तु इतना तो मानना ही पड़ेगा कि बचपन की इस ग्रहण शील अवस्था में उसके चारों ओर जो कुछ होता था उससे उसका प्रभावान्वित होना स्वाभाविक था। डी वेलरा के बाल्यकाल ही में पेटरिक कोल ने अपना बिवाह किया और उनके तीन सन्तानें हुई—एक लड़का और दो लड़कियां। सब बड़े होने पर बहुत प्रेम भावसे डी वेलरा के साथ रहने लगे, उनमें और डी वेलरा में कभी लड़ाई झगड़ा न होता था। कोल के कुटुम्ब की विशेषता यह थी कि कुवाक्य बोलनेवाले का इस घर में कभी स्वागत न होता, यहाँ तक कि ऐसा आदमी दुबारा घर में घुसने भी न पाता था।

डी वेलरा का जन्म स्थान ब्रूरी ऐतिहासिक रोचकता का स्थान है। अब तक वहाँ पर प्राचीन किलों के चिन्ह मौजूद हैं। इन प्राचीन चिन्हों को देखने का डी वेलरा को बड़ा शौक था। जब कभी कालेज की छुट्टियों में उसे अपनी पुस्तकों से अवकाश

मिलता था वह इन्हीं ऐतिहासिक स्थानों के आस पास शिकार खेलने जाया करता था। वह इन स्थानों के इतिहास से भली भाँति परिचित था।

अध्यापकों के कहने के अलावा मिस्टर कोल ने स्वयं अपने अनुभव से यह जान लिया था कि उनके भानजे की बुद्धि बड़ी प्रखर और मन बड़ा निर्मल है। जिन्हों ने उसका बचपन देखा है उनका कहना है कि डी वेलरा एक बड़ा पवित्र बालक था। आगे चल कर जो कुछ उसकी सूझ और वक्तृत्व शक्ति का विकास हुआ उसे देख कर यह ख़याल होता है कि यदि वह पादरी बना होता, जैसा कि किसी समय असम्भव नहीं प्रतीत होता था, तो वह पादरी समुदाय का भूषण होता? यद्यपि स्वभाव से ही वह नये आदमियों के सामने कुछ खिंचा सा रहता था, फिरभी जान पहचान के लोगों से वह खूब खुल कर बात चीत करता था। इसी गुण के कारण कोल महाशय अकसर स्कूल के बाद उसे अपने साथ घुमाने ले जाया करते और रास्ते में मामा भानजे को खूब बातचीत होती। वह अपने मामा से सैकड़ों सवाल किया करता और वे उनका उचित्त उत्तर देकर उसकी जिज्ञासा को सन्तुष्ट कर देते, क्योंकि वह समझते थे कि किसी बुद्धिमान बालक के प्रश्नों को यों ही टाल देना मूर्खता है। एक तो अपने भानजे के सम्बन्ध में स्वयं मिस्टर कोल के विचार बहुत अच्छे बन गये थे और दूसरे स्कूल के अध्यापकों की रिपोर्ट बड़ी अच्छी थी। इसलिये उन्होंने २ नवम्बर सन १८९६ को डी वेलरा को 'रथलूटिक' स्थान के 'क्रीश्चियन ब्रादर्स स्कूल' में भेज दिया।

डी वेलरा के घर से रथलूटिक ६ मील की दूरी पर था। सुबह ठीक समय से रेलगाड़ी जाती थी, इसलिये वह रेल से जाया करता, किन्तु लौटते वक्त रात को कभी पैदल और कभी

अपने साथियों की सवारी पर आजाता। क्योंकि रेल के आने की प्रतीक्षा करने में उसे स्कूल के बाद तीन घंटे ठहरना पड़ता था और जो लड़का अपना सारा समय पढ़ने अथवा खेल कूद में बिताना चाहे उसके लिये तीन घंटे गाड़ी का इन्तज़ार करना असह्य हो जाना स्वाभाविक था। पैदल चल कर भी वेलरा गाड़ी के पहुँचने के पहले ही अपने घर पहुँच जाता।

क्रिश्चियन ब्रदर्स स्कूल में पहुँचते ही वह और ख़ूब मेहनत करके विद्याध्ययन करने लगा और ६० पौण्ड की एक छात्रवृति भी प्राप्त कर ली। डी वेलरा के मन पर 'वालटेयर' की इस बात का पूरा प्रभाव था कि 'रुपये को व्यर्थ खोना ही फ़ुज़ूल खर्ची का सबसे बड़ा दुर्गुण है'। इस समय डी वेलरा के अध्यापक प्रेन्डरविल महाशय थे। वह आरम्भ काल से ही उसकी समय की पाबन्दी मेहनत और कार्य निष्ठता देख कर उससे बड़े प्रसन्न रहने लगे। यही गुण अध्यापकों को बहुत प्रिय भी होते हैं। यह गुण 'आर्क विशपमैनिक्स' में भी मौजूद थे। इन्होंने भी इसी स्कूल में शिक्षा प्राप्त की थी और आगे चलकर आयरलैंड के स्वतंत्रता संग्राम में यह डी वेलरा के सच्चे साथी और सहायक बने।

रथलूटिक स्कूल की शिक्षा प्राप्त करके डी वेलरा डबलिन के ब्लेकराक कालेज में भर्ती हुये। ब्लेकराक कालेज में उनका कार्य काल बहुत प्रतिभावान रहा।

डी वेलरा के कालेज जीवन के विषय में कालेज के सभापति पादरी ब्रेनन कहते हैं:—

"मिस्टर डी वेलरा का इन्टरमीडियेट और यूनिवरसिटी कार्य-काल बड़ा प्रतिभाशाली रहा है। वह अनेक सार्वजनिक परीक्षाओं में सर्वोच्च रहे हैं। यूनिवर्सिटी में उनका सर्वोत्तम रहना इसलिये

और भी प्रतिष्ठा की बात है कि कुछ घंटों के लिये वे इन्टरमीडियट कालेज में अध्यापक का भी काम करते थे और छात्रों में भी उत्तम स्थान प्राप्त करते थे।

इस विभाग में उनको ऐसी सफलता मिली कि उन्हें उच्च कक्षाओं का भार भी सौंप दिया गया और ज्योंही राकवेल में गणित और पदार्थ विज्ञान के अध्यापक की जगह खाली हुई त्योंही वह उस पर तुरन्त नियुक्त कर दिये गये। गणित और पदार्थ विज्ञान के 'आनर्सकोर्स' पढ़नेवाली कक्षाओं का भार उनके सुपुर्द था। उनके विद्यार्थियों में से एक ने प्रथम स्थान प्राप्त किया और कई ने 'प्रतिष्ठा' प्राप्त की। सफलता तो सब को ही मिली।

राकवेल छोड़ने के पश्चात् वह कोर्सफोर्ट ट्रेनिंग कालेज में गणित के प्रोफेसर नियुक्त किये गये। वहाँ भी उनका काम राकवेल की तरह, उत्साह वर्धक, योग्यता और सफलता पूर्ण रहा। गणित के व्याख्याता की हैसियत से उनकी सदा सर्वत्र माँग रहती थी। यह बात स्मरण रखने योग्य है कि कई वर्षों तक उनके बहुत से शिष्य विश्वविद्यालय की शिक्षा में सर्वोच्च स्थान और प्रतिष्ठा प्राप्त करते रहे। वह सरस्वती के उपासक थे। उनकी शिष्य मण्डली विद्यालय के दर्जों में और खेल के मैदानों में दोनों जगह उनसे बहुत ही प्रसन्न रहती थी?

डी वेलरा रायल यूनिवरसिटी के ग्रेजुयट थे और इन्हें गणित विज्ञान की छात्रवृति भी प्राप्त हुई थी। बी० ए० की डिग्री लेने के पश्चात् इन्होंने स्टीफन्सग्रीन के विश्वविद्यालय कालेज में पढ़ाना आरम्भ कर दिया और साथ ही गणित तथा गणित सम्बन्धी भौतिक विज्ञान (Mathematical physics.) में एम० ए० के लिये पढ़ने भी लगे। केरिस फोर्ट ट्रेनिंग कालेज के सम्बन्ध में जो उनका कर्तव्य था उसके सबब से मजबूरन उन्हें एम० ए०

को परीक्षा में बैठना स्थगित करना पड़ा। उनके अध्यापक प्रोफेसर कानवे का, जो उन्हें पढ़ाते थे, कहना है कि यह बड़े खेद का विषय था कि डी वेलरा को अपनी परीक्षा में बैठना स्थगित करना पड़ा। क्योंकि इन विषयों में वह एम० ए० से कहीं अधिक योग्यता रखते थे। वह तो एक बड़े ही प्रतिभाशाली और आपसे आप सोचने वाले व्यक्ति थे।

१९०९-१९१० में यूनिवरसिटी कालेज में डी वेलरा ने दर्शन में एम० ए० के लिये व्याख्यान सुनना आरम्भ कर दिया। इसका कारण यह था कि वे गणित के कुछ सिद्धान्तों को दार्शनिक खोज करना चाहते थे। उसने रेखा गणित में भी एम० ए० के व्याख्यान सुनना आरम्भ कर दिया। सन् १९०४ में बी० ए० की डिग्री प्राप्त करने के पश्चात् उसने शिक्षा सम्बन्धी अनेक विषयों में ज्ञान वृद्धि करने की इच्छा से गणित और पदार्थ विज्ञान की बहुत सी शाखायें पढ़नी आरम्भ कर दीं, साथ ही उसने शिक्षा का दार्शनिक अंग नवीन शिक्षा पद्धति, लैटिन ग्रीक और फ्रेंच भाषायें आदि भी सीख लीं। इससे पता चलता है कि उसके ज्ञान का भाण्डार कितना विस्तृत था।

बी० ए० और बी० एससी० दोनों डिग्रियाँ प्राप्त करने पर पर भी डी वेलरा को अपने साहित्यिक जीवन से संतोष नहीं हुआ और वह सदा कोई न कोई नवीन विषय बड़े उत्साह से सीखने का प्रयासी बना रहा।

अध्यापक के रूप में डी वेलरा पूर्णरूपसे सफल रहा। इसका प्रमाण यही नहीं है कि डबलिन के विश्वविद्यालय के समस्त कालेजों में उसकी सेवाओं की माँग रहती थी, बल्कि उसकी शिष्य मण्डली सदा परीक्षाओं में उच्च स्थान प्राप्त किया करती थी और प्रायः छात्रवृत्तियां प्राप्त करती। इसके अनेक उदाहरण

मौजूद हैं। इसका कारण यह है कि महा ज्ञानी होने के साथ ही वह अपने काम को बड़े उत्साह और परिश्रम से करता था और सदा समय का पाबन्द रहता था। वह अपने शिष्यों को भिन्न भिन्न विषय बड़ी ही रोचकता और सरलता से समझाता था। वह पढ़ाने में इतना दक्ष था कि एक साथ एक सौ विद्यार्थियों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करलेना उसके लिये साधारण बात थी। शिक्षा विभाग से उसका सम्बन्ध विच्छेद होना उस विभाग के लिये एक बड़ी भारी हानि का कारण हुआ, किन्तु संतोष की बात यही है कि उसने इस क्षेत्र को छोड़कर देश की आज्ञा का पालन किया और अपनी शक्ति देश के महत् कार्यों में लगाई।

सन् १९०६ के सितम्बर मास तक वह अध्यापक रहा अर्थात् 'बगावत' के सप्ताह से पहले तक। उसके बाद वह फिर नहीं लौटा। अध्यापकावस्था में वह कई बार गणित, पदार्थविज्ञान और आयरिश भाषा आदि कई विषयों का परीक्षक भी नियुक्त हुआ था।

अपने कालेज काल की छुट्टियों को डी वेलरा ब्रूरी में व्यतीत करता था किन्तु उसे अब फुटबाल और कूदफांद का इतना शौक न था जितना कि पहले रहा करता था। अब वह अपना अधिक समय शिकार खेलने में व्यतीत करता था। इस में उसे आनन्द भी मिलता था और लाभ भी होता था, क्योंकि अच्छा लक्ष्य-भेदी होने के कारण वह नित्य नये और काफी संख्या में शिकार किया करता था। बन्दूक के पुर्जों में एक भी पुर्जे की बनावट ऐसी न थी जिसे वह अच्छी तरह न समझता हो। बन्दूक से उसे इतना अधिक प्रेम हो गया था जैसा कभी अरब को अपने घोड़े से होता था। एक बार स्वयं डी वेलरा कहता था कि मुझे

भय है कि मैं कहीं सिपाही न बन जाऊँ, क्योंकि मुझे बन्दूकों से बहुत प्रेम हो गया है।

डी वेलरा के ज्ञान की खोज उस के शिकार की दौड़-धूप में भी नहीं रुकती थी। जब कभी वह शिकार खेलने जाता और उसे कोई बुड्ढा आयरिश मिल जाता तो वह उससे आयरलैंड की दन्तकथायें सुना करता। इस प्रकार एक रोज एक आयरिश चमार से उसकी भेंट हो गई जिसकी आयु १०० वर्ष की थी, लेकिन उसका स्वास्थ्य इतना अच्छा था कि वह केवल ६० वर्ष का मालूम देता था। वह आयरिश चमार खूब बोलने वाला था और कहानी कहने में तो एक ही निपुण व्यक्ति था। उसकी कहानियां डी वेलरा को बहुत पसन्द आई, अतएव वह उससे कई बार मिला और एक दिन उसे अपने घर भी बुलाया। इस बुड्ढे में यह एक ऐब था कि वह बात बड़ी तेजी से करता और अपने सामने किसी को बात कहने का मौक़ा न देता। परन्तु डी वेलरा ऐसे अदमियों को वश में करने का रहस्य जानता था जो कि आजकल के लोगों में बहुत कम होता है। जब वह बात करता था तब डी वेलरा बहुत कम बोलता था और इससे वह बुड्ढा चमार बहुत प्रसन्न रहता था। अगर बात करते समय उस बुड्ढे को छेड़ा न जाता तो वह धारा प्रवाह बड़ी सुन्दर और रोचक कहानियां कहता चला जाता। इन कहानियों से और अन्य ग्राम वासियों से मिल करके डी वेलरा ने बहुत सी पते की बातों और आयरिश भाषा की दन्त कथाओं का एक सुन्दर खजाना संग्रह कर लिया। इन प्राचीन बातों ने 'गैलिक लोग' के कार्य कर्ताओं की बड़ी सहायता की, नहीं तो उस समय ऐसा मालूम देता था कि अंग्रेज आयरलैंड के सब लोगों को अपने प्रवाह में बहा ले जायँगे।

आयरिश भाषा की खोज ही में स्वर्गीय 'राजर केसमेंट' से इसकी पहली भेंट हुई। यह अनुराग भरी स्मरणीय भेंट ट्रूवेन के आयरिश कालेज में हुई थी। आरम्भ में ही इन दोनों में घनिष्टता उत्पन्न हो गई और यह घनिष्टता उस समय तक रही जब तक कि राजरस केसमेंट का पद दलितों और अत्याचार पीडितों से निरन्तर प्रेम करने वाला जीवन फाँसी के तख्ते पर चढ़कर पूर्ण आहुति न कर चुका। क्योंकि मनुष्य जाति की सेवाओं के बदले यही इनाम राजर केसमेंट को मिला था। कुछ काल के लिये ट्रूवेन के आयरिश कालेज का चार्ज डी वेलरा के हाथों में रहा है। इस कालेज के उत्साह, देश-भक्ति, भाषा प्रेम और आयरलैंड की समस्त बातों का प्यार अगर किसी को अच्छी तरह समझना है तो उसे कुछ दिन के लिये उस स्थान में जाना चाहिये। वहाँ पर आयरिश भाषा में वादविवाद, चाय पीते समय आयरिश भाषा में बातचीत, आयरिश भाषा में ईश्वर प्रार्थना की जाती है। यह सब बातें यह विश्वास दिलाती हैं कि आयरलैंड की आत्मा निश्चय ही दीवारों के अन्दर मौजूद है और दूसरे स्थानों पर तो अंगरेजियत छा रही है। इसी ट्रूवेन में तथा अन्य अनेक स्थानों में भी डी वेलरा और राजर केसमेंट ने मिल कर गैलिक भाषा के पुनरोद्धार का परामर्श किया था। यह बड़े खेद का विषय है कि यह विचार एक अंग्रेजी शासक के कठोर हाथों से रोक दिया गया और उस समय आगे न बढ़ सका।

तीसरा अध्याय

१९०७ को ग्रीष्म-ऋतु में जब डो वेलरा ब्लेकराक कालेज में ही था, उसकी माता आयरलैंड इसलिये आई कि उसे अपने साथ अमेरिका वापिस ले जाय। । वे समझती थीं कि उन्हें अपने पुत्र के लिए अमेरिका में आयरलैंड से कहीं अधिक अच्छे सुयोग्य मिल सकते हैं। उनका यह सोचना वास्तव में उचित भी था, क्योंकि १८७९ में जब उन्होंने आयरलैंड छोड़ा था, तब वहाँ दमन हो रहा था, लोग जेल में डाले जा रहे थे और सब प्रकार के अत्याचारों का ही साम्राज्य था। जनता के अधिकारों की पूर्ण रूप से उपेक्षा की जाती थी। परन्तु डी वेलरा ने भिन्न भिन्न स्कूलों और कालेजों में से निकल कर अपना मार्ग साफ कर लिया था, अपने लिये एक प्रकार से अध्यापकों का जीवन निश्चित सा कर लिया था और इसमें वह बाधा नहीं पड़ने देना चाहता था। इसके अतरिक्त वह अपनी वर्तमान परिस्थित से प्रसन्न था और उसमें कोई परिवर्तन करना नहीं चाहता था। उसने अपनी माता के सामने अपनी परिस्थिति रख दी और यह विश्वास दिला दिया कि उसके साथ संयुक्त राज्य अमेरिका को लौटने की अपेक्षा आयरलैंड में रहने से उसे अधिक लाभ होगा। विश्वास दिलाये जाने पर उसकी माँ इस बात पर राजी हो गई कि डी देलरा डवलिन में रह कर अपना अध्ययन और अध्यापन-कार्य करता रहे। यह निश्चय वास्तव में महत्व पूर्ण था, महत्व-पूर्ण न केवल डो वेलरा के लिये ही था बल्कि समस्त अयरलैंड के लिये। मनुष्य जीवन में कभी कभी महत्व पूर्ण निश्चय करने के अवसर सामने आते हैं और जो लोग महती शक्ति की

प्रेरणा को स्वीकार कर लेते हैं, वे ही अपने अन्तिम उद्देश्य तक पहुँचने की आशा कर सकते हैं।

सन् १९१२ में कार्क विश्वविद्यालय कालेज के गणित-पदार्थ विज्ञान के मुख्याध्यापक पद के लिये डी वेलरा एक उम्मीदवार था। यदि उसे उस स्थान पर मुकर्रर कर दिया गया होता तो वह अपनी योग्यता से उस स्थान की शोभा बढ़ाता। किन्तु उसके और सभापति द्वारा मनोनीत उम्मीदवार के वोट बराबर आये। इसका कारण यह हुआ कि डी वेलरा के पक्ष में वोट देनेवाले एक महाशय की गाड़ी हाथ से निकल गई, और वह अवसर पर न पहुँच सके। मामला सेनेट के सिपुर्द कर दिया गया। परन्तु मित्रों की सलाह से डी वेलरा ने सेनेट में कोशिश करना उचित नहीं समझा। यदि वह जीत गया होता तो बगावत के दिनों में डबलिन के बदले कार्क में होता। हाँ, यह बात जरूर है कि वह कहीं भी क्यों न होता वालन्टियर अवश्य बनता। किन्तु क्या उसे कार्क में सुख्याति के वही साधन मिले होते जो उसे डबलिन में मिले? प्रभुता उन अवसरों का सदुपयोग करने से प्राप्त होती है जो हमारे मार्ग में आकर उपस्थित होते हैं। कभी कभी एक छोटी सी घटना मनुष्य के सारे जीवन का मार्ग बदल देती है। जैसे 'उल्फटन' ने एक बार पूरा निश्चय कर लिया था कि वह भारतवर्ष जायेगा। किन्तु जिस जहाज से वह जाने वाला था वह सौभाग्य से छूट गया और जब दूसरे जहाज के जाने का समय आया तब उसने अपना इरादा बदल दिया था। यदि वह चला गया होता तो आयरलैंड के इतिहास में एक उज्ज्वल उदाहरण की कमी हो गई होती।

जिस समय डी वेलरा 'कार्क' के उपर्युक्त स्थान को प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा था उस समय आयरलैंड की राजनैतिक

घटनायें नया रूप धारण कर रही थीं। सर एडवर्ड कार्सन ने अब निश्चय कर लिया था कि वह अलस्टर का एक वालन्टियर फोर्स बनावेंगे जिसका मन्शा उस होमरूल बिल का विरोध करना था जिसे मिस्टर 'एस्कीथ' हाउस आव कामन्स में पास कराना चाहते थे। ग्रह कलह (Civil war) का संकेत किया जाता था और अनेक प्लेट फार्मों से बग़ावत का भय दिखलाया जाता था। खास खास अंगरेज़ सर एडवर्ड का समर्थन करते थे क्योंकि उन सब में पुरानी असहिष्णुता के प्राचीन भाव भरे थे। भिन्न भिन्न पदों के फ़ौजी अफ़सरों ने छिपे हुये शब्दों में और खुल कर भी इस आन्दोलन से अपनी सहानुभूति दिखलाई थी और कुछ जनरलों ने तो आवश्यकता के समय सहायता देने का बचन भी दे दिया था। इस समय चालाक अंगरेज़ राजनीतिज्ञों ने मिस्टर जान रेडमन्ड से यह वचन ले लिया था कि वह सरकार के उद्देश्यों को स्वीकार कर लेंगे अर्थात् आयरलैंड दो भागों में विभाजित कर दिया जायगा। संक्षिप्त रूप से आयरलैंड की राजनैतिक दशा ऐसी थी, जब कि आयरिश वालन्टियरों की भर्ती पहले पहल डबलिन नगर में २५ नवम्बर १९१३ को हुई। आरम्भ में तो मि० रेडमन्ड की आयरिश पार्टी और उसके सहायकों ने इस नये आन्दोलन को सन्देह की दृष्टि से देखा। किन्तु हज़ारों की संख्या में वालन्टियर धड़ाधड़ भर्ती हो रहे थे। पार्कों और मैदानों में शहर और ज़िले में उनकी कवायदें होती थीं और सरकार तथा आयरिश पार्टी उन्हें आश्चर्य की दृष्टि से देखती थी। उत्तर में सर एडवर्ड कार्सन और उनके सहायक अब तो खुल्लमखुल्ला सरकार का विरोध करने लगे थे। सन् १९१४ में जब फ़ौज को उत्तर जाने का हुकुम हुआ तब उन्होंने बग़ावत कर दी और जाने से इन्कार कर दिया। यह लिबरल गवर्नमेंट की कमज़ोरी

थी जिससे उत्तरी नेताओं के दिमाग इस कदर बढ़ गये थे। इस समय डी वेलरा एक उत्साही वालन्टियर था और गैलिकलीग के प्रायः सभी मेम्बर बड़े उत्साह से काम कर रहे थे। जब कि उत्तर वाले भय दिखला रहे थे और आयरिश वालन्टियर कवायद सीख रहे थे और इनकी संख्या भो दिन दिन बढ़ रही थी; मिस्टर रेडमन्ड ने नई संस्था की शक्ति और प्रभाव बढ़ते देख कर उस पर अधिकार जमाने की चेष्टा की। उन्होंने अस्थाई कमेटी में अपने मन के २५ मेम्बरों को नामजद करना चाहा और यही उचित समझा कि इस मौक़े पर उस आन्दोलन को भंग न किया जाय। किन्तु थोड़े दिन बाद जब बिना अस्थाई कमेटी की आज्ञा के और बिना वालन्टियरों से पूछे उन्होंने उस आन्दोलन की एक विशेष नीति निर्धारित करनी चाही तब उनका उससे सम्बन्ध विच्छेद हो गया और उसके पश्चात् वह आन्दोलन बिना रोक टोक के स्वयं अपने मार्ग पर चलता रहा। डी वेलरा अस्थाई कमेटी का सदस्य नहीं था किन्तु वह डबलिन की एक 'बेटेलियन' का उस समय सरदार था, जब कि २४ सितम्बर १९१४ को वालन्टियर आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य घोषित किया गया कि 'हमारा उद्देश्य समस्त आयरिश जनता के अधिकारों और स्वाधीनता की रक्षा करना है" इसी उद्देश्य की नीव पर १९१६ की घटनायें घटित हुईं। इसी बुनियाद को दृढ़ करने के लिये डी वेलरा काम कर रहा था।

आयरिश वालन्टियरों के सरदार को हैसियत से, जो हथियार २६ जूलाई १९१४ को गुप्त रीति से आये थे उनको हाउथ नामक स्थान पर उतरवाने में डी वेलरा ने विशेष भाग लिया और जख्मी हो ने से बाल बाल बच गया। खबर पाते ही एक पुलिस कमिश्नर १५० सिपाहियों को लेकर आ गया और

उसने हथियार छीनने का प्रयत्न किया परन्तु वह असफल रहा और वालन्टियर साफ निकल गये केवल दो चार बन्दूकें छिनीं। इस घटना के पश्चात् जो काम डी वेलरा को दिया गया उसको उसने बड़ी ही होशियारी और योग्यता से किया। सन १९१५ में लेमरिक नामक स्थान पर जब वालन्टियरों का बड़ा जमाव और प्रदर्शन हुआ तब डी वेलरा, मिस्टर पियर्स के नीचे सब से बड़ा अफसर था। अब तक उसका नाम अखबारों में नहीं छपा था क्योंकि जिस प्रकार १९१३ की क्रान्ति के पहले बहुत से वीर छिपे हुये पड़े थे उसी प्रकार वह भी रहना चाहता था और नाम प्रकाशित कराने की कोई इच्छा न रखता था।

जो गुण वालन्टियरों के एक योग्य अफसर में होने चाहियें वे सब डी वेलरा में मौजूद थे। उच्च कोटि का एक आयरिश वक्ता होने के अलावा वह वीर साहसी और ईमानदार था और इस बात का प्रमाण वह कई बार दे चुका था कि खतरे के समय वह डिगने वाला आदमी नहीं है और न उसके विषय में यह शक था कि वह शत्रुओं के भारी प्रदर्शन से काँप जायगा या धोखेबाज मित्रों के भुलावे में आ जायगा। वह अपने मामा की तरह ६ फीट लम्बा था और उन्हीं की तरह अच्छी मानसिक शक्ति भी रखता था। यद्यपि डी वेलरा देखने में दुबला पतला मालूम देता हो किन्तु ऊंचा माथा और भूरी आंखें एक महा शक्ति की द्योतक थीं, चाहे वह शक्ति खेल कूद के मैदान में, चाहे युद्धस्थल में, और चाहे कौंसिल चेम्बर में दिखलाई पड़े। चार्ल्स वेसां नामक लेखक ने एक बार ांस के मार्शल पिटेन का चरित्र निम्नलिखित शब्दों में चित्रित किया था।

"उसके लोहे के शरीर में फौलाद की रूह मौजूद है, उसका चेहरा देख कर यह भाव पैदा होता है कि उस में बुद्धिमत्ता और

शीतल शक्ति है किन्तु उसका मन उदार और उष्ण है"। यदि वह लेखक ईमन डी वेलरा के विषय में लिखता होता तो उसे उपर्युक्त वाक्य में एक शब्द भी बदलने की आवश्यकता न प्रतीत होती।

शायद अब हम किसी कदर समझ सकते हैं कि जब ईस्टर मंडे के दिन डी वेलरा अपने कन्धे पर बन्दूक रख कर डबलिन की गलियों से अपने आदमियों को लेकर लड़ाई के निश्चित स्थान पर जा रहा था तब अंगरेजों ने अनुभव किया होगा कि उन्हें कैसे आदमी से मुकाबला करना है। क्रान्ति होने के कई सप्ताह पहले ही से, मेकनील, पीयर्स मेकडाना आदि समस्त नेताओं से उसका घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया था। सर राजर केसमेन्ट अमरीका गये थे, वहाँ से वे जर्मनी चले गये। अपनी राजनैतिक निपुणता के कारण वहाँ के राज दर्बार में उन्होंने कई मित्र उत्पन्न कर लिये। और शीघ्र ही आयरलैंड की कथा सुनाने में सफलता प्राप्त की। यथा समय जर्मन लोगों ने एक जहाज हथियार गोला बारूद और मनुष्यों से भर कर आयरलैंड की सहायतार्थ भेज दिया किन्तु वह जहाज़ अपने निश्चित स्थान पर नहीं पहुँच पाया क्योंकि आयर-लैंड के किनारे के पास पहुँचने पर एक अंगरेजी लड़ाई के जहाज़ ने उस पर अधिकार कर लिया। उस समय संसार-समर बड़े भयंकर रूप से चल रहा था। अंगरेज लोग इतना लड़ाई का समान पाकर बड़े प्रसन्न होते परन्तु उस जहाज़ के कप्तान को विशेष आज्ञायें थीं, इसलिये जब उसका जहाज़ बन्दी हो कर जा रहा था उसने उसे गोले बरूद से उड़ा दिया। उसी समय राजर केसमेन्ट एक पनडुब्बी से आकर किनारे पर उतरा था। वह दैव योग से गिरफ्तार कर लिया गया। यदि यह उद्योग सफल हो गया होता तो आयर-लैंड में होने वाली घटनायें कैसे घटित होतीं ? अब यह कहना

केवल अनुमान की बात रह जाती है। किन्तु जो कुछ हुआ उससे डबलिन की अन्तरंग सभाओं में कुछ गड़बड़ अवश्य मच गयी। परन्तु बाहर से कोई बात नहीं दिखलाई पड़ती थी। ईस्टर रविवार को मेकनील ने आज्ञा भेजी कि सब आदमी तितर बितर हो जाँय। आज्ञा पाते ही डी वेलरा ने उसका पालन किया और उसकी सूचना मेकनील को दे दी। राजर केसमेंट की गिरफ्तारी की खबर ने कुछ निराशा तो अवश्य पैदा की किन्तु लोग ऐसे हताश नहीं हुये जैसा कि ऐसी परिस्थिति में प्रायः हुआ करता है। आपस में मत भेद उत्पन्न हो गया था किन्तु सोमवार को सवेरे ही सब मत भेद काफूर हो गया क्योंकि युद्ध का समय आ चुका था। सब लोग लड़ने के लिये तैयार हो गये। जब दोपहर को युद्ध घोषणा की सूचना आई तब डी वेलरा अपने मोर्चे पर मौजूद था। वह जिस पलटन का सरदार था उसने खूब ही घमासान युद्ध किया। और शत्रु को सारे दिन एक इंच भी आगे नहीं बढ़ने दिया। इसी अवसर पर डी वेलरा ने एक बड़े युद्ध कौशल की बात की। उसी स्थान के पास एक शराब का कारखाना था। डी वेलरा को भय था कि शत्रु उस पर अधिकार कर लेगा तो दुश्मन को एक मौके की जगह मिल जायगी। वह स्वयं उस कारखाने का नाश नहीं कर सकता था क्योंकि उसके पास इतनी सेना नहीं थी। इस अभिप्राय से कि शत्रु द्वारा वह स्थान ध्वंस कर दिया जाय, उसने उस पर एक तिरंगा झंडा लगा दिया और रात को वहाँ रोशनी करवाई जिससे मालूम हो जाय कि वहाँ पर बड़ी चहल पहल है। रोशनी और तिरंगा झंडा देख कर शत्रु ने बड़ी बड़ी तोपों से गोला बारी शुरू कर दी और थोड़ी ही देर में उसे धराशायी कर दिया। जो काम डी वेलरा स्वयं न कर सका था उसे उसने अपने शत्रु से करवा लिया। डी वेलरा की पलटन में लगभग १०० आदमी थे

और इतने ही आदमियों से वह ४०००० सुशिक्षित अंगरेजी सिपाहियों का मुकाविला करता रहा।

आत्म समर्पण करने वाले अफसरों में डी वेलरा का नम्बर अन्तिम था। उसने ३० अप्रेल तक हथियार नहीं रखे और लड़ने के लिये उद्यत रहा। उसका संगठन ठीक था। वह लड़ाई जारी रखने के लिये पूर्ण रूप से तैय्यार था, किन्तु कमान्डर जनरल की आज्ञा हुई कि आत्म समर्पण कर दो। जब इतवार को सवेरे उसे पियर्स का यह आर्डर मिला तो पहले उसने इस आज्ञा पर विश्वास करने से इन्कार कर दिया किन्तु इस बात का पक्का पता लगा लेने पर कि वास्तव मे ऐसी ही आज्ञा है, उसने आज्ञा का मानना अपना कर्तव्य समझा और आत्म समर्पण कर दिया। हथियार रखने की बातचीत इस प्रकार हुई कि दो आदमी बाहर निकल आये उनमें एक फौजी सिपाही था और दूसरा डी वेलरा।

डी वेलरा ने चिल्ला कर कहा "हलो"। अफसर ने पूछा —"कौन हो ?"

उसने कहा "मैं हूँ डी वेलरा"

सिपाही ने कहा "मैं हूँ एक कैदी"

आत्म समर्पण करने के पश्चात् डी वेलरा ने ऐसी शान से बातचीत की मानों वह हारा नहीं किन्तु जीता हुआ है। उसने अफसर से कहा, आप मेरे साथ जो चाहें सो करें किन्तु मैं बता देना चाहता हूँ कि मेरे आदमियों के साथ उचित बर्ताव किया जाय। लड़ाई के आरम्भ होने के पहले डी वेलरा ने हर एक चाल को अच्छी तरह सोच लिया था। उस की गणित की शिक्षा ने उसे फौजी कामों को सुगमता से सीखने के योग्य बना दिया था। और जब वास्तव में युद्ध छिड़ा तब जो कुछ उसने सीखा था उस को बड़ी योग्यता से व्यवहार में लाने का प्रमाण दिया।

और दूसरी बात जो सदा उसे आगे बढ़ने के लिये उत्साहित करती थी वह थी उस के उद्देश्य की न्याय्यता। इस मनुष्य के बराबर कोई मनुष्य वीर नहीं हो सकता जिस के साहस की नीव अधिकार और न्याय की ठोस चट्टान पर रखी गई हो। जिस झण्डे पर ये पवित्र शब्द लिखे होते हैं उसकी अन्तिम विजय को कोई रोक नहीं सकता।

बगावत में भाग लेने के कारण डी वेलरा को प्राण दण्ड की आज्ञा हुई। बाद में इस आज्ञा को बदल कर आजन्म कारावास की आज्ञा कर दी गई। इस बात में सन्देह है कि या तो उस की सजा इसलिये बदली गई कि वह आमेरिकन नागरिक था या इसलिये कि वह आत्म समर्पण करने वाला अन्तिम अफसर था। चूंकि वह आखिरी इतवार तक लड़ता रहा, इसलिये यह तो पक्की बात है कि उस का कोर्ट मार्शल उस समय तक टलता रहा जब तक कि उससे पहले पकड़े जाने वाले कैदियों का निपटारा न हो गया और जब उसकी बारी आई तो अधिक संख्या में दी गई फाँसियों और अत्याचारों के विरुद्ध घोर चीख पुकार (चीतकार) मच गई थी। सैकड़ों अन्य कैदियों के साथ जिनका मुकदमा हो गया था और जिनका नहीं भी हुआ था तुरन्त इंगलैंड के लिये उसका देश निकाला कर दिया गया और उसे लुइस जेल में रखा गया।

यद्यपि डी वेलरा कई सभाओं और संस्थाओं का मेम्बर था किन्तु ईस्टर सप्ताह के पहले साधारण जनता उसे नहीं जानती थी। शायद आयरलैंड के नेता के रूप में तो वह पहले पहल जून १९१७ में ही प्रकट हुआ जब कि जनरल एमनेसटी अर्थात् साधारण अपराध मार्ज्जना के बाद वह सब कैदियों का अगुआ बनकर घर लौटा। जिस समय सब कैदी छूटे थे यद्यपि वे इंगलैंड

के जेल जीवन के कारण शिथिल हो गये थे किन्तु उनके उत्साह में जरा सी भी कमी नहीं आई थी, क्योंकि उनका उद्देश्य महान् था। वे सब के सब अपने प्यारे आयरलैंड की स्वतन्त्रता के गीत गाते लौटे और मार्ग में डी वेलरा की जय बोलते जाते थे क्योंकि उन्होंने डी वेलरा को अपना नेता घोषित कर दिया था।

डी वेलरा के प्रारम्भिक जीवन की एक बात कहने को रह गई थी कि सन १९१९ में उसका विवाह हो गया था। इस शुभ विवाह का मुख्य कारण गैलिक लीग की साहित्यिक कक्षा थी। डी वेलरा को आयरिश भाषा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने की प्रबल इच्छा थी। श्रीमती सिनिमड ली फ्लेनागेन आयरिश भाषा की पण्डिता थीं और जर्मन भाषा सीखना चाहती थीं। डी वेलरा ग्रीक, लेटिन, फ्रेन्च, और जर्मन आदि भाषाओं को पूर्ण ज्ञाता थे। दोनों ने आपस में एक दूसरे से पाठ पढ़ना आरम्भ कर दिया। दिन आनन्द से कटने लगे। मित्रता प्रेम में परिणत हो गई। अन्त में दोनों का विवाह हो गया जिससे ६ सन्तानें हुईं चार लड़के और दो लड़कियां। विवियन, ईमन, ब्रामन, खेरी, मेरिन और ईमर।

चौथा अध्याय

१९१६ के अक्टूबर मास में मिस्टर लायड जार्ज ने मिस्टर एस्क्वीथ की गवर्नमेंट से इस्तेफा दे दिया और बाद में वह स्वयं प्रधान मंत्री बना दिये गये। यह एक बड़ी महत्व पूर्ण घटना थी। अब सरकार की नीति अनिश्चित और अस्थिर सी हो गई। दिसम्बर में जिन सीनफीनरों के मुकद्दमें नहीं हुये थे वे छोड़ दिये गये। किन्तु फरवरी के चुनाव में काउन्ट प्लंकट की जीत के बाद सीनफीन और गैलिक लीग के आन्दोलन के सारे के सारे प्रमुख कार्य कर्ता गिरफ्तार कर लिये गये। गिरफ्तार किये गये लोगों में टेरेंस मेक्स्वेनी और टामस मेकर्टिन भी थे। अब मिस्टर लायड जार्ज के मन में आयरिश कन्वेन्शन करने का विचार उत्पन्न हुआ। अपना विचार उपस्थित करते हुये प्रधान मंत्री ने कहा कि गवर्नमेंट ने यह निश्चित कर लिया है कि वह आयर्लैंड के लोगों से कहे कि वे अपने देश के शासन के लिये एक विधान बनावें। उस कन्वेन्शन में सब श्रेणियों और सब समुदायों के भिन्न भिन्न मतों और प्रमुख संस्थाओं के लोग भाग लेंगे। उसमें सीनफीनरों के प्रतिनिधि भी रहेंगे और साथ ही मिस्टर रेडमन्ड और मिस्टर ओब्रायन के अनुयायी भी रहेंगे। मिस्टर लायड जार्ज ने वादा किया कि यदि साम्राज्य के अन्दर रहते हुये आयरिश स्वराज्य के लिये वास्तविक मतैक्य हो गया तो उस प्रस्ताव को ब्रिटिश पार्लियामेंट के सम्मुख वे अपनी सिफारिश के साथ उपस्थित करेंगे। इस पर मिस्टर रेडमन्ड ने कहा कि प्रस्तावित सभा करने का विचार ऐसा है जिससे इन्कार करने का किसी भी समझदार आयरिश मेन को कोई कारण नहीं हो सकता और मुझे विश्वास है कि इसमें सम्मिलित होने के लिये मेरे

देश के समस्त समुदायों के लोग राजी होंगे। अलस्टर की यूनियनिस्ट कौंसिल के ३५० प्रतिनिधियों ने केवल चार विरोधी मतों के साथ अपने प्रतिनिधि भेजना तय किया। किन्तु सीनफीनर इस रहस्य को समझ गये और उन्होंने इस कन्वेन्शन में किसी प्रकार का भी भाग लेना स्वीकार न किया। उन्होंने समझ लिया कि यह हमें केवल बातों में फंसाये रखने का ढकोसला है, क्योंकि जिस वास्तविक मतैक्य को निश्चित करने वाले स्वयं मिस्टर लायड जार्ज जैसा जज हो और जहाँ यूनियनिस्ट प्रतितिधि किसी भी मतैक्य होने में बाधा डालने को उपस्थित हों उस कन्वंन्शन से कोई भी लाभ नहीं हो सकता। गवर्नमेंट का उद्देश्य यह था कि आयरिश लोगों को बातों में लगा रखा जाय और अमरीका के लिये युद्ध में सम्मिलित होने का मार्ग सुगम बना दिया जाय। लार्ड कर्जन के कथनानुसार 'जब अमरीका को यह अनुभव हो जायगा कि आयरलैंड भी हमारे साथ है तभी इस महासभा में उसका सहयोग पूर्ण और फलदायक होगा क्योंकि आयरलैंड से उसका कई बातों में घनिष्ठ सम्बन्ध है। संयुक्त और सन्तुष्ट आयरलैंड हमारे लिये शक्ति का चिन्ह होगा और विभाजित, निराश और बागी आयरलैंड हमें कमजोर बनाने का कारण होगा।"

कन्वेन्शन की मीटिंग गुप्त रूप से होती रही, उसकी कार्यवाही की आलोचना करने की समाचार पत्रों को आज्ञा न थी। उसकी सभाओं का छकड़ा महीनों तक चलता रहा, कभी कभी एक आध सरकारी रिपोर्ट निकल जाती थी। किन्तु सीनफीनरों के अलग रहने के कारण मिस्टर लायड जार्ज की कौशलपूर्ण युक्ति विफल हो गई और जो परिणाम उन्होंने सोचे थे उनमें से एक भी व्यक्त न हुआ।

सात जून को मिस्टर बिलियम रेडमन्ड का फ्रांस में देहान्त

हो गया, इससे पर्लियामेंट में एक स्थान रिक्त हो गया। इस रिक्त स्थान का चुनाव ऐसी धूम धाम और जोश खरोश के साथ हुआ जैसा कि ओकानल के समय के पश्चात् कभी नहीं हुआ था। यद्यपि डी वेलरा जेल में था किन्तु प्रजातन्त्र वादियों ने उसे ही अपना नेता मान कर प्रतिनिधि चुनने का निश्चय किया। बहुत सोच विचार के बाद गवर्नमेंट ने उसे और अन्य कैदियों को छोड़ दिया। छोड़ने का एक कारण यह भी था कि गवर्नमेंट चाहती थी कि कन्वेन्शन के लिये एक शान्त वायुमण्डल तैय्यार हो जाय।

जब १८ जून को कैदी लोग छूट कर डबलिन पहुँचे तो हजारों आदमियों ने उनका स्वागत किया। स्वागत करने वालों में से कुछ मित्र क्लेर से इसीलिये आये थे कि वे डी वेलरा को सूचना दे दें कि काम कैसा हो रहा है। शीघ्र वह डबलिन से चुनाव के रण-क्षेत्र में पहुँचा और वहाँ जाकर देखा कि चुनाव का कार्य क्रम पूर्ण वेग से चल रहा था।

अपनी इच्छा से काम करने वाले डी वेलरा के बहुत से सहायक थे जिन्होंने अमूल्य सहायता पहुँचाई थी। इसी लड़ाई पर आयरलैंड का भविष्य बहुत कुछ निर्भर था। चुनाव के परिणाम की प्रतीक्षा बड़ी चिन्ता के साथ की जा रही थी। चारों ओर डी वेलरा के चुनाव की ही चर्चा थी। यद्यपि यह स्थान मिस्टर रेडमन्ड की पार्टी के लोगों का गढ़ था परन्तु लोग डी वेलरा की ही सफलता की आशा करते थे। क्योंकि एक ओर डी वेलरा के सच्चे और खुले व्याख्यान होते थे और दूसरी ओर वालन्टियर प्रत्येक काम पूर्ण रूप से संचालित करते थे। जिस समय १९७५ वोटों से डी वेलरा की विजय हुई उस समय लोगों के आनन्द का पारावार न रहा। क्योंकि इतने अधिक वोटों से जीतने की किसी को भी

आशा न थी। इस चुनाव से सीनफीन आन्दोलन को एक नया प्रोत्साहन मिला।

डी वेलरा का चुनाव गवर्नमेंट को असह्य हो गया और इस घटना के कुछ ही सप्ताह बाद उसने अपना क्रोध प्रकट करना आरम्भ कर दिया। ज़रा ज़रा सी बात पर डी वेलरा के सहायक लोग पकड़े और कैद किये जाने लगे, और इन्हें राजनैतिक कैदी न मान कर चोर और डाकू बनाया जाने लगा। सरकार की इस नीचता पर लोग बुरी तरह बिगड़े और 'मौंट ज्वाय' में भूख हड़-ताल शुरू हो गई। इस अनशन में 'रामस ऐश' का देहान्त हो गया। डी वेलरा ने अपने बहादुर आदमियों के साथ इस प्रकार के व्य-वहार के विरुद्ध सभायें कीं। सारा देश उसके साथ था। स्मिथ फील्ड की सभा में उसने एक प्रस्ताव उपस्थित किया जिसमें युरोप की शक्तियों और संयुक्त राज्य अमेरिका का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया गया कि आयरलैंड के लोग केवल इसीलिये पकड़े जाते हैं, इनका कोर्ट मार्शल होता है और लम्बी लम्बी सज़ायें दी जाती हैं कि ये प्रेसीडेन्ट विल्सन के शब्दों में घोषित करते हैं कि कोई भी जाति किसी ऐसे का आधिपत्य स्वीकार करने के लिये वाध्य नहीं की जायगी जिसके मातहत रहना वह स्वीकार न करे।'

अब डी वेलरा की निगरानी बहुत ज़ोर से होने लगी। जिस सभा में वह जाता था खुफिया पुलिसवाले वहीं पहुँच जाते थे। जहाँ कहीं वह जाता था वहाँ भी पुलिस को कोड के शब्दों में (खुफिया तौर से) सूचना दी जाती थी। जब तक गाँवों में कोड जानने वाली पुलिस नहीं थी तब तक वहाँ के लिये इस प्रकार के तार जाते थे:—

पारसल आज चार बज कर ४५ मिनट की गाड़ी से रवाना

हुआ। कृपया उसको तलाश करो।' किन्तु बहुत दिनों तक पार-सल का अर्थ छिपा नहीं रहा।

गवर्नमेंट और आयरिश पार्टी सीनफीनरों की सफलता देख कर बहुत उद्विग्न हो उठी। उन्होंने डी वेलरा और उसके आन्दो-लन को बदनाम करने में कोई कसर उठा न रखी। गरमों ने पार्लियामेंट में यह प्रस्ताव रखा कि आयरलैंड को अराजकता से बचाने का एक ही उपाय है, वह है आयरिश कन्वेन्शन को सफल बनाना। इसके उत्तर में सरकारी कर्मचारियों ने अपनी दमन नीति का समर्थन करते हुए डी वेलरा और अन्य नेताओं तथा वाल-न्टियरों को सरकार का शत्रु बतलाया जिनका उद्देश्य सिवा बग़ावत के और कुछ न था और यह भी घोषित किया कि ये लोग जर्मनी की सहायता से हथियार प्राप्त कर रहे हैं, सरकार इस बात को कदापि नहीं सहन कर सकती। मिस्टर लायड जार्ज का सारा प्रहार तो केवल डी वेलरा ही पर था। उनके व्याख्यान में कुछ घबड़ाहट की झलक दिखलाई देती थी। वे समझ गये थे कि आयरलैंड का नवीन नेता बहुत योग्य और साहसी आदमी है। अन्य राजनैतिक नेताओं की तरह उसकी बातें केवल बकवास या शब्दाडम्बर मात्र नहीं है। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि "डी वेलरा के व्याख्यान लोगों को बग़ावत करने के लिये भड़काने वाले होते हैं। कई सभाओं में उसने लोगों से कहा है कि कवायद करना और मार्च करना सीखो। बन्दूकों की बनावट और उसके हर एक पुर्ज़ों को गौर से देख लो ताकि जब कभी तुम्हें हथियार मिल जायँ तो उनके चलाने में तुम्हें कोई कठिनाई न हो। ऐसे व्याख्यानों को सरकार उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देख सकती। इस दशा में गवर्नमेंट जो कड़ी कार्यवाही करेगी उससे आयरलैंड और ब्रिटिश साम्राज्य दोनों का ही भला होगा। सुतराम् पहली

बात यह है कि बग़ावत के लिये भड़काने वाली बातें रोकी जायँ। दूसरे सीनफीनरों के व्याख्यानों में होमरूल की बात की अपेक्षा कुछ अधिक बातें रहती हैं अर्थात् सम्बन्ध-विच्छेद और पूर्ण स्वतन्त्रता आदि की। इंगलैंड इसको कभी स्वीकार नहीं कर सकता।

पूर्ण स्वतन्त्रता की तरफ इशारा करने से मिस्टर लायड जार्ज का यह मतलब था कि डी वेलरा की मांग अनुचित और असम्भव थी क्योंकि आज तक किसी आयरिश नेता ने यह मांग नहीं पेश की थी। परन्तु यह बात ग़लत है। आयरलैंड वाले इससे कम कभी चाहते ही न थे। स्वयं पार्नल ने कहा है कि" "मैं देश को उन्नति की कोई सीमा नहीं निश्चित करता" हां, यह बात जरूर थी कि देश में दो प्रकार के नेता थे। एक वे जो वैध्य उपायों द्वारा अपना कार्य क्रम पूरा करना चाहते थे। इसके पक्षपाती पार्नल और रेडमंड थे। पियर्स और डी वेलरा दूसरी श्रेणी के नेताओं में से थे जो सीधे मर्ग के अनुयायी थे। इन्हों ने वैध्य आन्दोलन की असफलता को देख कर अस्त्रों की उपासना की थी किन्तु उद्देश्य दोनों का एक ही था। यह कहना कि किसी आयरिश मैन ने पूर्ण स्वतंत्रता का माँग ही नहीं पेश की थी, उनके साथ अन्याय करना है। आयरलैंड में ऐसे महापुरुष हुये हैं जिन्होंने ऐसो मांग पेश की है। अस्तु। इस प्रकार के आक्रमणों के होते हुये भी डी वेलरा आगे ही बढ़ता गया और अपने साथ देश को भी आगे बढ़ाता रहा। युद्ध और दण्ड का भय उन्नति के मार्ग में बाधा न डाल सका। जितना ही सीनफीनरों का दमन किया गया और वे सताये गये उतना ही वे मज़बूत होते गये।

मिस्टर लायड जार्ज की स्पीच के दो दिन बाद अर्थात २५ अक्टूबर को सीनफीनरों का प्रथम वृहत् सम्मेलन आरम्भ हुआ।

इस सम्मेलन में आयरलैंड के चार प्रान्तों के १७०० प्रतिनिधि उपस्थित थे। इस सम्मेलन के कार्य-क्रम का एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह भी था कि उसका सभापति कौन हो। इस पद के लिये तीन प्रसिद्ध नाम उपस्थित किये गये थे—आर्थर ग्रिफिथ, कौंट प्लंकेट और ईमन डी वेलरा। सीनफीनरों के शत्रुओं को आशा थी कि सभापति के चुनाव के अवसर पर उनमें मतभेद हो जायगा। इस मतभेद को बढ़ाने के लिये बहुत सी झूठी खबरें भी फैलाई गईं थीं किन्तु उनकी आशाओं पर पानी फिर गया। कौंट प्लकेट और ग्रिफिथ ने अपने नाम वापस ले लिये और सर्व सम्मति से डी वेलरा सभापति चुन लिये गये। मिस्टर ग्रिफिथ ६ वर्ष तक सभापति रह चुके थे और उन्होंने उस समय सीनफीन सिद्धान्तों का प्रचार किया था जब कि आयरलैंड का भविष्य अंधकारमय दिखलाई देता था। कौंट प्लंकेट ने ईस्टर सप्ताह में आयरलैंड के लिये महान् कष्ट उठाये थे किन्तु इन लोगों ने आयरलैंड के सर्वोत्तम जीवित पुरुष के सामने अपने नाम वापिस ले कर एक उच्च आचरण का नमूना पेश किया। डी वेलरा के चुने जाने पर सारे सम्मेलन में बड़ा ही उत्साह प्रदर्शित हुआ। उसने सबको धन्यवाद दिया और संगठन की प्रत्येक बातों पर गौर करने में निमग्न हो गया।

किन्तु क्लेर के चुनाव में डी वेलरा की सफलता और उसका सीनफीनरों का सभापति होना गवर्नमेंट को फूटी आँखों न भाया। वह अपनी फौज और दमन का भय दिखलाने लगी और डी वेलरा के मार्ग में रोडा अटकाना आरम्भ कर दिया।

४ नवम्बर को न्यूब्रिज नामक स्थान पर एक सभा होने वाली थी जिसमें डी वेलरा का व्याख्यान होने को था। वह सभा रोक दी गई। किन्तु डी वेलरा लोगों तक अपना संदेश पहुँचाने में रुकने

वाला आदमी न था। मिस्टर ग्रिफिथ के साथ वह पड़ोस के एमी नामक कस्बे में पहुँचा। वहाँ बहुत से लोग जमा हो गये थे। उन्होंने बड़ी धूम से उसका स्वागत किया और वह दिन शान्ति से गुजर गया।

अब पार्लियामेंट में सवाल होने लगे कि डी वेलरा को गिरफ्तार क्यों नहीं किया जाता। अंगरेजी अखबार डी वेलरा की नई प्रजातंत्र सेना देखा कर घबड़ाने लगे किन्तु डी वेलरा को गिरफ्तार करने के लिये किसी की सलाह की आवश्यकता न थी। उसके लिये जेल की कमेटी तो तैयार थी, परन्तु उसके व्याख्यान पूर्ण स्वन्त्रता की मांग पेश करते हुये भी प्रेसीडेन्ट विलसन के आत्मनिर्णय की घोषणा से बहुत कुछ मिलते जुलते हुये थे। छोटे राष्ट्रों से सहानुभूति रखने का दावा पेश करते हुये किस मुंह से भला गवर्न्मेंट उसे इन व्याख्यानों के कारण गिरफ्तार कर सकती थी। उसे किसी माकूल बहाने की जरूरत थी। किन्तु डी वेलरा बड़ा चतुर था। वह अपने प्रत्येक व्याख्यान में प्रेसीडेन्ट विलसन के एक दो वाक्य उद्धृत कर देता था अतएव इस सम्बन्ध में सरकार की इच्छा सुगमता से पूरी न हो सकी। लागटो नामक स्थान पर व्याख्यान देते हुये डी वेलरा ने साफ २ कह दिया था कि यदि मैं गिरफ्तार कर लिया जाऊंगा तो दर्जनों आदमी मेरा स्थान लेने के लिए मौजूद हैं और यह सिलसिला उस समय तक जारी रहेगा जब तक कि प्रत्येक युवक जेलखाने न पहुंच जायगा। जवानों के न रहने पर आयरलैंड के वीर बुड्ढे उनका स्थान लेंगे"।

एक ओर तो डी वेलरा के जो व्याख्यान अखबारों में छपते थे वे सब के सब सेन्सर द्वारा पास हो कर छपने पाते थे जिनके कुछ अंश बिलकुल उड़ा दिये जाते थे और कुछ भाग को तोड़ मरोड़ कर पब्लिक के सामने आने दिया जाता था। दूसरी ओर

गवर्नमेंट अपने मत का प्रचार करने के लिये पूर्ण रूप से स्वच्छंद थी।

गवर्नमेंट मित्र राष्ट्रों को और विशेष कर फ्रांस और अमरीका को यह विश्वास दिलाना चाहती थी कि सीनफीनर केवल अगरेजी साम्राज्य ही के विरुद्ध नही हैं बल्कि मित्र राष्ट्रों के भी खिलाफ हैं, साथ ही कमजोरों को पथ भ्रष्ट करने के लिए वह कठोर दमन की भी धमकी देती जाती थी। इस धमकी में मिस्टर जान डिलन सरीखे नेता भी गवर्न्मेंट का साथ दे रहे थे और लोगों को सीनफीन-नीति त्याग देने की सलाह देते थे। उनका कहना था कि यदि डी वेलरा और उसके साथियों को कन्वेन्शन को असफल बनाने में सफलता हो जायगी तो परिणाम बहुत बुरा होगा, किन्तु इन बातों से डी वेलरा न तो तनिक भी नाराज हुआ और न घबड़ाया। वह अंगरेजी मंत्रिमण्डल की नीति को खूब समझता था। अपने समालोचकों को उत्तर देते हुये उसने अपने मेन्सन के व्याख्यान में कहा कि यदि इंगलैंड छोटे राष्ट्रों का दम भरता है तो आयरलैंड को स्वतंत्र करके उसे अपनी सहानुभूति का प्रमाण देना चाहिये। इसके पश्चात् उसने एक भविष्यद्वाणी की (जो लग भग साल भर में पूरी हो) कि यदि रेफरेन्डम (सारे ही देश के मत दाताओं का मत ग्रहण) द्वारा जनता की राय ली जाये तो बहुमत इंगलैंड से सम्बन्ध विच्छेद के पक्ष में होगा। बेलीगर के व्याख्यान में उसने अन्य आक्षेपों का उत्तर देते हुये "कहा हम लोग जहरीली गैस के टेंक और सशस्त्र गाड़ियों से डरने वाले असामी नहीं हैं। हमारे कार्य की सीमा तो केवल एक ही है और वह यह कि हमारे समस्त कार्यक्रम नैतिक न्याय पर ही निर्भर हों।" आयरिश कन्वेन्शन के विषय में बोलते हुये उसने कहा कि " यह कहा जाता है कि हम लोग

आयरिश कन्वेन्शन को ध्वंस करना चाहते हैं किन्तु यह गलत है। हम तो केवल अंगरेजी सम्बन्ध को ध्वंस करना चाहते हैं। जहां तक आयरिश जनता का सम्बन्ध है हमने उनसे कह दिया है कि यह कन्वेन्शन एक माया जाल है और हम इस मकड़ी के जाले में फंसना नहीं चाहते। अगर इंगलैंड होमरूल (स्वातंत्र) स्थापित करना चाहता है तो बगैर किसी कन्वेन्शन (महा सभा) के भी वह उसे स्थापित कर सकता है। यदि इंगलैंड की वास्तविक इच्छा हो तो किसी कन्वेन्शन की कोई आवश्यकता नहीं है। अलस्टर का प्रश्न इंगलैंड जब चाहे तब तय कर सकता है। सीनफीनरों ने कन्वेन्शन की उपेक्षा की है किन्तु उन्होंने उसे ध्वंस करने का कोई कार्य नहीं किया। यदि इंगलैंड कन्वेन्शन को ध्वंस करना चाहता है तो जब जरूरत होगी तब सर एडवर्ड कासेन उसे ध्वंस कर देंगे यदि कन्वेन्शन से कोई अच्छा परिणाम निकलेगा जिससे आयरिश स्वतंत्रता को मनोरथ की कुछ सिद्धि होती दिखलाई देगी तो हम उसे ठुकराने न देंगे, किन्तु हम अपने सिद्धान्तों को न छोड़ेंगे और राष्ट्र की उन्नति के लिये कोई भी सीमा निर्धारित न होने देंगे। आयरिश जनता उस समय तक सन्तुष्ट नहीं हो सकती जब तक की पूरी आजादी प्राप्त न हो जाय। जो कुछ हमसे हो सकेगा हम अपने जीवन भर करेंगे। हम अपने जन्म सिद्ध अधिकारों को कुछ सुविधाओं के लिये बेचेंगे नहीं। यदि हम अपने उद्देश्य प्राप्ति में असफल रहे तो हम इस युद्ध को आने वाली सन्तान के लिये पवित्र कर्तव्य के रूप में छोड़ जायँगे।

डी वेलरा की बातें सुन सुन कर उसके शत्रु आवेश में आगये। झाड़ियों और तार के खम्भों से अंगरेजी एजेन्ट सीन फीन झण्डे उतारने लगे और स्कूल के छोटे छोटे विद्यार्थियों से सीनफीन पता-

कार्यें छीनी जाने लगीं। जब इंगलैंड ऐसी छोटी छोटी बातों की ओर ध्यान देने लगा तब लोगों ने समझ लिया कि अब आयरलैंड पर से उसका अधिकार हटता जाता है।

सन् १९१८ के आरम्भ ही में आयरलैंड के सामने कान्सक्रिप्शन अर्थात् फौज के लिए बलात् सिपाही भर्ती करने का प्रश्न उपस्थित हुआ। हाउस आव कामन्स और हा० आव लार्ड्स के संकीर्ण (Conservative) सदस्य तो चाहते थे कि तुरन्त ही आयरलैंड में कान्सक्रिप्शन का क़ानून लगा दिया जाय परन्तु गवर्नमेंट (सरकार) की इच्छा होते हुये भी कोई न कोई बहाना करके बात को टाल रही थी, क्योंकि जनता के साथ सीधी मुठभेड़ करने से कुछ भय भी खाती थी और आशा करती थी की शायद आगे चल कर मामला साफ हो जायगा। गवर्नमेंट ने इस कानून को टाल कर अच्छा ही किया क्योंकि इस समय जनता ने इस कानून के विरोध का पक्का निश्चय कर लिया था। और यदि आवश्यकता होती तो हथियार भी उठाने से न हटती। डी वेलरा ने कह दिया कि हमारी स्थित प्रत्यक्ष और विस्पष्ट है, इसके विषय में किसी प्रकार का भी समझौता होने की गुंजाइश नहीं। हम इंगलैंड के उस प्रत्येक अधिकार का विरोध करते हैं जिसके द्वारा वह जनता की इच्छा के विरुद्ध जबरदस्ती फौज भर्ती करना चाहती है। हम उसके उस अधिकार को भी मानने को तैयार नहीं हैं जिसके जरिये से वह हमारे लिए स्वतः कानून बना सके, चाहे वह कानून अच्छे हों या बुरे।

आयरिश पार्टी भी नहीं चाहती थी कि आयरलैंड में कान्सक्रिप्शन जारी हो किन्तु हर एक आदमी जानता था कि यदि बलात् भर्ती के कानून को लगाने ही में इंगलैंड अपना भला समझेगा तो वह आयरिश पार्टी के हाउस आव कामन्स के ८० मेम्बरों की इस

समय तनिक भी परवाह न करेगा, जैसा वह सदा करता रहा है। अतएव लोग डी वेलरा के झण्डे के नीचे जमा होने लगे। डन्डक नामक स्थान पर बोलते हुये उसने साफ साफ कह दिया कि आयरिश वालन्टियर केवल अनिवार्य भर्ती को रोकने ही के लिये काफी नहीं हैं बल्कि वे इंगलैंड के आक्रमणका भी मुकाबिला कर सकते हैं, उनके हाथ में १० फुट का बल्लम उन्हें जवान भर्ती करने से रोकने के लिये पर्याप्त होगा।

इस समय की हालत बड़ी नाजुक थी। किसी क्षण भी स्थिति गम्भीर हो सकती थी। ऐसे ही समय ६ मार्च को जान रेडमन्ड की मृत्यु का शोक जनक समाचार आया। उनके मित्र और शत्रु सबने उनके सम्मान में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके स्थान पर मिस्टर डिलन आयरिश पार्टी के नेता चुने गये किन्तु इसमें कोई महत्व की बात न थी। क्योंकि आयरिश जाति का वास्तविक नेता डी वेलरा था।

बेल्फास्ट नगर में सेंट पेटरिक दिवस के उपलक्ष में एक सभा होने वाली थी। वह सभा रोक दी गई। गवर्न्मेंट नहीं चाहती थी कि बेल्फास्ट की जनता के सामने डी वेलरा का व्याख्यान हो। भयानक रूप धारण करके उसने मीटिंग के रोकने के लिये बड़ी संख्या में पुलिस भेजी परन्तु इससे डी वेलरा वहां जाने से न रुका। गवर्न्मेंट अपने कानूनों को पालन करने का पूरा स्वांग रचती है। इस आज्ञा के द्वारा केवल सेंट पेटरिक दिवस की सभायें रोकी गई थीं। डी वेलरा ने एक रात पहले ही सभा कर ली और इस प्रकार सरकारी अफसरों की बुद्धि को चकमा दिया। वे बेचारे मुंह ताकते रह गये। किन्तु ज्योंही ठीक बारह बजे और डी वेलरा ने अपना यह अन्तिम वाक्य समाप्त किया कि 'जो भाव शताब्दियों के अत्याचार से नहीं दब सके वे वर्तमान समय के

कामवेलों द्वारा नहीं मिटाये जा सकते।' त्योंही पुलिस प्लेट फार्म पर पिल पड़ी। सभा समाप्त करदी गई। पुलिस और जनता में एक छोटी सी मुठ भेड़ भी हो गई। दोनों ओर के कुछ लोग जख्मी हुये, किन्तु डी वेलरा अपना काम कर चुका था।

न्याय का गला घोटते हुये और यह जानते हुये कि इससे गम्भीर स्थिति उत्पन्न हो जायगी। लायड जार्ज को सरकार ने ९ अप्रेल १९१८ को आयरलैंड में जबंदस्ती सेना भर्ती करने का कानून लगा ही दिया परन्तु डो वेलरा ईससे घबड़ाने वाला आदमी न था। उसने कहा कि यह जबरदस्ती की भर्ती हमारे राष्ट्रीय अधिकारों के छीने जाने का एक और ज्वलन्त उदाहरण है, जिसके विरुद्ध हम सदा लड़ते रहे हैं। हम अपने ध्येय के औचित्य के नाम पर इस भर्ती की दृढ़ता के साथ विरोध करेंगे। इस सरकारी आज्ञा का एक परिणाम अवश्य हुआ कि आयरिश पार्टी की जो कुछ बची खुची इज्जत थी वह भी जाती रही और अब लोग घड़ल्ले से सीनफीन दल में भर्ती होने लगे।

आने वाले संग्राम में एकता की बड़ी आवश्यकता थी। अतएव आयरलैंड के समस्त नेताओं की 'मेन्शन हौस' कान्फरेन्स की पहली मीटिंग ८ अप्रेल को हुई जिसमें निम्न लिखित प्रतिनिधि उपस्थित थे :—

सीन फीन दलकी ओर से डी वेलरा और मिस्टर आर्थर ग्रिफिथ, आयरिश पार्टी की ओर से मिस्टर जान डिलन और जोजेफ डेवलिन, स्वतन्त्र दल की ओर से मिस्टर विलियम ओब्रायन और मिस्टर टी० एम० हीले।

मजदूर दल की ओर से—मिस्टर ओब्रायन, मिस्टर जानसन और मिस्टर ईगन।

इस कान्फरेन्स में सब दलों के प्रतिनिधि थे। अतएव जबरिया

भर्ती के विरुद्ध पूरी सफलता प्राप्त होने की आशा थी। यह आशा और भी बढ़ गई जब डी वेलरा और इस कान्फरेंस के चार अन्य प्रतिनिधि मेनूथ में जाकर उन पादरियों से मिले जो वहां जमा हुये थे। इन्होंने भी जबरिया भर्ती का विरोध किया *। पादरियों की घोषणा में कहा गया कि—

अंगरेजी सरकार का इस देश में जबरदस्ती भर्ती करने का कोई अधिकार नहीं है। हम धैर्य्य और विचार पूर्वक प्रतिज्ञा करते हैं कि हम अपनी सारी शक्ति लगाकर इस कार्य का विरोध करेंगे। इस घोषणा से भर्ती के पक्षपातियों में आतंक छा गया परन्तु जनता में दूना उत्साह बढ़ा और अभिनव आशा का सञ्चार हुआ।

एक ओर तो कान्फरेन्स का काम हो रहा था और दूसरी ओर डी वेलरा अपनी सारी तदबीरों को सुचारु रूप से सम्पादन करता रहा। उसने वालन्टियरों से कई बार परामर्श किया और निश्चय कर लिया कि यद्यपि कान्फरेन्स के द्वारा एक स्वर से विरोध होने पर बहुत प्रभाव होगा किन्तु आयरलैंड को अपने वालन्टियरों और उनके अफसरों से ही सारी आशाएँ हैं।

डी वेलरा सारे आयरलैंड का खिलौना था। जब वह मेन्शन हौस से निकलता था या उसके भीतर जाता था तब बुड्ढे और जवान उसे घेर कर खड़े हो जाते थे और उसे खूब उत्साहित करते थे। जब कहीं वह जाता था उसका अपूर्व स्वागत किया जाता था। हर एक सम्प्रदाय और हर एक मत के लोग उसके सहायक थे। आयरलैंड के मजदूरों ने भी भर्ती के विरुद्ध अपना

---

* यद्यपि भर्ती के विरुद्ध जनता के विरोध की आशा तो सरकार को थी किन्तु पादरियों के विरोध की उसे स्वप्न में भी आशा न थी।

प्रदर्शन करने के लिये सारे देश में एक रोज हड़ताल कर दी। परन्तु दुःख है कि मिस्टर डिनल की आयरिश पार्टी का व्यवहार इस अवसर पर अच्छा न था। वे डी वेलरा को आयरलैंड की सारी मुसीबतों का कारण समझते थे। इसका सबब यह था कि अंगरेजी पार्लिमेंट से सम्बन्ध रखने के कारण उनका आयरिश मामलों से एक प्रकार से सम्बन्ध विच्छेद सा हो चुका था।

इन नर्मों (मोडरेटों) का रुख अपनी ओर देख कर और जर्मनी के साथ गुप्त सन्धि करने का अपराध लगा कर इंगलैंड ने अपना दमन चक्र जोर से चलाना आरम्भ किया।

इस दमन चक्र की घोषणा के एक दिन पहले ही आयरलैंड के समस्त सीन फीन नेता जो मिल सके गिरफ्तार करके निर्वासित कर दिये गये। जो लोग पकड़े गये उनमें डी वेलरा, आर्थर ग्रिफिथ, कौंट स'केट, टी० डी० डरलेफिगिस, मेडम मेकीनिज आदि थे। पकड़े जाने वालों की सरकारी सूची में बहुत से ऐसे लोगों के भी नाम थे जो गिरफ्तार नहीं किये जा सके। यह लोग सरकारी फौज के आने के पहले ही नौ दो हो गये थे। इस जर्मन सन्धि के आरोप के दो अभिप्राय थे, एक तो भिन्न राष्ट्रों की दृष्टि में आयरलैंड को बुरा चित्रित करना, दूसरे डी वेलरा तथा उसके साथियों को हटा कर बलात् सेना भर्ती का मार्ग सुगम करना। इन लोगों को बन्दी करके अधिकारियों ने समझा कि अब हमने अपने मार्ग का रोड़ा हटा दिया परन्तु यह उनकी भूल थी। लड़ाई राष्ट्र की अन्तरात्मा से थी, व्यक्तियों से नहीं। युगों से यह भावपूर्ण आत्मा अपनी सत्ता का प्रमाण देती रही थी। डी वेलरा और मिस्टर ग्रिफिथ के पकड़े जाने से मेन्शन हाउस कान्फरेन्स का काम नहीं रुका क्योंकि सीनफीन दल प्रत्येक दुर्घटना के लिये तैयार था।

गिरफ्तारी होते ही रिक्त स्थानों पर दूसरे आदमी नियुक्त कर दिये गये।

गिरफ्तारी करके फौरन ही डी वेलरा को फ्रोंगोच जेल में भेज दिया गया और फिर गवर्नमेंट ने भर्ती का काम शुरू किया। आरम्भ में भर्ती को स्वेच्छा का रूप दिया गया किन्तु इस स्वेच्छा के स्वांग में भी जबरदस्ती घुसी हुई थी। सरकार ने कहा कि अमुक तारीख तक इतने हजार आदमी अवश्य भर्ती हो जायँ, साथ ही एक संख्या निश्चित कर दी गई कि इतने आदमी हर महीने में अवश्य भर्ती होंगे। अगर निश्चित संख्या में आदमी स्वेच्छा से नहीं भर्ती होंगे तो बलात् भर्ती करने का कानून अवश्य काम में लाया जायगा। गवर्नमेंट को सिपाहियों की सीमातीत आवश्यकता थी, चाहे वे किसी तरह से आवें पर आवें जरूर। ऐसी स्थिति में स्वेच्छा से भर्ती करने का तो केवल बहाना मात्र था। इसके अतिरिक्त इस स्वेच्छा नाम धारी भर्तीकाल में भाषण-स्वतंत्रता रोक दी गई थी; सभायें होने नहीं पाती थीं और यदि कोई मनुष्य उन युवकों को सलाह देता था जिन्हें भर्ती करने वाला सार्जण्ट ढूंढ़ ढूंढ़ कर निकालता था तो वह गिरफ्तार करके जेल भेज दिया जाता था। किन्तु डी वेलरा ऐसा प्रबन्ध कर गया था कि आयरलैंड के युवक वास्तविक स्थिति को समझते रहें, इस लिये गवर्नमेंट को रंगरूट मिलने वाले नहीं थे चाहे भर्ती जबरदस्ती हो, चाहे शान्तिमय उपायों द्वारा। गवर्नमेंट की इस कार्यवाही का उलटा असर हुआ, जिन लोगों की मांग फौज की भर्ती के लिये होती थी वे बजाय फौज के आयरिश वालन्टियरों में भर्ती हो जाते थे।

डी वेलरा के निर्वासन के एक सप्ताह पश्चात् लार्ड लेफ्टीनेण्ट द्वारा भर्ती की जो घोषणा निकाली गई थी उसमें भर्ती होने वालों को जमीन मिलने का लालच देते हुए मातृ भूमि प्रेम की दुहाई

देकर ५०००० रंगरूटों की माँग की गई थी। इधर यह हो रहा था उधर भर्ती के विरुद्ध उत्तेजना फैलती जारही थी, यहाँ तक कि मुठभेड़ होने के लक्षण दिखलाई देने लगे। १२ अक्टूबर को जर्मनी ने प्रेसीडेन्ट विल्सन की १४ शर्तें मान लीं और जगद्व्यापी समर समाप्त हो गया। अब भर्ती की आवश्यकता मिट जाने से बलात् भर्ती की आज्ञा हवा में उड़ गई।

किन्तु १९१८ के दिसम्बर मास में साधारण चुनाव हुआ। उसने सर्वसम्मति से दिखला दिया कि देश का सीनफीन दल में पूर्ण विश्वास है और आयरलैंड ने अपने देश की स्वतंत्रता की लड़ाई की बागडोर सीनफीनरों के हाथ में सिपुर्द कर दी है। इस चुनाव ने आयरलैंड के शहीदों की आत्मा को सन्तुष्ट कर दिया जो लोग अंगरेजी जेलों में कष्ट भोग रहे थे उनके हृदयों को सुख और सान्त्वना मिली। जो विदेशों में निर्वासित हुये पड़े थे उनके मन में भी इस चुनाव से मातृ भूमि के प्रति नया अभिमान उदय हो उठा। इस चुनाव के पश्चात् कैदियों के छुटकारे की माँग लगातार पेश होने लगीं। इस माँग को पेश करने के लिये ७ जनवरी १९१९ को सारे आयरलैंड में लगभग १०० सभायें हुईं किन्तु जब गवर्नमेंट टस से मस न हुई तब डी वेलरा ने मामले को अपने हाथ में ले लिया और तीसरी फरवरी को यह सुसम्वाद मिला कि डी वेलरा जेलखाने से निकल गये।

पाँचवाँ अध्याय

लिंकन जेल से निकल भागने के समाचार ने एक बड़ा तह-लका मचा दिया। स्वभावतः इस समाचार ने आयरलैंड में आनन्द की लहर पैदा कर दी और इंगलैंड में सरकार की नीति और प्रतिष्ठा पर यह एक बड़ा भारी प्रहार समझा गया। कुछ अंगरेजों ने यह स्वीकार किया है कि सरकार के लिये यह बड़े शर्म की बात थी कि वह अंगरेजी भूमि पर एक चालाक विद्रोही से मात खा गई। इस विचित्र घटना ने आयरलैंड के प्रश्न की ओर संसार का ध्यान पुनः आकृष्ट किया। अंगरेजी प्रभाव के होते हुये भी विदेशी समाचार पत्रकार (Journalists) डी वेलरा और उसके कार्य में दिलचस्पी लेने लगे। उसके सम्बन्ध में जो जरा सा भी समाचार मिलता था वह संसार के कोने कोने में तार द्वारा फैला दिया जाता था। पेरिस का एक प्रसिद्ध पत्रकार पीस कान्फ-रेंस ऐसे महत्व पूर्ण कार्य को छोड़ कर मिस्टर ओकीलो से मिला और उनसे पूछा कि डी वेलरा कैसे निकल गया। मिस्टर ओकीली ने उसे बतलाया कि "मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि उसके जेल से निकल जाने में बहुत समय लगा और बड़ा कष्ट भी हुआ। जिस जेल में डी वेलरा बन्द था उस पर बड़े जोरों की निगरानी रहती थी। पहरा देने वालों में जेल जमादारों के अति-रिक्त फौजी जमादार भी नियत थे। नौ महीने तक डी वेलरा को किसी से मिलने नहीं दिया गया, यहाँ तक कि वह अपनी स्त्री से भी नहीं मिलने पाया किन्तु इतनी चौकसी होते हुये भी वह निकल गया।" डी वेलरा की तदबीर यह थी:—उसने जेल के फाटक की कुंजी की एक प्रतिकृति मोम पर ले ली। इस समय जेलों में यह आज्ञा थी कि यदि कैदी चाहता तो अपने मित्रों को

हास्य पूर्ण सचित्र पोस्टकार्ड भेज सकता। एक कार्ड में एक शराबी का चित्र था जो एक दरवाजे के ताले में चाभी लगा रहा था और उसके नीचे लिखा हुआ था 'मैं भीतर नहीं जा सकता'। दूसरे कार्ड में एक आदमी का चित्र था जो जेल के द्वार में चाभी लगाने का प्रयत्न कर रहा था और उसके नीचे लिखा हुआ था 'बाहर नहीं निकल सकता'। ब्रिटिश अधिकारियों ने दोनों पोस्ट कार्डों को बड़े गौर से देखा और उसे खूब बढ़िया मज़ाक समझा। वे वास्तविक अर्थ को न समझ सके। किन्तु ये दोनों पोस्ट कार्ड बड़ी होशियारी से बनाये गये थे और उनका अभिप्राय ही कुछ और था। जिस चाभी का चित्र उनमें था वह जेल की चाभी की हुबहू नकल थी।

कैदियों का दो कठिनाइयों का सामाना करना था। एक तो यह कि वे अपने संदेश का अर्थ अपने आयरिश मित्रों को समझा सकें। दूसरे यह कि उनके संदेश का अर्थ इतना साफ भी न हो कि ब्रिटिश अधिकारी उसे समझ जाँय। आशा केवल इस बात पर थी कि कुछ अधिकारी बड़ी थोड़ी अकल के थे और वे असली संकेत समझने में असमर्थ रहे। यद्यपि अंगरेजों ने इन पोस्टकार्डों को सिवा एक बड़े सुन्दर मज़ाक के और कुछ नहीं समझा किन्तु आयरलैंड में इस सन्देश का तुरंत ही अभिप्राय समझ लिया गया और फौरन एक 'मास्टर की' या 'सरदार कुंजी' अर्थात ऐसी चाभी जो बहुत से तालों में लग सके बना ली गई। इस चाभी को एक रोटी के भीतर पकाते ही समय भर कर जेल में किसी तिकड़म से भेज दिया गया। माइकेल कोलिन्स और हेरी बोलेन्ड एक मोटर लेकर नियत स्थान पर ठीक समय से पहुंच गये। उस कुंजी की सहायता से डी वेलरा और उसके साथी जेल के पिछले दरवाजे से निकल आये और सबके सब शीघ्रता

के साथ नियत स्थान पर पहुंच गये। बस फिर क्या था, चारों ओर समाचार पत्रों में कोलाहल मच गया कि डी वेलरा जेल से निकल गया। समाचार पत्र वाले यह जानना चाहते थे कि वह कैसे भागा और अब कहां है। एक फ्रेन्च अखबार में यह सम्वाद छपा कि वह पेरिस में है और हालैंड होकर फ्रांस पहुंचा। एक अंगरेजी समाचार पत्र ने छापा कि वह प्रेसीडेन्ट विल्सन से मिलने अमरीका गया है। दूसरे अंगरेजी अखबार में छपा कि वह यूरप गया है और डेली क्रानिकल ने छापा कि वह डबलिन के आस पास कहीं है। इस प्रकार उसके भाग निकलने के चार दिन पश्चात् चार तरह की रिपोर्टें निकलीं और प्रत्येक ने उसका होना भिन्न भिन्न स्थान पर बतलाया।

यद्यपि प्रकट में गवर्न्मेंट चिन्ता के कोई लक्षण नहीं प्रदर्शित करती थी किन्तु चालसे निकल जाने वाले को फिर हस्तगत करने के लिए भीतर ही भीतर व्यग्रता के साथ प्रयत्नवान थी। खुफिया पुलिस की एक पलटन की पलटन उसकी खोज में लगी थी। भाग निकलने के प्रत्येक स्थान की कड़ी निगरानी की जा रही थी। डी वेलरा की पुनः गिरफ्तारी के लिये सबसे अधिक चिन्ता लिंकन जेल के गवर्नर को थी। उसने फौरन ही ऐसा प्रबन्ध किया कि यदि डी वेलरा लिंकन नगर में हो तो वह भाग न सके और पुनः पकड़ लिया जाय। अतएव हर एक घर की तलाशी ली गई और आयरिश लोगों के घर तो विशेष सावधानी से देखे गये। उक्त गवर्नर ने डी वेलरा अथवा जो दो कैदी उसके साथ भागे थे उनमें से किसी को भी दुबारा गिरफ्तारी के लिये अपनी ओर से ५ पौंड का इनाम रखा। किन्तु न तो गवर्नर कुछ कर सका और न गवर्न्मेंट अपनी सारी शक्ति के होते हुये इस जेल तोड़ने वाले कैदी का पता लगा सकी।

चमकती हुई भूरी आखों वाले उस दुबले पतले लम्बे आदमी का कोई भी खोज (सुराग) न मिला। तब गवर्नमेंट ने सारी घटना को अगण्य दिखलाने के लिये सभी सीनफीन कैदियों को छोड़ दिया और यह प्रकट किया कि डी वेलरा को कुछ सप्ताहों से अधिक जेल में रखने का विचार गवर्नमेंट का न था। यह इंगलैंड की ऊपरी उदारता थी किन्तु उसके हृदय की भीतरी इच्छा यह थी कि जब तक पीस कान्फरेन्स में छोटे राष्ट्रों के भाग्य का संतोष जनक निपटारा न हो जाय तब तक वह आयरिश नेताओं को दृढ़ता पूर्वक ताले चाभी में बन्द रखे।

जेल से निकल कर डी वेलरा ने आयरिश जनता के नाम अपना सन्देश भेजा जो एक सभा में पढ़ा गया। संदेशे के शब्द ये थे, "मैं अपने देश का कार्य करने के लिये लिंकन से निकल आया हूं और कर रहा हूं।" एक दूसरी घटना जिसने खलबली पैदा कर दी वह यह थी कि मेन्शन हाउस के एक संगीतोत्सव में अचानक मिस्टर सोन मैकगैट दिखलाई दिये और फिर यकायक गायब भी हो गये। इनके साथ कुछ वालंटियर भी थे। यह महाशय लिंकन जेल से डी वेलरा के साथ भागने वालों में से थे। यह घटना पहली सूचना थी कि सीनफीन नेता शायद आयरलैंड पहुंच गया है। अंगरेजी और विदेशी पत्रों में उससे भेंट किये जाने के समाचार निकलने लगे। यह एक ऐसी विचित्र बात है जिससे सीनफीनरों की बड़ाई ही होती है कि अंगरेजी सरकार के चालाक से चालाक खुफिया पुलिस वाले भी डी वेलरा के निवास का पता न लगा सके, किन्तु अमरीकन, फारासीसी और अंगरेज पत्रकार तक उससे भेंट करने में सफल हो गये। इन मुलाकातों का प्रबन्ध बड़ी चतुरता से किया जाता था। यह सम्मिलन प्रायः सूर्यास्त के पश्चात् ही होते थे और पत्रकारों

को भेंट के नियत स्थान की झलक तक नहीं दिखलाई जाती थी। रात्रि के समय पत्रकार को एक मोटरकार में बिठला कर ले जाते थे और डी वेलरा से भेंट करा कर उसे वापिस कर देते थे। वह यह भी नहीं बतला सकता था कि किस मकान में उससे भेंट हुई। भेंट करने वालों में से अंगरेजी क्रानिकल और अमेरिका के एशोशियेटेड प्रेस के प्रतिनिधि भी थे।

अमरीकन एसोशियेटेड प्रेस के प्रतिनिधि मिस्टर रास से भेंटकरने में डी वेलरा ने बहुत सी बातें कही थीं। एक प्रश्न के उत्तर में उसने कहा था कि "प्रेसीडेन्ट विल्सन के आत्मशासन को और छोटे राष्ट्रों के अधिकारों की रक्षा के प्रश्न को जबतक राजनीतिज्ञ नहीं मानेंगे तबतक संसार में शान्ति नहीं हो सकती। मुझे आशा है कि प्रेसीडेन्ट और पेरिस के धुरन्धर राजनीतिज्ञ दबने वाले नहीं है। जिन सिद्धान्तों को वे अबतक दुहाई देते रहे हैं और जिनके लिये संसार समर का भीषण दृश्य वर्षों तक जारी रहा है उन सिद्धान्तों की रक्षा वे अवश्य करेंगे। आयरलैंड भी इसके अतीरक्त और कुछ नहीं चाहता कि इंगलैड उस पर से अपना अनधिकारी और अत्याचारी हाथ हटा ले। उसकी केवल मांग यह है कि वह स्वयं अपने ढगं से अपना जीवन निर्वाह करने के लिये अपने स्वाभाविक अधिकार प्राप्त करे उसके स्वतन्त्र जीवन में कोई हस्तक्षेप न हो। हाँ, इतना प्रतिवन्ध अवश्य हो कि वह अन्य लोगों के समान अधिकारों की भी प्रतिष्ठा करे। आयरलैंड पर इंगलैड का कोई अधिकार नहीं है। उसकी हुकूमत केवल उसकी बर्छियों की संख्या पर निर्भर है। हम उसे चैलेंज देते हैं कि स्वतन्त्र-आत्म-शाशन का सिद्धान्त वह इस द्वीप पर क्यों नहीं लगाती। यदि उसके बसाये हुये लोगों को शामिल करते हुये बहुमत से यह प्रमाणित हो कि जनता स्वतंत्र शासन नहीं चाहती

तो हम उस निश्चय को मान लेंगे और शान्त हो जायँगे। और यदि बहुमत से यह निश्चय हो कि लोग स्वतन्त्रता के इच्छुक हैं तो क्या अपने राष्ट्रों को स्वतन्त्र करने का हमारा अधिकार नहीं है? मुझे बिश्वास है कि पूर्ण स्वतंत्रता से कम में आयरलैंड के लोग सन्तुष्ट न होंगे। आयरलैंड अपनी सत्ता को नाश नहीं होने देगा। उसकी प्रबल इच्छा है कि संसार की उन्नति में वह भी पूरी तरह भाग ले। आयरलैंड की मांग को स्वीकार न करने की इंगलैंड के पास कौन सी दलील है? वह बतलाये कि वह हमारा चैलेंज क्यों नहीं स्वीकार करता। यदि आत्म शासन का सिद्धान्त वह इस टापू के लिये मान लेता है तो आयरलैंड के प्रश्न की सदा के लिये मीमांसा हो जाती है। हम अपने अल्प संख्यक लोगों के प्रश्न को स्वयं तय कर लेंगे क्यों कि हम उसे तय करना चाहते हैं। इंगलैंड इस प्रश्न को कभी नहीं तय करेगा क्योंकि वह चाहता है कि यह प्रश्न सदा ही अनिश्चित बना रहे। दाल भात में मूसर चन्द की तरह उसे हमारे बीच में पड़ने को कोई आवश्यकता नहीं। हम संसार को अपनी बात सुनाना चाहते हैं और चाहते हैं कि वह इंगलैंड और आयरलैंड के बीच में पड़ कर फैसला करादे। जिन सिद्धान्तों के नाम पर चार वर्ष से युद्ध की ज्वालायें धधक रही हैं यदि वे मखौल साबित हुये और अब भी आयरलैंड के अधिकारों को ठुकराया गया तो उसे अपनी उस अजेय शक्ति की ही शरण लेनी पड़ेगी जो शताब्दियों से उसे सुरक्षित रखे हुये है। उसमें अब भी सहन शक्ति है, किन्तु आयरलैंड में एक ऐसा दल बढ़ रहा है जिसने निश्चय कर लिया है कि यदि इंगलैंड अब भी हुकूमत करना ही चाहता है तो वह अपनी तलवार को म्यान में रख कर कभी शासन नहीं कर सकता।"

१९१८ के दिसम्बर के आम चुनाव में डी वेलरा दो निर्वाचन

क्षेत्रों से चुना गया। एक स्थान पर उसने मिस्टर जान डिलन को जो आयरिश पार्लिमेन्ट्री पार्टी के सभापति थे ४४६१ वोटों से हराया। चुनाव के पहले आयरिश पार्टी के ६८ प्रतिनिधि थे किन्तु चुनाव में केवल ६ सदस्य ही सफल हुये। सीनफीनरों के ७३ और युनियनिस्टों के २६ प्रतिनिधि चुने गये।

मिस्टर ओब्रायन की पार्टी ने सीनफीनरों का विरोध नहीं किया। डेल एरन की जो पहली मीटिंग २१ जनवरी १९१९ को हुई उसने सारे संसार के राजनीतिक क्षेत्रों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। तुरन्त ही आयरिश स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी गई। एक प्रजा वादी कार्य क्रम तैयार कर लिया गया। और संसार के राष्ट्रों को स्वागत संदेश भेज दिया गया। (यह सन्देश पुस्तक के अन्त दिया गया में है)।

दूसरे कैदियों के छूट जाने पर इस बात की आवश्यकता न रही कि अब डी वेलरा छिपकर रहे। अब दुबारा पकड़े जाने का भय न था क्योंकि अंगरेज लोग दमन की इच्छा रखते हुये भी इसी में अपनी भलाई समझते थे कि सीन फीनरों के साथ ढिलाई का वर्ताव किया जाय। एक ओर पेरिस में बड़े बड़े २ राष्ट्र अन्य जातियों के भविष्य पर वाद विवाद कर रहे थे दूसरी ओर आयरिश लोग फ्रांस और अमरीका की जनता के सामने अपनी बातें उपस्थित कर रहे थे। इसके अतिरिक्त सीनफीन नेताओं को इस बात की तनिक भी परवा न थी कि इंगलैंड क्या करने वाला है। उनके सामने एक स्पष्ट कार्य क्रम उपस्थित था जिसे जनता ने स्वीकार कर लिया था। वे उसी कार्य क्रम को पूरा करने पर कमर कसे हुये थे। प्रेसीडेन्ट विल्सन का आत्मशासन का सिद्धान्त और छोटे राष्ट्रों के प्रति 'मित्र राष्ट्रों' की सहानुभूति को संसार की दृष्टि के सामने रखे हुये थे और इसी बात का इंगलैंड नहीं

चाहता था। आत्मशासन का सिद्धान्त 'जेगो स्लेव्स' अक्रेनियन्स या जेको स्लोवक्स के लिये चाहे जितना उचित हो किन्तु उसका प्रयोग उस आयरलैंड के लिये नहीं हो सकता जो यूरोप और अमेरिका के बहुत से भागों में सभ्यता का प्रचार करने में अग्रगण्य रहा है। आयरलैंड की आवाज को कुचलने का प्रयत्न करने में इंगलैंड ने सभायें बन्द कीं व्याख्यान रोके और कोर्ट-मार्शल स्थापित किये किन्तु परिणाम यह निकला कि आयरलैंड का उद्देश्य और दृढ़ हो गया। सोनफोन कैदियों ने अंगरेजी अदालतों के मानने से इनकार कर दिया और बहुधा अदालत की कार्यवाही को बिल्कुल खिलवाड़ बना कर उसका खूब मजाक उड़ाया।

२२ मार्च को सीनफोन दल के केन्द्र से यह सूचना निकली कि २६ ता० बुद्धवार को शाम को प्रेसीडेन्ट डी वेलरा का आयर-लैंड में आगमन होगा और डेल एरन की कार्य कारणी उनका राष्ट्रीय स्वागत करेंगी। आशा की जाती है कि डी वेलरा के गृह आगमन पर राष्ट्रीय उत्सव मनाया जायगा और सैनिक जुलूस का पूरा प्रबन्ध होगा। डबलिन के लार्ड मेअर नगर के द्वार पर उनका स्वागत करेंगे और उनके साथ मेन्शन हाउस तक आवेंगे। वहां पर राष्ट्रपति जनता को अपना संदेश सुनावेंगे। जो संस्थायें इस प्रदर्शन में भाग लेना चाहती हैं उन्हें २४ तारीख को ६ बजे शाम तक प्रार्थना पत्र भेज देना चाहिये।

अवैतनिक मंत्री
एम० पोलेंड,
टी० केला,

२३-४-३२

उपर्युक्त घोषणा के जवाब में अंगरेज सरकार ने अपनी आज्ञा द्वारा सब प्रकार की सभाओं और जुलूसों को रोक दिया। इस सरकारी आज्ञा से स्वागतवाली घटना की महत्ता कुछ विशेष बढ़ गई। और अखबारों में उस पर खूब जोर से टीका टिप्पणी होने लगी। किन्तु डी वेलरा ने सरकारी घोषणा के सम्बन्ध में यथोचित कार्य किया। सीनफीन दल के केन्द्र-स्थान पर उसने सूचना भेज दी कि "मेरी समझ में स्वागत करने का यह उपयुक्त अवसर नहीं है। इसकी सम्मति का आदर करके स्वागत कार्य स्थगित कर दिया गया।

डी वेलरा के जेल से निकल भागने के दो सप्ताह पश्चात् संयुक्त राज्य के फिलेडेल्फिया नगर में आयरलैंड के हितों के सम्बन्ध में एक विराट् मूर्त्तिमान प्रतिनिधि कन्वेन्शन हुआ। इसका नाम आयरिश-जातीय कन्वेशन्न रखा गया। इसमें पाँच हजार एक सौ बत्तीस प्रतिनिधि उपस्थित थे। उनमें से बहुत से अमरीका के राजनीतिक, न्याय विभागीय और धार्मिक उच्च पदाधिकारी थे। इस कन्वेन्शन का मुख्य कार्य यह अनुरोध करना था कि ईमन डी वेलरा, आर्थर ग्रिफिथ और कौन्ट प्लंकेट, को 'डेल एरन' के प्रतिनिधि स्वरूप 'पीस कान्फरेन्स में आयरलैंड की समस्या उपस्थित करने को आज्ञा दी जाय। स्वनिर्णीत शासन का सिद्धान्त जो प्रेसीडेन्ट विलसन की १४ बातों में शामिल है, आयरलैंड के लिए लागू किया जाय अथवा जिस उद्देश्य से अमरीका युद्ध में सम्मिलित हुआ था उसको असफल करनेवाली 'लीग आव नेन्शन्स' को पंगु बना दिया जाय। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए २५ आदमियों की एक कमेटी बना दी गई। इस कमेटी ने अपनी ओर से तीन सज्जन पेरिस जाने के लिए नियुक्त किये,

जो वहाँ जाकर संसार के राष्ट्रों के सामने आयरलैंड की समस्या उपस्थित करें।

अतएव पीस कान्फरेन्स के प्रेसीडेन्ट मिस्टर 'क्लीमेंशू' को आयरिश प्रतिनिधियों की ओर से १७ मई को एक पत्र बाकायदा लिखा गया। उसमें कहा गया कि हम आपको सूचना देना चाहते हैं कि अंगरेजी प्रतिनिधियों को आयरलैण्ड के सम्बन्ध में कोई बात तय करने का अधिकार नहीं है, आयरलैण्ड का मामला केवल आयरिश प्रतिनिधि ही तय कर सकते हैं क्योंकि वे ही जनता की आयरिश सरकार द्वारा चुने गये हैं और वे ही आयरलैंड की ओर से किसी सुलहनामें पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। उन्हीं के हस्ताक्षर किये हुए सन्धि पत्र को मानने के लिए हम लोग बाध्य होंगे। साथ में डी वेलरा, ग्रिफिथ और प्लंकेट के नाम थे।

२६ मई को एक और पत्र उपरोक्त तीनों नामों से पीस कान्फरेन्स के सभापति के नाम भेजा गया। उस में १७ मई के पत्र का संकेत था और यह भी लिखा था कि "अब आयरलैंड पर अंगरेजों का शासन असह्य हो गया है। यह शासन स्वतंत्रता और न्याय के सिद्धान्तों के प्रतिकूल है। केवल मनुष्यता के नाम पर कान्फरेन्स को उसे समाप्त कर देना चाहिए। कान्फरेन्स का उद्देश्य शान्ति स्थापित करना है और उस समय तक शान्ति कदापि स्थापित नहीं हो सकती जब तक कि आयरलैण्ड का और राष्ट्रों की तरह आत्म निर्णय का न्यायोचित अधिकार स्वीकार नहीं किया जाता। आयरलैण्ड को कदापि विश्वास नहीं है कि इंगलैण्ड उस के साथ न्याय करेगा। अतएव आयरलैण्ड चाहता है कि उसके प्रतिनिधियों को अवसर दिया जाय कि वे कांफरेन्स के सामने उपस्थित हो कर अपना दावा पेश करें और इंगलैण्ड के दावे का

खण्डन करें। हमें आशा है कि हमारी प्रार्थना स्वीकार की जायगी और हमारे प्रतिनिधियों को अपनी मांग उपस्थित करने का अवसर दिया जायगा।

इन पत्रों के अतरिक्त 'सीन ओकेली' और 'जार्ज गेयन डफी' ने भी पत्र लिखे तथा आयरिश-जातीय कन्वेन्शन के प्रतिनिधि अमरीकन कमीशन के प्रायः प्रत्येक सदस्य से और प्रेसीडेन्ट विलसन से भी मिले और उनसे पत्र व्यवहार भी किया। किन्तु कान्फरेन्स में अंगरेजों का जोर बहुत अधिक था। अतएव डी वेलरा और उसके साथी प्रतिनिधियों को अपनी बात कहने का अवसर नहीं दिया गया। उनको मांग का वही परिणाम हुआ जो कि जगलूल पाशा के दावे का हुआ था। जगलूल मिश्र के प्रतिनिधियों के प्रमुख होकर आये थे। इस अन्याय के लिए "चारों ही बड़े राष्ट्र" दोषी थे। उन चारों ने आरम्भ ही में यह निश्चित कर लिया था कि जब तक सर्व सम्मति न हो तब तक किसी छोटे राष्ट्र को उनके सामने उपस्थित होने की आज्ञा न दी जाये। परन्तु प्रेसीडेन्ट विलसन ने क्यों कमजोरी दिखलाई?

९ अपरेल को सीनफीनरों की सभा में बोलते हुए डी वेलरा ने कहा: "यदि प्रेसीडेन्ट विलसन अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ रहना चाहते हैं तो आयरिश जाति उनका समर्थन करेगी, चाहे दुनिया की और कोई जाति उनका समर्थन भले ही न करे, और यदि प्रेसीडेन्ट अपने सिद्धान्त का पालन नहीं करेंगे तो भी आयरिश जाति उन सिद्धान्तों पर दृढ़ रहेगी और न्याय और स्वत्वों का पालन करवायेगी। महासमर के समय जिन सिद्धान्तों की दुहाई दी गई थी आयरिश मेन उन्हें पूरा करवा कर छोड़ेंगे। ये सिद्धान्त न्यायोचित हैं और इनकी संसार में बड़ी उपयोगिता है। आयरिश जाति इनका लोप नहीं होने देगी।

सीनफीन संगठन के प्रश्न के विषय में उसने कहा "हमारे संगठन ने संसार का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। हमारी सफलता के दो कारण हैं। एक तो यह कि हम आयरिश जाति की वास्तविक इच्छाओं को प्रकट करते हैं; और दूसरे यह कि हमने अपनी बातों का प्रचार करने में ईमानदारी, न्याय प्रियता और अपने से भिन्न मत रखने वालों के साथ उदारता से काम लिया है। सीनफीन दल राजनीति को खेल नहीं समझता, बल्कि उसकी दृष्टि में राजनीति एक बड़ा गम्भीर विषय है। और ज्यों ही राजनीति सत्य से परे होकर गंदी वस्तु हो जायगी, त्योंही वे उस से पृथक् हो जायँगे। यदि आयरिश मैन अपनी सीमा का उल्लंघन कर जायँगे और अनुचित बातों का प्रचार करने लगेंगे, तो वे उनके साथ भी उदारता का व्यवहार नहीं करेंगे।"

अन्य राष्ट्रों का जिक्र करते हुए उसने कहा कि "हमारा झगड़ा सिवा एक राष्ट्र के अन्य किसी राष्ट्र से नहीं है। और वह राष्ट्र उनका बहुत पुराना शत्रु है। अपने शत्रु के शत्रु से सहानुभूति रखना स्वाभाविक है। किन्तु मैं यह कह देना चाहता हूं कि हमने जर्मनी से कोई धन नहीं प्राप्त किया। हम जर्मनी, या किसी भी अन्य देश के हाथ की कठपुतली नहीं बनना चाहते। यदि आयरलैण्ड में ऐसे लोग हैं जो किसी अन्य देश के लाभ के सामने उसके हितों को दबा सकते हैं, तो वे वही लोग हो सकते हैं जो आज भी आयरलैण्ड के हितों को इंगलैण्ड की भेंट किये बैठे हैं। आयरिश राष्ट्र की रक्षा के लिए जिन लोगों ने दो वर्ष पहले अंगरेजी सेना का सामना किया था, वे उसी दृढ़ता के साथ जर्मनी का भी मुकाबिला कर सकते हैं, यदि जर्मनी यहां आने की इच्छा रखता है। जहां तक मैं जानता हूं—और मैं बात

करने वाले लोगों में से बहुतों से अधिक जानता हूं—जर्मनी ने न तो आयरलैण्ड को बेवकूफ बनाया और न बेवकूफ बनाने की कोशिश की। जर्मनी ने आयरलैण्ड को धोखा नहीं दिया।"

अनिवार्य सैन्य सेवा के विषय में डी वेलरा ने कहा कि:—"यदि आयरलैण्ड जबरिया भरती का विरोध न करता तो आयरिश जाति सदा के लिए नाश हो जाती। उन्हों ने इस अनिवार्य सैन्य सेवा का विरोध इस लिए नहीं किया कि वे लड़ने से डरते थे बल्कि इसलिए कि वे लड़ने से घबड़ाते नहीं थे। युद्ध में लड़ने की अपेक्षा अनिवार्य सैन्य सेवा का विरोध करने में उन्हें अधिक हानि उठानी पड़ती। किन्तु आयरलैण्ड संसार से अनिवार्य सैन्य सेवा की प्रथा को उठा देना चाहता है। साधारण लोगों ने अपनी शक्ति को अनुभव कर लिया है। अब वे अपना संगठन कर के इसे रोक सकते हैं।"

"मजदूर सदा हमारे साथ रहे हैं। पहली मई को मजदूर लोग आम हड़ताल करके संसार को यह दिखला देना चाहते हैं कि मजदूर सब लोगों के लिए स्वायत्त शासन का सिद्धान्त चाहते हैं। मजदूर आयरलैण्ड के इस दावे के साथ हैं कि आयरलैण्ड को यह अधिकार प्राप्त है कि वह स्वयं तय करे कि कैसी सरकार के अधीन रहना चाहता है। मजदूरों ने जबरिया भर्ती का विरोध करने में हमारा साथ दिया है। आम चुनाव में जब मजदूरों से हमने कहा कि वे आपस में भेद भाव पैदा न करें, तब मजदूरों ने हमारी बात मान ली। मजदूर सदा हमारी सहायता करते रहे हैं। अतएव मजदूर अच्छे से अच्छे व्यवहार के अधिकारी हैं।"

डी वेलरा की बातों से बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता झलकती थी। वह अपने कार्य क्रम पर इतनी अच्छी तरह से विचार कर लेता था कि छोटी छोटी बातों में भी उसे अपनी निश्चित और

प्रकाशित अनुमति से एक च भी हटने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। एक ईमानदार मनुष्य को साधारणतया इस बात की आवश्यकता नहीं है कि वह अपने शब्दों पर सदा निगरानी रखे, उसकी आत्मा सदा उसका ठीक ठीक पथ प्रदर्शन करती है। वास्तव में डी वेलरा एक न्याय प्रिय मनुष्य है। उसकी प्रखर बुद्धि और उसके उच्च विचार सदा उसको उन राजनीतिज्ञों से ऊपर उठाये रखते हैं जो केवल अपने ही हितों को अपने कामों का कारण मानते हैं।

'पीस कान्फरेन्स' से आयरलैण्ड को कोई सहायता नहीं मिली। सर्व श्री सीन टी ओकेली और जार्ज गेवन डफ ने आयरिश जातीय कन्वेन्शन के तीनों प्रतिनिधियों के साथ मिलकर अधिक परिश्रम किया कि डी वेलरा की बात सुन ली जाये। परन्तु "बड़े चार" टस से मस्स नहीं हुए। जिन उद्देश्यों के नाम पर युद्ध किया गया, केवल उन्हीं की ओर उनका ध्यान नहीं था। किन्तु हर एक का अपना अपना कुछ स्वार्थ था और उस स्वार्थ के सम्बन्ध में तनिक भी छेड़ छाड़ करने से हर एक गुर्राता था। आयरिश-जातीय प्रतिनिधियों के प्रमुख मिस्टर फ्रैंक पी वाल्श ने प्रेसीडेंट विलसन से बहुत कुछ बात चीत और वाद विवाद किया। परन्तु परिणाम कुछ भी न निकला। यद्यपि अमेरिका की कांग्रेस ने आयरिश मांग को एक के विरुद्ध ६० वोटों से पास कर दिया था, तो भी प्रेसीडेंट विलसन कुछ न करा सके।

छठा अध्याय

१९१९ के जून के आरम्भ में, जब कि आयरिश जातीय कन्वेन्शन के प्रतिनिधि पेरिस में प्रेसीडेन्ट विलसन को घेरे हुए थे, डी वेलरा यकायक आयरलैण्ड से गायब हो गया। उसका यह अन्तर्ध्यान होना वैसा ही एक नाटकीय दृश्य था जैसा कि उसका लिंकन से गायब होना। आयरलैण्ड के चारों ओर अंगरेजी जहाजों के बेड़े लगे हुए थे। उस में से किसी का निकल जाना असम्भव था जब तक उसके पास परराष्ट्र मंत्री का 'पासपोट' न हो। डी वेलरा के पास न तो कोई पासपोर्ट था और न उसने उसे प्राप्त करने का प्रयत्न ही किया था। किन्तु यह निश्चित था कि वह आयरलैण्ड से चला गया था। लेकिन वह कैसे गया? समुद्र के मार्ग से या हवा के? यह एक रहस्य था। उसके घनिष्ठ मित्र जानते थे कि यह "सीनफोन मार्ग" से गया है। अंगरेज लोग समझते थे कि वह 'पीस कान्फरेन्स' गया है। किन्तु अब डी वेलरा को पीस कन्फरेन्स पर तनिक भी बिश्वास नहीं रहा था। उसने समझ लिया कि पराधीन जातियों को वेड़ियाँ खोलने के बदले मित्र राष्ट्रों के राजनीतिज्ञ उन बेड़ियों को और अधिक दृढ़ बनाने पर तुले हुए हैं। अगर वह पेरिस जाता, तो उसे भी अन्य प्रतिष्ठित यात्रियों की तरह उस होटल के इर्द गिर्द घूमने में अपना समय व्यर्थ खोना पड़ता, जहाँ पीस कान्फरेन्स हो रही थी। परन्तु जब २१ जून को यह सूचना प्रकाशित हो गई कि डी वेलरा न्यूआर्क 'पहुँचाना' तब सारी अटकल पच्चू बातें समाप्त हो गई।

डी वेलरा के अमरीका पहुँचने की सूचना के साथ ही यह खबर भी प्रकाशित हो गई कि जर्मनी शान्ति सन्धि पर हस्ता-

त्तर करने को राज़ी हो गया है। इससे संसार समर का अन्त आ गया। 'न्यूयार्क, पहुँच कर डी वेलरा 'एसटोरिया होटल' में ठहरा और उसी को अपना केन्द्रीय निवास-स्थान बनाया। अमेरिका की भिन्न भिन्न रियासतों से उसके पास सहस्रों संदेश और निमंत्रण आने लगे। उसके निवास-स्थान पर जमघट लगा रहने लगा। प्रमुख समाचार पत्रों ने उससे भेंट करने के लिए अपने प्रतिनिधि भेजे और आयरलैंड की समस्या पर प्रतिदिन उसकी सम्मति से अखबारों के कालम पर कालम भरे जाने लगे। वह सदा हर श्रेणी के लोगों से घिरा रहता था, यथा साध्य वह सब से बड़ी प्रसन्नता से मिलता और बात करता था।

डी वेलरा के आने के पहले उसकी सुन्दरता की धूम अमरीका में मच गई थी। एक तो वह उच्च आदर्श का प्रतिनिधि था और दूसरे उसे साक्षात रूप से देखने के लिए लोग बड़े इच्छुक थे। अतएव बहुत से लोग उससे मिलने और हाथ मिलाने को व्याकुल हो रहे थे। एक सज्जन ने उससे भेंट कर के "पिटस वर्ग डिस्पेच" में लिखा था कि, "वह ६ फीट लम्बा, सुन्दर और सुदृढ़ जवान है। उसका शरीर सीधा और सुस्थ है। उसमें स्फूर्ति है। उसके बाल भूरे हैं और उसकी आँखों में प्रकाश है, उससे मिलकर आनन्द प्राप्त होत है। न तो उसमें बनावट है और न घमंड। वह अपनी महत्ता का अभिमान नहीं करता। वह समस्त वास्तविक महान पुरुषों की तरह सरल, दयावान, सहानुभूतिपूर्ण, और सच्चा है। जब मैं ने उससे कहा कि मैं 'राजा एलबर्ट' या 'प्रिन्स आफ वेल्स की अपेक्षा आप से मिलने के लिए अधिक लालायित था, तब वह बहुत हंसा।"

उपरोक्त बातों से पता मिलता है कि अमरीकनों के भाव डी वेलरा की ओर कैसे थे। उसके व्यक्तित्व और उसके उद्देश्य की

पवित्रता ने मिलकर अमरीकनों के हृदय में आयरलैंड के प्रति अगाध प्रेम उत्पन्न कर दिया था। वह अपनी निजी बड़ाई नहीं चाहता था। जब कभी उसका स्वागत सत्कार होता था, तब वह कह देता था कि यह मेरा सत्कार नहीं है किन्तु आयर लैंड का है। जब कभी कोई विश्व विद्यालय या कालेज उसकी मानसिक योग्यता को स्वीकार करके उसे सम्मान सूचक उपाधि प्रदान करता था, तब वह कहता था कि यह प्रतिष्ठा मेरी नहीं किन्तु आयरलैंड की है।

डी वेलरा के अमरीका जाने के पहले 'डेलएरन' ने आयरिश प्रजातंत्र का १० लाख पौण्ड का एक ऋण निकाला था। इसमें ढई लाख अमरीका में वसूल होना था। आयरलैंड के अमरीकन मित्रों की सहायता से यह ऋण बहुत शीघ्र पूरा हो गया। और डी वेलरा को इसके लिए कोई कष्ट नहीं उठाना पड़ा। छोटे और बड़े, सबने ही बड़ी उदारता से इसमें सहायता की, यहां तक कि कुछ समय के पश्चात् इस ऋण की रकम बढ़ा कर दस लाख डालर करनी पड़ी।

धनकी अपील करना ही डी वेलरा का मुख्य उद्देश्य नहीं था। सानफ्रेंसिसको में ५० हजार मनुष्यों के सामने उसने अपने एक व्याख्यान में कहा :—"अमरीका के लोगों ने आयरलैंड को जो कुछ सहायता की है मैं उससे बहुत ही सन्तुष्ट हूँ। मैं अपने देश के औद्योगिक धन्धों के लिए आपकी आर्थिक सहायता लेने आया हुआ हूँ। किन्तु मुख्य बात, जो मैं इस देश से चाहता हूँ वह यह है कि आप आयरिश प्रजातन्त्र की स्थिति को स्वीकार करलें। हमारा राष्ट्र बहुत महान है, हमारे साधन पर्याप्त हैं। हम अपना प्रबन्ध कर सकते हैं। आप हमारे प्रजातंत्र की स्थिति को स्वीकार करलें और चाहे हमें एक पाई भी न दें, यह इस बात की अपेक्षा

अधिक अच्छा है कि आप हमें अपना सब सोना दे दें और हमारे प्रजातंत्र को स्वीकार न करें।"

आयरिश प्रजातंत्र की स्थिति को स्वीकार कराने के लिए डी वेलरा ने साफ साफ कह दिया कि मैं यह नहीं चाहता कि अमरीका इङ्गलैण्ड से हमारे लिए युद्ध करे। आयरिश प्रजातंत्र को स्वीकार करने के लिए अमरीका को इङ्गलैण्ड से युद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं। दूसरे इङ्गलैण्ड को अमरीका से लड़ने का साहस भी नहीं है और अगर वह लड़ना भी चाहे तो युद्ध करने के लिए पहले उसे अमरीका से ऋण लेना पड़ेगा। अतएव अमरीका को स्वयं निर्णय करना है। आयरलैण्ड और इङ्गलैण्ड की लड़ाई ७०० वर्षों से है और यह युद्ध उस समय तक चलता रहेगा जब तक इङ्गलैण्ड अपना अनधिकार पूर्ण हस्तक्षेप करना छोड़ न देगा। यदि आयरलैण्ड का अधिकार स्वीकार कर लिया, तो सारी शत्रुता और मन मुटाव दूर हो जायँगे। दोनों राष्ट्रों का मित्र बन कर रहना वास्तव में दोनों ही के लिए हितकर है। इंगलैण्ड जब चाहे तब आयरिश जाति की मित्रता को प्राप्त कर सकता है आवश्यकता केवल इस बात की है कि पूर्ण स्वतंत्र-शासन का अधिकार स्वीकार कर लिया जाय। अर्थात् लोगों को यह आज्ञा हो कि प्रेसीडेन्ट विल्सन द्वारा सम्पादित सिद्धान्तों के आधार पर वे स्वयं अपनी सरकार चुन सकें। फिर तो आयरिश प्रश्न रहा नहीं जाता। सरकार ने अपना मतलब साधने के लिए और ब्रिटिश हितों की रक्षा के लिए सर ऐडवर्डकार्सन को खड़ा कर दिया है। बेलफास्ट का प्रश्न या अन्य प्रश्न केवल इस बात का बहाना मात्र है कि इङ्गलैण्ड आयरलैंड पर अपना प्रभुत्व बनाये रहे। पूर्ण स्वतंत्रता के प्राप्त होते ही आयलैंड अपने आन्तरिक प्रश्नों को बहुत थोड़े समय में सुलझा लेगा। स्वतंत्र राष्ट्र के

रूप में वह ब्रिटिश साम्राज्य के लिए शक्ति का साधन होगा न कि निर्बलता का कारण जैसा कि वह अब है। दोनों ही राष्ट्रों के हितों के लिए यह आवश्यक होगा कि वे पड़ोसी मित्रों की तरह रहें और मिलजुल कर काम करें।

अमरीका के लोग आयरलैंड की न्यायोचित माँग और उसकी राष्ट्रीयता के विषय में क्या विचार रखते थे, यह नीचे लिखे हुए अमरीकनों के वाक्यों से प्रकट हो जाता है।

डी वेलरा को स्वतंत्र नागरिक की उपाधि प्रदान करने के उपलक्ष में जो भोज दिया गया था उसमें 'चार्ल्स टाउन' के मेयर ने आयरिश जाति के नाम जार्ज वाशिंगटन का सन्देश उपस्थित किया:—"आयरलैण्ड के देशभक्तो, समस्त देशों के स्वतंत्रता के पुजारियो! अपनी आशा में दृढ़ रहो! तुम्हारा और मेरा उद्देश्य एक ही है। तुम्हारे समय में तुम्हारी निन्दा की जाती है; मेरे समय में राजभक्तों ने मुझ पर दोषारोपण किये थे। यदि मैं असफल होता, तो मुझे फाँसी के तख्ते पर झूलना होता। किन्तु अब मेरे शत्रु मेरी प्रतिष्ठा करते हैं। यदि मैं असफल होता, तो भी मैं उसी प्रतिष्ठा का पात्र था। जब विजय भाग गई, तब भी मैं अपने उद्देश्य पर दृढ़ रहा। और इसी लिए मुझे सफलता मिली। तुम्हें भी इसी प्रकार कार्य करना होगा।"

वाशिंगटन में डी वेलरा का स्वागत करते हुए 'सेनेटर रीड' ने कहा था:—

आयरलैण्ड में उस समय के शताब्दियों पहले से उच्चकोटि की शिक्षा संस्थायें मौजूद थीं, जब कि ग्रेट ब्रिटन के लोगों ने अपने को जाड़े पाले से बचाने के लिए पशुओं की खालों को पहनना और अपनी टाँगों में फूस लपेटना तक नहीं छोड़ा था। मैं इंगलैंड पर आक्षेप करने के अभिप्राय से ऐसा नहीं कहता।

जब ग्रेटब्रिटन के निवासियों ने अपने झूटे देवताओं को पूजना छोड़ा, उसके पहले ही आयरलैंड में ईसा मसीह का धर्म पहुँच गया था।

ब्रिटिश ऐजन्ट्स, और उनके सहायक संसार को यह बिश्वास दिलाना चाहते थे कि डी वेलरा आयरलैंड के लिए वास्तविकता के विरुद्ध एक असंगत माँग उपस्थित कर रहा है किन्तु उपरोक्त वाक्यों से पता चलता है कि अमरीका के लोग यह अनुभव करते थे कि आयरलैंड की राष्ट्रीयता की माँग केवल न्यायोचित ही नहीं बल्कि अपने लिए इंगलैंड की माँग से अधिक उचित और वैध है।

अतएव डी वेलरा की अपील युक्ति पूर्ण थी जैसा कि 'आर्क बिशप हेस' ने कहा कि:—देश के भविष्य को उन्नति के लिए डी वेलरा ने जो कृषि सम्बन्धी, औद्योगिक और व्यवसायिक कार्य क्रम रखा है वह व्यवहारिक और रचनात्मक है।"

अमरीका के राज्यों का दौरा करने में प्रत्येक स्थान पर डी वेलरा का अभूतपूर्व स्वागत हुआ। उस स्वागत में राज्यों के गवर्नर नगरों के 'मेयर' सुप्रीम कोर्ट के जज, कांग्रेस के सदस्य, सेनेट के मेम्बर, केथलिक गिरजे के उच्च पदाधिकारी, प्रेसबी-टेरियन, एपिस्कोपिलियन, यहूदी आदि हर श्रेणी के लोग केवल सम्मिलित ही नहीं थे, किन्तु एक दूसरे से प्रतियोगयिता कर रहे थे कि कौन उसको अधिक प्रतिष्ठा करता है। सेनफ्रान्सिसको क्रानिकल उसके स्वागत के सम्बन्ध में लिखता है:—

"आयरिश प्रजातंत्र के सभापति ईमन डी वेलरा ने कल शाम को सेनफ्रान्सिसको में प्रवेश किया। उसका ऐसा स्वागत हुआ जैसा किसी समय आयरिश राजा का होता" 'लार्ड नार्थ क्लिफ' ने अमरीका में प्रचार करने के लिए लाखों डालर भेजे।

और जिस समय डी वेलरा अमरीका में था उस समय 'लार्ड ग्रे' और सर आकलैंड गिडीज ऐसे प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ अंगरेजों की बात समझाने के लिए अमरीका भेजे गये। किन्तु यह बड़े आश्चर्य की बात है कि डी वेलरा के सामने उनकी तनिक भी दाल न गली।

अंगरेजी एजेन्टस मैदान में डट न सके। आयरिश उद्धेश्य को बाधा पहुंचाने में उन्होंने दो एक छोटे मोटे प्रयत्न किये अवश्य, परन्तु कोई विशेष प्रभाव नहीं हुआ। जैसे सेन फ्रान्सिसको के एक होटल से उन्होंने आयरलैंड का तिरंगा झन्डा उतरवा दिया; उत्तरी 'केरोलीना' के एक समाचार पत्र में डी वेलरा की मीटिंग का नोटिस न छप सका। परन्तु इसका उन्हें जवाब दिया गया। तुरन्त ही मिस्टर चार्ल्स पीस्त्रोनी उत्तरी केरोलीना पहुंचे और २४ घन्टे के अन्दर एक चार पन्ने का दैनिक निकाल कर उसकी दस हजार कापियां बटवायीं। जिस मीटिंग को अंगरेजी दूत असफल बनाना चाहते थे वह पूर्ण रूप से सफल हो गई और अंगरेजों का पिट्ठू सम्पादक दंग रह गया।

एक नगर में यह प्रयत्न किया गया कि डी वेलरा की मीटिंग के लिए कोई स्थान न मिले। परन्तु अन्य स्थानों की तरह एक महान उद्देश्य की शक्ति के सामने अंगरेजी प्रचार कार्य को यहां भी परास्त होना पड़ा। इस सम्बन्ध में एक अमरीकन समाचार पत्र का कहना है कि:—

'डी वेलरा अपनी यात्रा में आगे ही बढ़ता जाता है और साथ ही अंगरेजी प्रचार कार्य को ध्वंस करता जाता है। संयुक्तराज्य के इतिहास में आज तक कभी भी इतने अधिक वैतनिक और अवैतनिक अंगरेजी दूत इस अभिप्राय से नहीं रहे कि वे अमरीकन स्वतंत्रता की जड़ काटें और आयरिश स्वतंत्रता को रोकें। किन्तु नवीन आयरलैंड का सच्चा और शान्त नेता, न्याय और सत्य का

कवच पहने हुए, दृढ़ता और व्यवहारिक ढंग से उनकी सेना चीरता हुआ और उनको मैदान से भगाता हुआ, आगे बढ़ता जाता है। उस का कार्य संसार की स्वतंत्रता के लिए है और साथ ही उस देश की स्वाधीनता के लिए भी है जिसने उसे अपना प्रतिनिधि बनाकर इस देश में भेजा है कि यह अमरीकनों के हृदय और आत्मा से अपील करे।"

यह डी वेलरा के कार्य का उचित पुरस्कार था। जिस उत्तम रीतिसे उसने पूर्ण स्वतंत्रता की माँग अमरीकन जनता के सामने उपस्थित की, उससे हजारों ही वे लोग उसके सहायक बन गये, जो न तो आयरिश जाति के थे और न आयरिश लोगों से उनका कोई सम्बन्ध था।

डी वेलरा ने अमरीका में व्याख्यानों की भरमार करदी। किसी व्याख्यान में वह आयरलैंड की उचित माँग पेश करता था और कहीं वह अमरीकनों से उनकी न्याय प्रियता के नाम पर अपील करता था। एक व्याख्यान में उसने कहा:—

"आप स्वतंत्रता प्रेमी लोग हैं। अगर हम आयरलैंड निवासी इस बात को न जानते होते, तो आज मैं यहाँ आपके सामने न होता। अमरीका के लोग स्वतंत्रता में पले हैं और केवल स्वतंत्रता ही के लिये उन्होंने महा समर में भाग लिया था, मैं आप लोगों से अपने देश के प्रति शुद्ध न्याय करवाने के लिए आया हूँ। हमारे देश ने अंगरेजी शासन को कभी स्वीकार नहीं किया। वह सर्वदा उसके विरुद्ध रहा है। वह सदा इंगलैंड से लड़ने को तैयार रहा है और मैं आयरलैंड के नाम पर आपको विश्वास दिलाता हूँ कि वह अपना युद्ध जारी रखेगा। आयरलैंड के लोगों को यह अधिकार है कि वे स्वयं निश्चय करें कि वे किस प्रकार के शासन के अधीन रहेंगे। वे इंगलैंड के शासनाधीन रहने से इन्कार

करते हैं। उन्होंने अपना प्रजातंत्र राज्य स्थापित कर लिया है और मैं यहां इसलिए आया हूँ कि संयुक्त राज्य की गवर्मेंट सरकारी तौर से उस प्रजातंत्र की सत्ता को स्वीकार करले।"

दूसरे स्थान पर अपने स्वगत का उत्तर देते हुए उसने कहा:—
"मुझे आशा है कि इस क्षण का उत्साह स्थायी होगा और यह उत्साह अपनी गवर्नमेंट को राजी कर लेगा कि यह सरकारी रीति से आयरिश प्रजातंत्र की सत्ता को स्वीकार करले। इस देश के लोगों की इच्छा ही सारी शक्ति का मूल है और मुझे विश्वास है कि लोगों की इच्छा हमारे साथ है। अब यह देखना है कि अन्तिम न्याय करनेवाली प्रजा होती है या शक्ति।"

यद्यपि जिस उद्देश्य के लिए डी वेलरा के मनमें लगन लगी हुई थी, उस पर उसका सारा ध्यान लगा रहता था, किन्तु उसने घोषित कर दिया था कि 'संसार के अन्य राष्ट्र—भारत, मिश्र, कोरिया, आदि—जो आयरलैंड की तरह अधिक प्रयत्न और आन्दोलन कर रहें है अवश्य सफल होंगे। वे दबाये नहीं जा सकते, देरी चाहे भले ही हो जाय। उसने अमरीका से प्रर्थना की कि वह संसार का नैतिक नेतृत्व ग्रहण करे, क्योंकि वह इस पद का अधिकारी है।'

एक दूसरे व्याख्यान में उसने कहा :—
"जिन लोगों ने आपका प्रजातंत्र राज्य स्थापित किया था उन्होंने फ्रान्स से सहायता ली थी। मैं अमरीका से सहायता की प्रर्थना करता हूँ। मैं आयरिश जाति के लिए उसी अधिकार से बोलने आया हूँ जिस अधिकार से प्रेसीडेन्ट विल्सन संयुक्त राज्य के लिए बोलते हैं, या लायडजार्ज इंगलैंड के लिए, क्लीमेंशू फ्रांस के लिए।"

"मैं सीधा आयरिश जनता की ओर से अमरीका की जनता के

सम्मुख आया हूँ और मुझे विश्वास है कि अमरीका की जनता और उसके द्वारा अमरीका की सरकार, जान बूझ कर कभी यह गवारा न करेगी कि आयरिश जाति की ईश्वर प्रदत्त स्वतंत्रता का दमन हो।"

"स्वतंत्रता से पोषित अमरीकन जाति सदा स्वाधीनता का पक्ष लेती रही है। उससे प्रार्थना करना कभी व्यर्थ नहीं हुआ। जिस समय यूरोप की अन्य सरकारें पोलेन्ड, ग्रीस, हंगेरी और युरोप की अन्य लातीनी जातियों की दुखभरी आवाज़ को सुनने के लिए अपने कान जान बूझकर बन्द किये हुए थीं, क्योंकि वे अत्याचारियों को नाराज़ करने से डरती थीं, उस समय आप की महान जाति ने उन पीड़ित जातियों की आह को सुना और अत्याचारियों के क्रोध को अवहेलना करके उनकी सहायता की।"

"अमरीका के लिए यह गौरव की बात है और हमारे लिए आशा की बात है कि जिस किसी की अमरीका ने सहायता की उसे सफलता और विजय अवश्य प्राप्त हुई। युरोप की लातीनी जातियां, पोलेंड, हंगेरी और ग्रीस इस समय स्वतंत्र हैं। श्वेत जातियों में केवल आयरलैण्ड ही विदेशियों का दास है। वह भी अवश्य स्वतंत्र हो जायेगा यदि अमरीका ने अपने सिद्धान्तों को ठुकरा न दिया और अपने बुज़ुर्गों की परिपाटी के विरुद्ध कार्य न किया।"

"उस विप्लव के नेताओं ने, जिसने अमरीका को एक महाराष्ट्र बना दिया, यह बात मान ली थी, जैसा कि हम भी स्वीकार करते हैं कि अल्प संख्याओं के अधिकार होते हैं। किन्तु उन्होंने इस बात को कदापि स्वीकार नहीं किया कि अल्प संख्याओं की इच्छा सदा बहु संख्याओं की इच्छा को दबाये और रोके रहे। यदि ऐसा

विशेषाधिकार दे दिया जाय तो जनता को अपने देश का शासन करना असम्भव हो जायगा।"

"ब्रिटिश गवर्मेंट ने जो बातें और जो अस्त्र अमरीकन विप्लव के नेताओं के खिलाफ़ इस्तेमाल किये थे, आज उन्हीं का प्रयोग हमारे विरुद्ध भी किया जा रहा है। आप के नेताओं ने कार्य किया और हमने भी काम किया। बहुमत ने उनका साथ दिया और बहुमत हमारे साथ भी है। अन्धकार के समय में भी उनके उद्देश्य का न्यायोचित होना ही उनके लिए एक आशा की वस्तु थी। उन्हें विश्वास था कि यदि वे दृढ़ रहे, तो अन्त में उनकी विजय अवश्य होगी। उसी प्रकार हमारे उद्देश्य की महत्ता हमारी भी आशा का दीपक है। जिस प्रकार वे लड़े थे, उसी तरह हम भी लड़ते रहे हैं और लड़ रहे हैं। उन्हें देश द्रोही और हत्याकारी कहा गया, वैसा ही हमें भी कहा जाता है।"

"आयरलैण्ड संसार के राष्ट्रों में अपना स्थान ग्रहण कर रहा है। जो अमरीकन किसी समय तुच्छ दृष्टि से देखे जाते थे, आज संसार के सिरमौर समझे जा रहे हैं। आप अपना सिर गर्व से इसलिए उठाए हुए हैं कि आप समझते हैं कि आप एक महान राष्ट्र हैं। हम, आयरलैण्ड के निवासियों ने निश्चय कर लिया है कि हम अब गुलाम बनकर न रहेंगे। आरम्भ ही से हमने अपने आन्दोलन को बातूनियों की तरह नहीं किन्तु काम करने वालों की तरह चलाया है।"

"पेरिस में जो संधि चर्चा हो रही है, मनुष्य जाति के लाभ की दृष्टि से, उसके परिणामों की ओर, संसार के अन्य राष्ट्रों की अपेक्षा आयरलैण्ड अधिक उत्सुकता से देख रहा है। आयरलैण्ड के निवासी इस बात को मानते हैं कि यदि अबकी बार भी ग़लत रास्ता ग्रहण किया गया और यदि पूर्ववत हिंसा ही को अन्तिम

निर्णय करने वाले का स्थान दिया गया, तो मनुष्य जाति के सामने ऐसी विपत्ति का समय आवेगा जिसकी उपमा इतिहास में नहीं है।"

"युद्ध में लिए हुए ऋण के कारण पैदा होने वाले टेक्सों के बोझ से, अस्त्र-शस्त्र बनाने की प्रतियोग्यता में होने वाले खर्च और राजनीतिक चालबाजियों से राष्ट्रों में आन्तरिक उथल पुथल अवश्यमेव उत्पन्न हो जायगी, जिसका परिणाम अराजकता और गृह-कलह होगी। जो संगठित युद्ध अभी समाप्त हुआ है उसके स्थान में असंगठित लड़ाइयों का एक महा भयंकर सिलसिला छिड़ जायगा।"

"युद्ध करने वाले दो दलों में नाम मात्र की शान्ति-सन्धि स्थापित हो गई है। किन्तु इस शान्ति-सन्धि से एक के स्थान पर बीस युद्ध उत्पन्न होंगे। क्या यह शान्ति का मखौल उड़ाना नहीं है। यह मजाक उस समय तक बना रहेगा जब तक अमरीका संसार के नैतिक नेतृत्व की जिम्मेदारी अपने ऊपर नहीं लेगा। इस समय यह नेतृत्व सर्व सम्मति से उसे प्रदान किया जा रहा है। समय न बारम्बार, यह अवसर दुबारा फिर नहीं आने का।"

जब ब्रिटिश गवर्नमेंट ने देखा कि उसके एजेन्टों के निरन्तर प्रयत्न करने पर भी अमरीका में डी वेलरा की तूती बोल रही है, तब उन्होंने एक दूसरी चाल खेली। उन्होंने 'अलस्टर के प्रोटेस्टेन्टों का एक डेप्युटेशन संयुक्त राज्य को भेजा। इस डेप्युटेशन का उद्देश्य अमरीकनों के विचारों में गड़बड़ पैदा कर देना ही था। उन्होंने कहा कि आयरिश प्रश्न तो एक धार्मिक प्रश्न है राज नैतिक नहीं, और दूसरे यह इंगलैंड का घरेलू सवाल है। इसमें अमरीका को नहीं पड़ना चाहिए। परन्तु अमरीका के लोग धोखे में नहीं फँसे समझ गये कि यह केवल अंगरेजों का प्रचार कार्य है। डी वेलरा

ने इस डेप्युटेशन वालों की बातों का खूब करारा उत्तर दिया और साफ साफ कह दिया कि "हमारी और इंगलैंड की घनिष्ठता कभी नहीं रही । हम ब्रिटिश साम्राज की लूट में कभी हिस्सेदार नहीं रहे किन्तु हम तो इस साम्राज्य की सारी बातों को घृणा की दृष्टि से देखते रहे हैं ।"

अलस्टर के डेप्युटेशन के सदस्यों को डी वेलरा ने सामने आकर बहस करने के लिए ललकारा । परन्तु वे सदा कन्नी काटते रहे और कभी सामने नहीं आये । शायद मुकाबिला करने से वे घबड़ाते थे, क्योंकि उनके पास अपना पक्ष समर्थन करने के लिए कोई विशेष बात ही न थी ।

डी वेलरा अपना काम करता गया । उसके कार्य अनेक थे परन्तु उसकी दृष्टि के सामने एक ही उद्देश्य था और वह था "अवांच्छनीय सरकार के अत्याचारों को रोकना, इंगलैंड से सम्बन्ध विच्छेद करना, क्योंकि यही देश के राजनीतिक कष्टों की जड़ है, और अपने देश की स्वतंत्रता को घोषित करना।"

डी वेलरा संयुक्त राज्य में खूब भ्रमण कर चुका था । प्रेसीडेन्ट के चुनाव के कारण उसे आयरिश प्रजातंत्र की सत्ता को मनवाने का एक बड़ा सुन्दर अवसर प्राप्त हो गया । जमीन पहले से तैयार थी । बीज बोया जा चुका था । कसर केवल शुभ अवसर की थी, वह मिल गया । शिकागो में 'रिपब्लिकेन' दल के सामने और 'सेनफ्रान्सिसको में 'डिमाक्रेट' दल अर्थात् स्वतन्त्र व्यक्ति हितवादी प्रजातंत्रा और केन्द्रित राष्ट्रवादी प्रजातंत्री दोनों दलों के सम्मुख इसने अपनी मांग उपस्थित कर दी । परन्तु दुर्भाग्य से जिन लोगों ने अब तक आयरलैंड की बात का समर्थन किया था, उनमें और डी वेलरा में मतभेद उत्पन्न हो गया । अमरीकन राजनीति से प्रभावित होकर वे सहायक

लोग केवल यह करना चाहते थे कि हर स्थान से आयरलैंड के लिए सहानुभूति प्रकट की जाय । परन्तु डी वेलरा चाहता था कि आयरिश प्रजातंत्र की सत्ता को सरकारी तौर पर स्वीकार करवा लिया जाय । यह केवल सहानुभूति से सन्तुष्ठ नहीं था । किन्तु हुआ यही कि दोनों दलों से सहानुभूति के प्रस्ताव पास हो गये ।

कुछ समय तक डी वेलरा समझता रहा कि यदि आयरलैंड से सहानुभूति वाली समस्त अमरीकन संस्थाएं एक में मिल जायें, तो आयरिश प्रजातंत्र को अधिक लाभ होगा किन्तु उसकी यह आशा प्रेसीडेन्ट के चुनाव के दिन निराशा में परिणत हो गई । अतएव आयरिश प्रजातंत्र को स्वीकार कराने के लिए अमरीकन मित्रों की एक नई संस्था स्थापित की गई । इसके ८५०००० सदस्य बन गये और यह आयरलैंड के हित के लिए बड़े उत्साह से कार्य करने लगे । और यदि आयरिश-अंगरेजी सन्धि न हुई होती तो यह संस्था आयरलैंड के हितों के लिए अमरीकन सरकार का या अपना शक्तिशाली प्रभाव अवश्य डालती ।

अमरीका में डी वेलरा का सब से बड़ा काम यह हुआ कि मित्रराष्ट्रों ने "लीग आफ नेशन्स" का जैसा संगठन किया था, वह असफल हो गया । इस संगठन की उस धारा का अभिप्राय यह था कि लीग के सदस्य बाहरी आक्रमण होने पर एक दूसरे की रक्षा करेंगे और प्रत्येक सदस्य की वर्तमान राजनीतिक स्वतंत्रता तथा जिसका जैसा राज्य है उसे वैसा ही बना रखने का प्रयत्न करेंगे । इस धारा के अनुसार संसार की महाशक्तियां इंगलैंड के साथ वचन बद्ध होती थीं कि वे उसके साम्राज्य की रक्षा के लिए युद्ध भी करेंगी । वे इस बात

पर भी राजी हो चुकी थीं कि स्वतंत्रता के आन्दोलन में कोई दूसरा राष्ट्र आयरलैंड की सहायता न कर सकेगा। डी वेलरा के शब्दों में, लीग जैसी कि आरम्भ में बनी थी, उसका एक मात्र अर्थ यह था कि, वह एक ऐसी संस्था है जो उन लोगों की वह शक्ति बनाये रखेगी जो जिन्हें इस समय प्राप्त है और उन लोगों को सदा दास बनाये रखेगी जो इस लिखत के समय तक राष्ट्रीय नियमों के अनुसार दासत्व में हैं। किन्तु ये नियम चोरों के हैं जो उन्होंने परस्पर एक दूसरे के साथ व्यवहार करने के लिए बना लिये हैं।" डी वेलरा ने अपनी सारी शक्ति इस बात पर लगा दी कि अमरीका इस शर्त को कदापि न स्वीकार करे। उसने कहा कि यदि आपने इस शर्तनामे पर उसके वर्तमान रूप में हस्ताक्षर कर दिये, तो आप मेरे देश को गुलाम बना देंगे। अमरीकन लोगों ने उसकी बात मान ली और अमरीकन 'सेनेट' (शिष्ट परिषत्) ने उस पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया।

डी वेलरा ने अमरीका में जो काम किया और जो सफलता प्राप्त की यदि उसका सविस्तार से वर्णन किया जाय, तो एक बड़ी पोथी बन जाय। संयुक्त राज्य के एक दौरे में उसने ८००० मील की यात्रा की। इस यात्रा में आयरिश प्रजातंत्र के लिए उसने बहुधा अठारह घंटे प्रतिदिन काम किया। आयरलैंड के हित के लिए उसके प्रयत्नों ही का यह फल था कि राजनीति का उज्ज्वल अंश लोगों की दृष्टि के सामने आ गया। संसार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक उसका नाम गूंज उठा। शक्तिशाली और दलित राष्ट्रों ने उसके शब्दों की बुद्धिमत्ता को समझा। भिन्न भिन्न महाद्वीपों के भिन्न भिन्न केन्द्रों से उसके पास बधाई के समाचार आये। उसकी यात्रा ने फल उत्पन्न किये। जब उसने आयरिश प्रजातंत्र के लिए अमरीकनों से धन की अपील की, तो जितना

धन उसने मांगा था, उससे अधिक धन उसे प्राप्त हो गया। युद्ध में जिन लोगों को हानि पहुँची थी उनकी सहायता की जब उसने आर्थिक याचना की, तो तुरन्त 'ह्वाइटक्रास' नामक संस्था स्थापित हो गई, जिसने सहस्त्रों असहायों को सहायता पहुंचाई, यहां तक कि 'पोप बेनीडिक्ट १५ वें' ने भी तीन हजार पौंड भेजे। जब उसने इस बात को प्रकाशित किया कि आयरिश राजबन्दी बिना मुकदमे के रोक रखे जाते हैं, तो ८८ कांग्रेस-मैनों ने तार द्वारा मिस्टर लायडजार्ज को अपने जोरदार विरोध की सूचना दी। इससे यह भी प्रकट होता है कि धन खर्च करने पर भी अंगरेजों का प्रचार कार्य असफल रहा।

न्यूयार्क नगर की ओर से डी वेलरा को स्वतंत्र नागरिक की उपाधि प्रदान की गई। यह अंगरेजों पर एक करारी फटकार थी, क्योंकि उनकी संरक्षता में तो डी वेलरा के लिए सबसे बड़ी प्रतिष्ठा जेल की कोठरी ही थी। जिस समय वह 'न्यूयार्क' नगर की सड़कों से जा रहा था, उस समय उसके साथ साथ पांच सौ सैनिक अपनी पूरी वर्दी पहने हुए चल रहे थे। 'क्लीवलेंड' में उसके स्वागत के जलूस में २५०० सैनिकों ने भाग लिया था। एक ओर से अमरीकन सिपाही उसका स्वागत कर रहे थे और दूसरी ओर इन्हीं सिपाहियों के साथ फ्रान्स में कंधों से कंधा भिड़ाकर लड़ने वाले अंगरेजी सिपाही यदि उसे पा जाते तो किसी भयंकर जेल में ठूंसे बगैर न मानते।

जब डी वेलरा संयुक्त राज्य के शहरों में निमंत्रित होकर जाता था तब बहुधा उसका स्वागत करने के लिए उस राज्य का गवर्नर या शहर का मेयर आता था। उसने बहुत सी व्यवस्थापक सभाओं में व्याख्यान दिये, जिनमें से अनेकों ने आयरलैंड के लिए पूर्ण स्वतंत्र-शासन की मांग के प्रस्ताव पास किये। इससे प्रकट

होता है कि आयरिश प्रजातंत्र के हित के लिए डी वेलरा जो प्रकाश फैला रहा था उसमें वह पूर्ण रूप से सफल हुआ। एक अंगरेजी समाचार पत्र ने लिखा "डी वेलरा ने हमारे लिए अमरीका में कोई स्थान नहीं छोड़ा।" मिस्टर 'रेटक्लिफ' ने 'नेशन' पत्र में लिखा कि, 'आयरिश सम्मति से अमरीका में सन्धि की मृत्यु हो गई।" लार्ड 'ग्रे' इससे बड़े दुखी थे और लार्ड 'रोडिंग ने अपने देशवासियों से कहा था कि वह दिन हमारे लिए सौभाग्य का होगा जब अमरीका से आयरिश प्रचार प्रश्न उठ जायेगा।" किन्तु डी वेलरा ने अपनी सत्यता के आन्दोलन को और भी उग्र बना दिया। लीग आफ नेशन्स में आयरलैंड के समानाधिकार का जिक्र करते हुए मिस्टर आर्थर ग्रिफिथ ने कहा था कि "डी वेलरा के नेतृत्व में आयरलैंड ने सब से बड़ी राज-नीतिक विजय प्राप्त करली है।" डी वेलरा के साथी मिस्टर फ्रेंक वाल्श ने कहा था कि, "वह संसार के किसी भी राजनीतिज्ञ का मुकबिला कर सकता है।" फ्राँस की राज सभा के सदस्य मिस्टर 'से गनीयर' ने उसे "प्रत्येक स्थान की स्वतंत्रता का संसार प्रसिद्ध समर्थक" के नाम से याद किया है। रूसके आस्कर यमपोल्स्की पर इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि उसने कहा कि "ईमन डी वेलरा की आत्मा कभी नहीं मरेगी। लाहौर के लाला लाजपतराय ने घोषित किया कि "भारत वर्ष में सन् १९२५ में आयरलैंड से अधिक सीनफीनर हो जयेंगे"

डी वेलरा के अमरीका में रहने के समय उसे अमरीका के आदिम निवासियों की ओर से 'पिदावा' इडिन्यनों का सरदार" की विचित्र उपाधि प्रदान की गई। थियोडर रुजवेल्ट' को छोड़ कर यह प्रतिष्ठा कभी किसी 'सफेद' मनुष्य को नहीं दी गई थी। दृश्य बड़ा ही प्रभाव जनक था। बहुत से आदिम निवासी

इन्डियन पन्द्रह रोज की यात्रा कर के अपने 'संघ के सरदार' के दर्शन करने के लिए आये थे।

इधर अमरीका में डी वेलरा आयरिश प्रजातंत्र के लिए धूम मचाए हुए था और उसने एक प्रकार से आयरिश प्रजातंत्र की सत्ता की धाक जमा दी थी। उधर आयरलैंड में अत्याचार का राज्य था। यहाँ पकड़-धकड़, लूट मार, आग और हत्या अर्थात् हर प्रकार की हिंसा का साम्राज्य स्थापित था। दमन उग्र रूप धारण किये हुए था। बेशुमार गिरफ्तारियाँ हो रही थीं, लम्बी लम्बी सजाएं दी जा रही थीं, घर जलाये जा रहे थे। कारखाने और कबरिस्तान तोड़े जा रहे थे। कोड़े लगाये जा रहे थे और निहत्थी प्रजा कत्ल की जा रही थी। भीड़ पर गोली चला देना तो मामूली बात हो रही थी। जिन लोगों का राज नीति से कोई सम्बन्ध न था वे लोग तक घर से घसीट कर गोली से उड़ा दिये जाते थे। और इस सारी बर्बरता के करने वाले थे राजकर्मचारी इस समस्त पापाचार और अत्याचार का उत्तर दायित्व ब्रिटिश गवर्नमेंट पर है, जो आयरलैंड की जनता के जान माल की रक्षा करने का दावा करती है और शान्ति और व्यवस्था की ठेकेदार बनती है। यह सारे कुकर्म एक दिन नहीं महीनों तक होते रहे। सरकार ने इन को रोक थाम के लिए या अत्याचार करने वालों को किसी प्रकार का दण्ड देने के लिए चूं तक नहीं की, प्रत्युत इन अत्याचारों की ओर से सरकार ने आंख बन्द कर ली और इस प्रकार अत्याचारियों को उत्साहित किया कि वे मन माने जुल्म करते रहे। अल्सटर के साम्प्रदायिक झगड़े, जिन में दोनों ओर के लोग मारे गये, लूटे गये और दोनों ओर के लोगों के घर जलाये गये, इसी पापिष्ठ साम्राज्य के अधिकारियों के संकेत से हुए जो न्याय और सत्य की दुहाई दिया करता है।

अलसटर वालों को शेष आयरलैंड के साथ मिलकर चलने के लिए मजबूर करने की अपेक्षा सरकार ने उन्हें अपना पिट्ठू बना रखा है, वह सदा, समय कुसमय, उनके प्रश्न को लेकर समस्त आयरलैंड के हृदय में बर्छियां घुसेड़ा करती है। कोई साधारण समझ का भी मनुष्य यह नहीं कह सकता कि अल्प संख्याओं को दबा देना चाहिए। परन्तु अल्प संख्याओं को पहले ही से यह विश्वास दिला देना कि उनकी प्रत्येक बात मान ली जायगी, चाहे वह बात मूर्खता पूर्ण ही क्यों न हो, उनको पानी पर चढ़ाना है, उनकी मांगों को अधिक अन्याय युक्त बनाना और समझौते को असम्भव कर देना है। यदि इसी प्रकार की रियायतें 'केनाडा' के उन अल्प संख्यकों के साथ की गई होतीं जो 'डाउनिंग स्ट्रीट' वालों के साथ चिपके हुए थे और सुधारों के विरोधी थे, तो आज हमारे समय की सब से बड़ी 'डोमीनियन' का जन्म न हुआ होता। यदि ब्रिटिश गवर्नमेंट पक्षपात, बहानेबाजी और अत्याचार से काम लेती रहेगी, तो परिणाम में भयंकर युद्ध और ग्रह-कलह उत्पन्न होगी। आयरलैंड का प्रश्न अमानुषिक दमन से हल न होगा। वह तो उसी समय समाप्त होगा जब उसका जन्म-सिद्ध अधिकार मान लिया जायगा और समस्त राष्ट्रों की तरह उसे भी अपने मन की सरकार चुनने का अवसर दिया जायगा।

जिस समय अमरीका में डी वेलरा के पास यह समाचार पहुंचा कि आयरलैंड में अत्याचारों के प्रति अपना रोष प्रकट करने के लिए कार्क के लार्डमेयर, 'टेरेन्स मेकस्वेनी' और उनके अन्य साथी जेल में भूख हड़ताल कर रहे हैं, उसी समय उसने लार्डमेयर के चेपलेन फादर डोमिनिक को निम्नलिखित एक उत्साह-वर्धक सन्देश भेजा और न्युयार्क नगर में इस प्रकार के

व्यवहार के विरोध में सभाएं कराईं। डी वेलरा का सन्देश यह था—"लार्ड मेयर तक मेरा निजी प्रेम और प्रतिष्ठा पहुँचा दो और सरकारी रूप से उनपर आयरिश जाति की कृतज्ञता प्रकट कर दो। उनकी और उनके साथ मरने वालों की वीर भावनायें सदा हमारे देशवासियों के लिये नागरिक साहस का प्रकाश-स्तम्भ और सैनिक बलिदान का आदर्श बनी रहेंगी। हम उनके साथी, पुनर्वार प्रण करते हैं कि हम अपने देश पर अपने जीवन को अर्पण करते हैं और उनका मरना व्यर्थ न होने देंगे।" 'फादर डोमिनिक' ने डी वेलरा को निम्न लिखित उत्तर भेजा:—

"प्रेसीडेन्ट डी वेलरा—लार्ड मेयर अपनी ओर से और अपने साथियों की ओर से महान कृतज्ञता प्रकट करते हैं। लड़ाई को अन्त तक ले जाने के लिए आपकी उदार बधाई उनको सहायक होगी। उन्हें ईश्वर का सहारा है और वे इस बात से सन्तुष्ट हैं कि यदि वे मर गये तो प्रजातंत्र की सत्ता विजय की ओर अधिक अग्रसर हो जायगी। ईश्वर आपको चिरंजीव रखे और आपके शुभ कार्य में आपकी रक्षा करे।

इस विकट परीक्षा के समय आयरिश जनता की रक्षा "आयरिश प्रजातंत्र सेना" (I. R. A) द्वारा की जाती थी। यह सैनिक वीरता के साथ सरकारी सेना का सामना करते थे और खुले मैदान में तथा उनकी बारिकों में उनपर आक्रमण करते थे। यह अंगरेजी पुलिस और सेना उन सिपाहियों की बनी थी जो युरोपीय रणक्षेत्र से लौटकर आये थे और शान्ति-प्रिय लोगों पर छुट्टा छोड़ दिये गये थे। 'सरहेमर ग्रीनउड' ने अंगरेजी हाउस आफ कामन्स में इस बात का साफ इन्कार कर दिया और कहा कि आयरलैंड के ऊपर होने वाले अत्याचारों के विषय में ये सैनिक बिल्कुल निर्दोष हैं। किन्तु इङ्गलैंड में भी कुछ भले आदमी थे

जिन्होंने सरकारी पक्ष की पोल खोलकर आयरलैंड की सहायता की। इस सम्बन्ध में 'कमान्डर केनवर्थी' 'केप्टनडेन' 'मिसेज डेस्वर्ड' लेडीकोन्हम' और अन्य सज्जनों ने बहुत कुछ किया। किन्तु इसके उत्तर में सरकार ने और अधिक दमन किया। अपना पक्ष समर्थन करने के लिये मिस्टर लायडजार्ज कहते थे कि ब्रिटिश सामाज्य की रक्षा के लिए आयरलैंड को अपने अधीन रखना आवश्यक है । परन्तु इस ढोंग और मक्कारी की पोल खोलने के लिए डी वेलरा का प्रत्तोतर था कि इङ्गलैंड की रक्षा के लिए क्रोधित और दुखी आयरलैंड की अपेक्षा स्वाधीन, स्वतंत्र, अधिकारयुक्त, और संतुष्ट आयरलैंड का पड़ोस में रहना अधिक हितकर है। अपनी वात को पुष्ट करने के प्रमाण स्वरूप उसने अमरीका द्वारा 'क्युवा' को स्वतंत्रता प्रदान करने वाले प्रथम वाक्य का उदाहरण दिया। वाक्य ये थे:—

"क्यूवा की सरकार किसी विदेशी शक्ति या शक्तियों से कभी कोई ऐसी सन्धि न करेगी, जो क्यूबा की स्वतंत्रता को आघात पहुँचा वे या आघात पहुँचाने का प्रयत्न करे। और किसी प्रकार का अधिकार किसी विदेशी शक्ति या शक्तियों को न देगी जिससे वे वहां बसकर या अन्य किसी तरह से इस द्वीप के किसी भाग पर कब्जा कर लें।"

इस वाक्य का उद्धरण करके उसने एक ही चोट में अंगरेजों की उस दलील के टुकड़े टुकड़े कर दिये, जो वे वर्षों से विदेशों के सम्बन्ध में उपस्थित करते रहे थे।

डी वेलरा की अमरीकन यात्रा की साधारण बातों का उल्लेख करने के लिए इतना ही कहना अलम् है कि उसके सम्मानार्थ सैकड़ों भोज दिये गये। उसके प्रशंसकों द्वारा अनेकानेक सोने के वर्तन, पदक आदि भेंट किये गये। उसे फूल

मालाएं पहनाई गईं और गुलाब के फूलों से भरी हुई टोकरियां नजर की गईं।

यदि एक स्थान पर उसने अपने प्रतिद्वन्द्वी को तैराकी में परास्त किया, तो दूसरे स्थान पर वह दीन दुखियों को सान्त्वना देने की इच्छा से उनके गृहों को देखने गया। एक अन्य स्थान पर वह 'आनन्द वर्द्धनी' सभा का प्रतिष्ठित सभासद बनाया गया। इस सभा के सदस्यों से उसने कहाः—"मेरे जीवन में मेरी आशा से भी अधिक दुख-जनक बातें मौजूद हैं, किन्तु यह पहला अवसर है जब मैं ऐसी सभा का सदस्य चुना गया हूं जो दुख-जनक बातों को स्वीकार करने से इन्कार करती है। मुझे इससे प्रसन्नता प्राप्त हुई है। मेरी सदा यही प्रार्थना रहेगी कि हमारे जीवन में सिवा आनन्द के और कोई बात न आने पावे और हम सब सदैव अन्धकार के बादलों को भगाने का प्रयत्न करते रहें।"

अन्य महापुरुषों की तरह डी वेलरा के भी व्यंग चित्र निकाले गये। किन्तु न मालूम क्यों इन व्यंग चित्रों में सदा उसकी आकृति में और भी अधिक दृढ़ता ही बना कर दिखलाई गई।

'सेन्ट पैट्रिक' दिवस के शुभ अवसर पर उसने संसार में फैले हुए अपने देश वासियों के नाम एक सन्देश भेजा:—

"गेल के पुत्र और पुत्रियों। आज के दिन जहां कहीं भी तुम हो, मातृभूमि के नाम पर तुम्हें बधाई। तुम चाहे जिस झण्डे के नीचे हो और उसकी रक्षा करते हो किन्तु तुम्हारा एक सूत्र में बंध जाना इस कर्तव्य के प्रति असंगत न होगा। तुम अपनी संगठित शक्ति को अपनी दुखी मातृ भूमि की दासता की श्रृङ्खला को तोड़ने में प्रयोग कर सकते हो। आयरलैंड की बिखरी हुई सन्तानों को उत्तम सेवा करने का ऐसा शुभ अवसर आज से

पहले कभी नहीं प्राप्त हुआ था। आज तुम केवल आयरलैंड ही की नहीं किन्तु सारे संसार की सेवा कर सकते हो।

"निर्दय युद्ध ने, और उससे अधिक निर्दय शान्ति ने आत्मा की उदारता को छिन्न भिन्न कर दिया है। अवहेलना मानसिक उच्चता का परिहास कर रही है और हृदय हीन शुष्कता स्वार्थ का मार्ग दिखला रही है। हम ऐसी जाति की सन्तति हैं जिस ने कभी प्रयत्न करना नहीं छोड़ा, जिसने युगों तक युद्ध के कष्ट और शान्ति की निराशा सहन की है, जिसने प्रत्येक दशा में अपनी आशाओं के फल को छिनते देखा है और फि भी निराश नहीं हुई, जिसकी प्रवृति कभी नहीं बिगड़ी किन्तु हम सदा उज्वल भविष्य की ओर दृष्टि लगाये रहे हैं। संसार को उन बातों की आवश्यकता है जो हम उसे प्रदान कर सकते हैं।

"आज भी हमारा यह अभिनिर्याण (mission) है कि हम संसार को नैतिक सुन्दरता का बल दिखलायें। हम मनुष्य जाति को यह शिक्षा दें कि प्रेम का नियम पालन करने ही में सच्चा सुख और शान्ति है। हम अपने पड़ोसियों के साथ वैसा ही व्यहार करें जैसा कि हम चाहते हैं कि हमारे पड़ोसी हमारे साथ करें। राजनीतिक दासता में फंसे हुए लोगों में हम सब से आगे हैं। हम संसार के दुखी और निराश लोगों के लिए प्रकाशस्तम्भ हो सकते हैं।

हमारी जाति के जो लोग इस बलशाली अमरीकन भूमि के नागरिक हैं, जिनके विचार राष्ट्रों के नेताओं की नीति पर अपनी छाप लगा देंगे, उनसे आज संसार बड़ी आशा कर रहा है, उन पर विश्वास करता है और उनकी ओर अपनी दृष्टि लगाये हुए है। जिस बात की आवश्यकता है उसे तुम सहज ही कर सकते हो। रास्ता साफ है, तुम्हारे इच्छा करने भर की देर है। "जो

शक्ति तुम्हें प्राप्त है उसे प्राप्त करने के लिए वह प्रचीन भूमि सब कुछ निछावर कर सकती है। उस शक्ति का सदुपयोग करने के लिए ईश्वर और सेंट पेट्रिक आप को उत्साहित करें।"

अमरीका में डी वेलरा के काम को देख कर वहां के पत्रों ने उसकी भूरि भूरि प्रशंसा की थी। उसके नेतृत्व शक्ति की विशेषता, सब लोगों तक अपना सन्देश पहुँचाने की चतुरता और उसकी राजनीतिक बुद्धिमत्ता के गुण गाये गये थे। एक पादरी कहता है कि:—

"डी वेलरा ने अपना जीवन आयरलैंड के लिए अर्पित कर दिया है। डबलिन में उसने शत्रु का सामना किया, ईस्टर की क्रान्ति के समय आत्म-समर्पण करने वाले बागी सैनिकों में वह अन्तिम कमान्डर था। उसे फाँसी की सजा मिली थी। वह अंगरेजी जेलों में सड़ा है। वहाँ से निकल कर भागने में उसने अपनी जान जोखिम में डाली है और बदला लेने वाले अंगरेजी न्याय से बचता रहा है। यदि समय आया और आवश्यकता हुई, तो सोती हुई देश भक्ति और संसार की प्रजातंत्रीय आत्मा को जगाने के लिए, वह अपना रक्त बहा ने में संसार के त्यागियों में सर्व प्रथम स्थान प्राप्त करेगा।

"अत्यन्त उत्साह-पूरित होने पर भी आयरलैंड की स्वतंत्रता प्राप्त करने में डी वेलरा शान्त और स्थिर है। इंगलैंड के प्रति उसके मन में कोई घृणा का भाव नहीं है। अवहेलना और विरोध से वह घबड़ाता नहीं। वह एक आदर्श वादी है, जो अपने आदर्श की न्याय-प्रियता और सुन्दरता से जगमगाया करता है। उसे विश्वास है कि अन्त में मनुष्य मात्र उसके स्वप्नों का दृश्य देखेंगे। साथ ही वह उनकी हिचकिचाहट को देख कर असन्तुष्ट नहीं होता और न अप्रसन्न होता है, किन्तु उन तक

प्रकाश पहुँचाने और उन्हें अपनी ओर लाने के व्यवहारिक कार्य में अथक परिश्रम करता रहता है।

"महा पुरुषों का विशेष गुण, सरलता और उसका मिष्ट भषण है। मानुषिक आदर्श, अध्यात्मिक वास्तविकता, साहस, दार्शनिकता वर्तमान उत्साह, और प्राचीन स्वप्न शायद ही कभी किसी एक मनुष्य में ऐसे प्रेम से घुले मिले हों जैसे कि ईमन डी वेलरा में पाये जाते हैं। वह इन सब गुणों की जीवित मूर्त्ति है।"

जब आयरिश स्थिति पर डी वेलरा से सन्देशा माँगा गया, तो उसने कहा:—

"जब तक आयरिश जाति अपने आदर्शों पर डटी रहेगी, तब तक हमें सफलता की पूर्ण आशा और विश्वास है।"

सातवाँ अध्याय

शुक्रवार, २४ दिसम्बर १९२० को डी वेलरा आयरलैंड में आगया। जिस प्रकार वह मिस्टर लायडजार्ज या अंगरेजी वैदेशिक विभाग से विना पूछे हुए गया था, उसी प्रकार वह लौट भी आया। मिस्टर माइकेल कालिन से उसकी भेंट हुई। जिस समय वह डी वेलरा से प्रातःकालीन भेंट करने जा रहे थे, उस समय डबलिन पुलिस का एक लम्बा चौड़ा सिपाही कुछ दूर तक उनके साथ साथ गया। परन्तु वह समझ न सका कि यह कौन शख्स है और कहाँ किस उद्देश्य से जा रहा है। यद्यपि अधिकारी बड़े सतर्क थे किन्तु जो कुछ उनकी निगाह के नीचे हो रहा था उसका अर्थ वे न समझ पाते थे। १३ दिसम्बर को जब से डी वेलरा ने न्युयार्क में अपना होटल छोड़ा, तब से अंगरेजी अधिकारियों ने कोई युक्ति उठा न रखी कि डी वेलरा आयरलैंड में प्रवेश न करने पाये। सारे बन्दरगाहों की बड़ी कड़ी निगरानी होती थी। संयुक्तराज्य अमेरिका से आने वाले जहाजों पर जा कर हथियार बन्द सरकारी सैनिक खूब गहरी तलाशी लेते थे। किन्तु यह सब होते हुए भी वह चुपचाप आगया और उपर्युक्त तिथिपर अपने नियत स्थान पर पहुँच गया।

यद्यपि अमेरिका में उसे बहुत कुछ सफलता प्राप्त हुई थी और मुख्य प्रश्न के विषय में उसने आयरिश प्रजातंत्र की सत्ता को करीब करीब मनवा भी लिया था, केवल शिष्ट परिषद् की ओर से अन्तिम स्वीकृति शेष रह गई थी, किन्तु जब उसने देखा कि स्वदेश की वर्तमान अवस्था में उसका वहाँ होना परमावश्यक है, तब उसने आयरलैंड को लौटने में तनिक भी विलम्ब न किया। दिसम्बर मास के आरम्भ से मिस्टर लायड जार्ज

घुमाफिरा कर सुलह की बात चीत कर रहे थे। उन्हीं के संकेत से आर्क बिशप क्लून और अन्य सज्जन सीनफीन नेताओं का मत जानने के लिए आयरिश राजधानी गये थे। क्षणिक संधि लगभग हो गई थी कि मिस्टर 'बोनरला' के कहने पर हथियारों को समर्पित करने की माँग पेश की गई। परन्तु आयरिश प्रजातन्त्र की सेना ने इस माँग को स्वीकार करने से एकदम साफ इन्कार कर दिया। अंगरेजों का कहना यह है कि उन्होंने सीनफीन दल को कुछ डांवांडोल देखा था, इसलिए यह मांग पेश की थी। प्रधानमंत्री को इस बात पर शोक हुआ कि उसने अनुदारों की सलाह को मानकर अपने मूल प्रस्तावों पर अमल न करके भूल की। जो सन्धि चर्चा चल रही थी उससे कहीं आपस में फूट न पैदा हो जाय, इसको अनुभव करके और यह भी देखकर कि सन्धिचर्चा के साथ ही साथ घोर दमन भी हो रहा था, डी वेलरा ने निश्चय किया कि उसका आयरलैंड में होना अनिवार्य है। क्योंकि उसे डर था कि कहीं आयरलैंड की हार न हो जाय या निकम्मी संधि न कर ली जाय। अतएव अपने देशवासियों का नेतृत्व ग्रहण करने के लिये वह अतलान्तक महासागर पार करके शीघ्र ही अपने देश में पहुँच गया।

उसका आयरलैंड पहुँचना बिल्कुल ही उचित समय पर हुआ क्योंकि इस समय जैसी घनघोर लड़ाई चल रही थी, वैसी आज तक नहीं हुई थी और न अब तक लोगों को ऐसे प्रोत्साहन की आवश्यकता पड़ी थी, जो उसकी उपस्थिति ने उन्हें प्रदान किया। फ्रांस से लौटे हुए अंगरेजी सैनिकों के झुण्ड के झुण्ड इस देश के ऊपर खुले छोड़ दिये गये थे और देश के कुछ उत्तमोत्तम जीव बलिदान भी कर दिये गये थे। यद्यपि समय

अन्धकार से आच्छादित था किन्तु डी वेलरा के प्रति लोगों के विश्वास ने परीक्षा के समय उनकी बड़ी सहायता की और पराजय को विजय में परिवर्तित कर दिया । आयरिश जनता के प्रति अपने सन्देश में उसने कहा:—

"ऐसा कोई भी नीच व्यक्ति न होगा जो उस महान् कार्य को त्याग दे जिसके लिए हमारी उच्चतम आत्माओं ने अपनी भेंट चढ़ाई है । यद्यपि यह समय अन्धकार-मय है और संसार हमारी अवहेलना कर रहा है, किन्तु हमें अपनी अन्तिम विजय में विश्वास है । अतएव हमें गम्भीरता पूर्वक विचार करके प्रजातंत्र के दूसरे वर्ष का सामना करना चाहिए और आनेवाली सन्तानों के लिए स्थायी शान्ति और उनकी जन्म-भूमि की स्वतंत्रता प्राप्त करने के निमित्त आवश्यकीय कष्ट सहन करने को तैयार रहना चाहिए।"

आगामी छः महीनों में प्रतिदिन युद्ध भयंकर ही होता गया । छोटी छोटी लड़ाइयों और आक्रमणों के स्थान पर डटकर मोर्चेबन्दी की लड़ाइयां हुई । जितना ही अधिक अंगरेजी सरकार का आतंकवाद बढ़ता गया, उतनी ही दृढ़ता के साथ आयरिश प्रजातंत्र की सेना (I. R. A.) आत्म रक्षा के उपाय करती रही । अंगरेजी कमान्डर-इन-चीफ की प्रत्येक नई चाल का आयरिश सेना द्वारा अधिक उच्चकोटि की चाल से उत्तर दिया जाता रहा । इस बात को हाउस आफ कामन्स में अंगरेजी मन्त्रिमण्डल के एक सदस्य ने स्वीकार भी कर लिया था ।

"पार्टिशन कानून" के अनुसार पहला चुनाव मई मास में हुआ । चुनाव के पहले सीनफीन दल में, अंगरेजी एजन्टों मतानुसार, जो कुछ भी डांवाडोल स्थिति उन्हें दिखलाई देती थी, वह अब बिल्कुल लुप्त सी दिखलाई पड़ने लगी, क्योंकि चुनाव

का परिणाम यह हुआ कि प्रजातंत्र पार्टी को अद्भुत विजय प्राप्त हुई।

उत्तरीय पार्लीमेंट के चुनाव के पहले डी वेलरा 'सर जेम्स क्रेग' से मिला और बात चीत की, परंतु परिणाम कुछ नहीं निकला। परिणाम की कुछ आशा भी नहीं थी, क्योंकि अल्सटर के प्राटेस्टेण्टों को धर्मान्धता और उनके राजनीतिक विचार उभारे गये थे। डी वेलरा ने अल्सटर निवासियों के नाम एक अपील प्रकाशित की और उनसे प्रार्थना की कि "राजनीतिज्ञों के विचार से आयरलैंड का प्रश्न हल नहीं हो सकता। किन्तु यदि तुम चाहो तो यह प्रश्न कुछ घंटों ही में हल हो सकता है। कल वोट देते समय इस बात का ध्यान रखो कि ऐसा न हो कि जिससे गृह-कलह उत्पन्न हो। ऐसे प्रयत्न करो की आपस की फूट मिट जाय। अपने उदाहरण से संसार का नेतृत्व ग्रहण करो। जनता की वास्तविक शांति स्थापित करो। एक संयुक्त आयरलैंड को उत्पन्न करके इतिहास में अमर बना जाओ। संयुक्त आयरलैंड ही शान्तिमय, स्मृद्धशाली और सुखी हो सकता है।" किन्तु इस प्रार्थना का भी वांच्छित परिणाम न निकला।

अब स्थिति ऐसी उत्पन्न हो गई थी और अंगरेजी सरकार के लिए अवस्था ऐसी गंम्भीर बन गई थी कि मिस्टर लायड जार्ज को मजबूर होना पड़ा कि वह सादे सीधे स्वयं आयरिश नेता से बात चीत आरम्भ करें। छः प्रान्तों की पार्लिमेंट का 'बेलफास्ट' में २२ जून को उद्घाटन करते समय बादशाह ने अपने व्याख्यान में शान्ति की इच्छा प्रगट की। इस प्रकार एक अवसर मिल गया। अतएव मिस्टर लायड जार्ज ने डी वेलरा के नाम निम्न लिखित पत्र लिखा:—

"श्री मन्—ब्रिटिश गवर्नमेंट बहुत चिन्तित है और यथा

शक्ति विश्वास दिलाती है कि आयरलैंड के साथ मेल मिलाप करने की बादशाह ने जो अपील की है, वह उसे व्यर्थ न होने देगी। ऐसा न हो कि आयरलैंड से समझौता करने का एक और अवसर हाथ से जाता रहे, वह अपना कर्तव्य समझती है और बादशाह के शब्दों का भावार्थ लेकर वह एक अन्तिम प्रार्थना करती है कि सरकारी कर्मचारियों और दक्षिणी तथा उत्तरीय आयरलैंड के प्रतिनिधियों की एक कान्फरेन्स हो। इस लिए दक्षिण आयरलैंड के निर्वाचित नेता के रूप में आप को और उत्तरीय आयरलैंड की ओर से सर जेम्सक्रेग को निम्न लिखित निमंत्रण भेजता हूं:—

(१) आप सर जेम्सक्रेग के साथ यहां लंडन में एक कान्फरेन्स में उपस्थित हों और समझौते के यथा सम्भव समस्त मार्ग खोज निकालें।

(२) इस कार्य के लिए जिस किसी को भी आप अपना सहकारी चुनें, उसे आप अपने साथ लेते आवें। जो लोग कान्फरेन्स में भाग लेने के लिए चुने जांयगे उन्हें सही सलामती से पहुंचा देना गवर्नमेंट का कर्तव्य होगा।

इस निमंत्रण को हम इस सदेच्छा से भेजते हैं कि वह हानिकारक संघर्ष समाप्त हो जाय जो शताब्दियों से आयरलैंड को विभाजित किये हुए है और इन दोनों द्वीपों के लोगों के सम्बन्ध में कटुता बनाये हुए है। इन द्वीप द्वय के लोगों को पड़ोसियों से मेल मिलाप के साथ रहना चाहिए। इनके आपस के सहयोग से केवल साम्राज्य ही का भला न होगा बल्कि मनुष्य मात्र को लाभ पहुंचेगा। हम चाहते हैं कि बादशाह की प्रार्थना को कार्यान्वित करने के लिए हमारी ओर से कोई प्रयत्न न उठा रखा जाय। हम आप से उसी मेल मिलाप की, सद्भावना से मिलने की प्रार्थना करते हैं,

जिसकी सम्राट ने अपील की है। हम भी आपसे उसी भावना के साथ मिलेंगे।

"डी लायड जार्ज"

इसका उत्तर डी वेलरा ने यह दिया:—

"श्री मन्

मुझे आपका पत्र मिला। हमारे राष्ट्र के जो मुख्य प्रतिनिधि प्राप्त हो सकते हैं, उनसे मैं परामर्श कर रहा हूँ। हमारी प्रबल इच्छा है कि इन दोनों द्वीपों के लोगों में स्थायी शान्ति स्थापित होने में हम सहायक हों। किन्तु उस तक पहुँचने का हमे कोई मार्ग नहीं दिखलाई देता, जब तक आयरलैंड की आवश्यक एकता से आपको इन्कार है और राष्ट्रीय स्वायत्त शासन के सिद्धान्त को आप नहीं मानते। आपके पत्र का विस्तृत उत्तर देने के पहले, मैं उस देश के राजनीतिक अल्प संख्यकों के प्रतिनिधियों से मिलने का प्रयत्न कर रहा हूँ।"

"ईमन डी वेलरा
मेन्शन हउस, डबलिन"

इसके पश्चात् डी वेलरा ने निम्न लिखित पत्र 'सरजेम्सक्रेग अर्ल मिडिलटन, सर डाकेल, सर उड और मि० जेम्सन को लिखा:—

"प्रियवर

आयरिश राष्ट्र के प्रतिनिधि के रूप में जो पत्र मैं मिस्टर लायड जार्ज को लिखने वाला हूँ उस का प्रभाव इस देश के राज-नीतिक अल्प संख्यकों के जीवन और भाग्य पर उतना ही पड़ेगा जितना कि बहु संख्यकों के जीवन पर। अतएव इस उत्तर को भेजने के पहले मैं आप से परामर्श कर लेना चाहता हूँ

और सीधे सीधे आप से अपने उन भाइयों का मत जान लेना चाहता हूँ जिनके आप प्रतिनिधि हैं। मुझे विश्वास है कि आप आयरलैंड के प्रति इस सेवा से इन्कार न करेंगे। मैं आगामी सोमवार को ११ बजे मेन्शन हाउस, डबलिन, में इस आशा से आपकी प्रतीक्षा करूँगा कि आप आने का कष्ट उठावेंगे।

'ईमन डी वेलरा'

"सर जेम्स क्रेग ने डबलिन की इस कान्फरेन्स में उपस्थित होने से इन्कार कर दिया। किन्तु उन्होंने लण्डन के लिए मिस्टर लायड जार्ज का निमंत्रण स्वीकार कर लिया और वहीं डी वेलरा से भेंट करने के लिए प्रस्तुत हुए। अतएव डी वेलरा ने उन्हें निम्न लिखित पत्र लिखा:—

"श्री मन्

मुझे बड़ा खेद है कि आप सोमवार को यहाँ कान्फरेन्स के लिए नहीं आ सकते। मिस्टर लायड जार्ज के प्रस्ताव को, उसके विस्तृत प्रभाव के कारण, वर्तमान स्वरूप में मानना असम्भव है। आयरिश राजनीतिक भेद भावों को इसी देस में निपटा लेना चाहिए और मुझे बिश्वास है कि वे यहीं निपट भी सकते हैं। यह प्रकट है कि ग्रेट ब्रिटन और आयरलैंड में शान्ति स्थापन की बात चीत करते हुए आयरलैंड के प्रतिनिधियों में मत भेद नहीं होना चाहिए किन्तु उन्हें किसी एक सर्वमान्य सिद्धान्त पर एक मत हो कर कार्य करना चाहिए।"

"ईमन डी वेलरा"

सर्व श्री डी वेलरा, ग्रिफिथ और यूनियनिस्ट प्रतिनिधियों में अन्तिम कान्फरेन्स शुक्रवार ८ जुलाई को मेन्शन हाउस में हुई। और मिस्टर लायड जार्ज से पत्र व्यवहार के फल स्वरूप सोमवार

११ जुलाई के १२ बजे दोपहर से लड़ाई का बन्द होना निश्चित हो गया। उस शाम को लण्डन की कान्फरेन्स का निमंत्रण डी वेलरा ने निम्न लिखित शब्दों में स्वीकार कर लिया।:—

१० डउनिंग स्ट्रीट, लण्डन
"सम्मान नीय डेविड लायड जार्ज,

श्री मन्

ब्रिटश सरकार की ओर से आपने जो इच्छा प्रकट की है कि इन दोनों द्वीपों के लोगों के शताब्दियों के झगड़े को आप समाप्त करना चाहते हैं और उन में पड़ोसियों के से मेल मिलाप का सम्बन्ध भी स्थापित करना चाहते हैं, यही हार्दिक इच्छा आयरलैंड की जनता की भी है। मैंने अपने साथियों से परामर्श कर लिया है और आपके निमंत्रण के सम्बन्ध में अपने राष्ट्र के अल्प संख्यकों के प्रतिनिधियों के विचार भी जान लिये हैं। उत्तर में मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ कि मैं आप से मिलने और वाद विवाद करने के लिए तैयार हूँ कि जिस प्रकार की कान्फरेन्स का प्रस्ताव आपने किया है, वह किस आधार पर की जाय ताकि उससे प्रस्तावित उद्देश्य सफल होने की आशा हो।"

"मैं हूँ, श्रीमन्, आपका विश्वसनीय
ईमन डी वेलरा।"

शनिवार के दिन डी वेलरा ने निम्न लिखित घोषणा प्रकाशित की:—

नागरिक भ्राताओ,

क्षणिक सन्धि के समय में प्रत्येक सैनिक और नागरिक अपने आपको राष्ट्र की प्रतिष्ठा का संरक्षक समझे। आपका संगठित व्यवहार इस बात को भली प्रकार प्रमाणित कर दे कि

आपका युद्ध एक संगठित राष्ट्र का युद्ध है। जो बातचीत अब आरम्भ हुई है, उसमें आपके प्रतिनिधि भरसक प्रयत्न करेंगे कि इस युद्ध की समाप्ति न्यायोचित और शान्तिमय रूप से हो जाय, किन्तु इतिहास, और विशेष कर हमारा इतिहास, तथा निश्चित होने वाले प्रश्न का स्वरूप, आशातीत विश्वास के विरुद्ध हमारे लिए एक सूचना है।

यदि अब भी आवश्यकता हो, तो हर प्रकार के कष्टों को झेलने के लिए दृढ़ता पूर्वक डटे रहना और उसी प्रकार का साहस प्रदर्शित करना जैसा कि अभी हाल में आपने अपने कष्ट सहन करने में प्रकट किया था—केवल यही आपको उस शान्ति की ओर ले जायगा जिसके आप इच्छुक हैं। यदि हमारे राष्ट्र के विरुद्ध फिर भी पशुबल का प्रयोग हो, तो आपको उसका सामना करने के लिए एक बार और तैयार रहना चाहिए। केवल इसी उपाय से आप पशुबल का अन्त कर सकेंगे और न्याय तथा विवेक को निर्णायक बना सकेंगे।

९ जुलाई १९२१ ईमन डी वेलरा

सर्व श्री लायडजार्ज और डी वेलरा की भेंट १० डाउनिङ्ग स्ट्रीट में वृहस्पतिवार १४ जुलाई, शुक्रवार १५ जुलाई, सोमवार १८ जुलाई और वृहस्पतिवार २१ जुलाई को हुई। प्रत्येक अवसर पर एक घण्टे से लेकर ढाई घण्टे तक बात चीत हुई। वृहस्पतिवार को एक मत से निम्नलिखित सरकारी सूचना प्रकाशित हुई:—

"मिस्टर लायडजार्ज और मिस्टर डी वेलरा में आज फिर १२-३० बजे एक घण्टे तक बातचीत हुई। बाकायदा कान्फरेन्स के लिए अब तक कोई मूलाधार नहीं निश्चित हो सका। मिस्टर

डी वेलरा कल आयरलैंड लौट जायेंगे और अपने मित्रों से परामर्श करके मिस्टर लायडजार्ज से फिर लिखा पढ़ी करेंगे।"

इसके एक रोज पहले २० जुलाई को मिस्टर लायडजार्ज ने आयरिश समझौते के लिए निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किये :—

ब्रिटिश गवर्नमेंट की यह हार्दिक इच्छा है कि ग्रेटब्रिटेन और आयरलैंड में जो दुखजनक भेद भाव हैं उनका अन्त कर दे। इन भेद भावों ही के कारण भूतकाल में बहुत से संघर्ष हुए हैं और वर्तमान काल में भी इन्हीं के सबब से एक बार फिर आयरलैंड की शान्ति और स्मृद्धि छिन्न भिन्न हो गई है। पिछले मास आयरलैंड में सम्राट का जो शुभ भाषण हुआ था उसके शब्दों में सरकार की यह इच्छा है कि "पीढ़ियों के पुराने आयरिश प्रश्न, जिन्होंने वर्षों हमारे पूर्व पुरुषों को परेशान किया और जो अब भी हमारे हृदय पर पत्थर सा धरा है, उनका सन्तोष-जनक निर्णय कर दिया जाय। सरकार की यह भी इच्छा है कि "प्रत्येक आयरिश पुरुष, उसका धर्म कुछ भी हो और वह किसी भी स्थान का निवासी हो, ब्रिटिश साम्राज्य के स्वतंत्र समुदायों से मिल जुलकर सहयोग करे।" इस इच्छा की पूर्ति के लिये वे भरसक प्रयत्न करेंगे।

सरकार को विश्वास है कि साम्राज्य के अन्दर जिस प्रकार अनेक और भिन्न भिन्न जातियां सम्राट के सिंहासन के प्रति राजभक्ति में सम्मिलित हैं, उसी प्रकार रहकर आयरिश जनता अपने राजनीतिक और अध्यात्मिक आदर्शों को पूर्णतया प्राप्त करेगी। इस उद्देश्य की पूर्ति से ग्रेटब्रिटेन, आयरलैंड और सारे साम्राज्य ही को लाभ न पहुँचेगा किन्तु समस्त संसार की शान्ति

और ऐक्य को प्रोत्साहन मिलेगा । भूमण्डल के जिस भाग में भी आयरिश लोग बसते हैं वहीं हमारी दुखदाई पुरानी कलह मौजूद है । उन विभागों में से प्रत्येक की दृष्टि ब्रिटिश सरकार और आयरिश नेताओं के इस सम्मेलन की ओर लगी हुई है कि किस प्रकार ये पुराने झगड़े नई समझ के साथ समस्त सम्बन्धित लोगों के लिए, सम्मान पूर्वक और सन्तोष जनक रीति से तय हो जायें ।

ब्रिटिश साम्राज्य में जिन स्वतंत्र राष्ट्रों का समावेश है वे अनेक जातियों के हैं, जिनके इतिहास, परम्परा और आदर्श भिन्न भिन्न हैं । केनाडा के उपनिवेश Dominion में ब्रिटिश और फ्रान्स अपने उन प्राचीन कटु झगड़ों को भूल गये हैं जो उनके पूर्वजों को पृथक् पृथक् किये हुए थे । दक्षिण अफ्रीका में ट्रान्सवाल के प्रजातंत्र और आरेंज स्वतंत्र राष्ट्र ने दो अंगरेजी उपनिवेशों के साथ मिलकर सम्राट के अधीन एक घरू शासन करने वाली बड़ी यूनियन बना ली है ।

ब्रिटिश जनता को यह विश्वास नहीं हो सकता कि केनाडा और दक्षिण अफ्रीका, जहां की कठिनाई कुछ अधिक ही थीं, जब भली प्रकार सफल हो गये हैं, तब आयरलैंड असफल रहेगा । और जहां तक उसका सम्बन्ध है वह विश्वास दिलाती है कि उसने निश्चय कर लिया है कि वह आयरिश स्वतंत्र राष्ट्र बनाने के लिए अयरिश राजनीतिज्ञों को संगठित हो कर साम्राज्य के अन्य लोगों के साथ सहयोग करने में किसी प्रकार की भी बाधा न उपस्थित होने देगी ।

इन विचारों से प्रभावित होकर ब्रिटिश गवर्नमेंट आयरलैंड को निमंत्रित करती है कि वह सम्राट के अधीन अन्य स्वतंत्र राष्ट्रों के महा सम्मेलन में अपना स्थान ग्रहण करे । पुराने

झगड़ों को मिटाने और आयरलैंड को अपनी शक्ति तथा आशा के अनुकूल भविष्य का सामना करने के योग्य बनाने की सदेच्छा से सरकार यह प्रस्ताव करती है कि आयरलैंड तुरन्त एक औपनिवेशिक स्वराज्य का पद ग्रहण कर ले। इस विवरण पत्रिका में जो शक्ति तथा अधिकार लिखे हुए हैं वे सब उसे प्राप्त हो जायँगे। आयरलैण्ड के औपनिवेशिक स्वराज्य प्राप्त करने का अर्थ यह है कि कर लगाने और अर्थ के प्रबन्ध में उसे पूर्ण स्वतंत्रता होगी; उसे अपने न्यायालय और न्यायाधीश रखने का अधिकार होगा; अपने देश की आन्तरिक रक्षा करने के लिए वह अपनी सेना रखेगा और अपने कान्सिटेबल और पुलिस का संगठन करेगा; आयरिश डाक विभाग और उससे सम्बन्ध रखने वाले समस्त कार्य्यों को अधिकार में ले लेगा; शिक्षा, भू भाग, कृषि, खान और खनिज पदार्थ, जंगल, जनता के लिए ग्रहनिर्माण, मजदूर संगठन, बेकारी विभाग, आयात निर्यात Transport व्यापार स्वास्थ्य, बीमा और नशीली वस्तुओं की आमद-रफ्त, आदि पर उसका पूर्ण प्रभुत्व होगा, अर्थात् उसे वे सारी शक्तियाँ और विशेषाधिकार प्राप्त हो जावेंगे जिन पर स्व-शासन करने वाले उपनिवेशों को स्वतंत्रता प्राप्त है; केवल आगे लिखे हुए प्रतिबन्ध रहेंगे। उपर्युक्त कार्यों में स्वतंत्रता होने के साथ इस बात की गेरेन्टी भी दी जाती है की कोई विदेशी शक्ति इन अधिकारों में हस्त-क्षेप नहीं कर सकती जब तक कि वह सारे साम्राज को न ललकारे। समस्त उपनिवेश ब्रिटिश साम्राज्य के अंग होने के कारण, दूसरे समान राष्ट्रों के सम्मुख केवल अपनी निजी शक्ति ही नहीं रखते किन्तु 'कामन्वेल्थ' के समग्र राष्ट्रों की सामुहिक शक्ति और प्रभाव रखते हैं। साम्राज्य आशा करता है कि आयरलैंड इस गेरेन्टी, इस मित्रता और इस स्वतंत्रता को स्वीकार करेगा।

इस समझौते को तुरन्त कार्यान्वित करने के लिए ब्रिटिश गवर्नमेंट निम्न लिखित शर्तों के साथ तैयार है, क्योंकि उसकी राय में ये शर्तें ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड दोनों के कल्याण और रक्षा के लिए परमावश्यक हैं। कारण यह है कि ये दोनों द्वीप कामन्वेल्थ का केन्द्रस्थान या हृदय हैं

१—ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड के समान हितों का विचार कर के यह दोनों का कर्तव्य होगा कि जल और थल से आपस में एक दूसरे की रक्षा करना स्वीकार करें। ग्रेट ब्रिटेन का निर्वाह समुद्र-मार्ग द्वारा प्राप्त भोजन पर होता है, समुद्र-मार्ग की स्वतंत्रता पर ही उसका सारा सम्बन्ध निर्भर है। आयरलैंड ब्रिटेन की बग़ल में, उसके उत्तरी और दक्षिणी समुद्र-मार्ग में स्थिति है, जो उसे साम्राज्य के सम्पर्कीय देशों से, संसार के बाजारों से और उसके भोजन प्राप्त करने के आवश्यकीय स्थानों से सम्बन्धित करते हैं। इस बात को स्वीकार करके, जिसे प्रकृति ने बनाया है और जिसे कोई राजनीतिज्ञ बदल नहीं सकता, यह आवश्यक प्रतीत होता है कि आयरलैंड और ग्रेट ब्रिटेन की चारों ओर के समुद्रों पर केवल शाही बेड़ों का प्रभुत्व रहे। आयरलैंड के समुद्री किनारे पर और बन्दरगाहों पर आयरिश राज्य उसे ऐसे अधिकार और ऐसी स्वाधीनता दे दे जो जहाजी कामों के लिए आवश्यक हैं।

२— अस्त्र-शस्त्र को सीमित करने का जो आन्दोलन संसार में आगे को ओर चल रहा है उसमें किसी प्रकार की रुकावट न पैदा हो, इस बात को दृष्टि में रखते हुए, यह विचार किया जाता है कि आयरलैण्ड अभी 'टेरीटोरियल' सेना की संख्या एक निश्चित सीमा के अन्दर, इन द्वीपों के अन्य भागों की सैनिक संख्या के अनुकूल, ही बना ले।

३—सैनिक और नागरिक हवाई कार्यों के लिए भी आयरलैण्ड की स्थिति एक विशेष स्थान रखती है। शाही हवाई सेना को अपने सेवा कार्य के लिए कुछ सुगमताओं की आवश्यकता होगी। उत्तरी अमेरिका और ब्रिटिश द्वीपों के हवाई मार्ग की शृंखला की उन्नति में आयरलैण्ड एक आवश्यक कड़ी का काम करेगा। अतएव यह निश्चित किया जाता है कि ग्रेटब्रिटेन को हवाई रक्षा और उसके सम्बन्ध की उन्नति के लिए सारी आवश्यक सुगमताएं उसे मिलें।

४ ग्रेटब्रिटेन आशा करता है कि आयरलैण्ड स्वेच्छा से, उचित समय में, साम्राज्य के जहाज़ी, फौजी और हवाई स्थायी सेना के लिए अपनी आर्थिक स्थिति अनुसार कुछ धन दिया करेगा। यह भी समझा जाता है कि इन सेनाओं में स्वेच्छा से भर्ती होने वालों को सारे आयरलैण्ड में आज्ञा रहेगी, विशेष कर उन प्रसिद्ध आयरिश रेजीमेन्टों के लिए जिन्हों ने अब तक बड़ी वीरता से संसार के समस्त भागों में सम्राट की सेवा की है।

५ यद्यपि कर लगाने और अर्थ सम्बन्धी बातों में आयरिश जनता को पूर्ण स्वतंत्रता होगी, किन्तु दोनो द्वीपों के प्राचीन भेद भावों को मिटाना और प्रतिद्वन्द्वी तथा हानिकारक व्यापारिक युद्ध को रोकना परमावश्यक है। इस अभिप्राय को दृष्टि में रख कर ब्रिटिश और आयरिश सरकारें इस बात पर एक मत होंगी कि इन दोनों टापुओं के आपस के व्यापार और आमदरफ़्त पर आपस में किसी प्रकार का संरक्षक कर या अन्य रुकावटें न लगाई जांयगी।

६—'युनाइटेड किंगडम' के वर्तमान ऋण के एक भाग के लिए आयरिश जनता उत्तर दायी होगी और महासमर से उत्पन्न होने वाली पेन्शनों का भी उत्तर दायित्व उसको ग्रहण

करना होगा। यदि दोनों सरकारों में आपस में यह निश्चित न हो सके कि कितना भाग देना चाहिए, तो उसको निश्चित करने के लिए सम्राट के उपनिवेशों में से कोई स्वतंत्र पंच मुकर्रर किया जायगा।

इन सिद्धान्तों के अनुसार ब्रिटिश गवर्नमेंट प्रस्ताव करती है कि ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड के समझौते की शर्तें एक संधि पत्र में लिखी जाँयगी जिसको यथा समय ब्रिटिश और आयरिश पार्लिमेंटों द्वारा स्वीकार किया जायगा।

हमारी सरकार आशा करती है कि पुराना झगड़ा तुरन्त समाप्त हो जायेगा, ताकि आयरिश परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुसार विवरण सहित समझौते का मार्ग साफ हो जाय और इस प्रकार आयरिश देश भक्ति और समस्त साम्राज्य के विस्तृत समुदाय में जिनका उद्देश्य और हित एक ही है, एक नवीन और आनन्द दायक सम्बन्ध स्थापित हो जाये।

इस समझौते का रूप बहुत कुछ स्वयं आयरलैंड पर निर्भर है। उसमें पार्लिमेंट के वर्तमान विशेषाधिकारों तथा शक्तियों को पूर्ण रूप से स्वीकार करना होगा और उत्तरी गवर्नमेंट को भी मानना पड़ेगा क्योंकि विना उसकी स्वीकृति के उनके अधिकार छीने नहीं जा सकते। अपनी ओर से ब्रिटिश गवर्मेंट पूर्ण आशा करती है कि समस्त आयरलैंड इस बात को स्वीकार करेगा कि आयरलैंड के प्रत्येक समुदाय और पंथ के लोगों को एक साथ मिलकर सहयोग के साथ काम करने की आवश्यकता है। ब्रिटिश सरकार उस शुभ दिन का स्वागत करेगी जब इस प्रकार की एकता प्राप्त होगी, किन्तु बल के द्वारा कोई भी सम्मिलित काम नहीं हो सकता।

केनाडा के प्रान्तों की स्वतंत्र रज़ामन्दी से एकता उत्पन्न हुई; ऐसा ही आस्ट्रेलिया में हुआ, और ऐसा ही दक्षिण अफ्रीका में भी। आयरलैण्ड में भी ऐक्य सिवा रज़ामन्दी के और किसी प्रकार से नहीं हो सकता। उन शर्तों पर कोई वास्तविक समझौता नहीं हो सकता, जिन में एक ओर से या दूसरी ओर से रक्तपात और पशु-बल को प्रोत्साहित किया जाता है। सारे समझदार मनुष्य इस रक्तपात और पशु-बल का अन्त करना चाहते हैं। जहां तक ब्रिटिश गवर्नमेंट का सम्बन्ध है वह ऐसी कोई भी शर्त मान लेगी, जिसपर सारा आयरलैंड एक मत होगा। किन्तु ऐसी कोई शर्त, किसी भी दशा में स्वीकार नहीं करेगी, जिससे आयरलैंड में गृह-युद्ध की आग भड़के। इस गृह-युद्ध का प्रभाव केवल आयरलैंड ही तक नहीं सामिल होगा, किन्तु उसमें सम्मिलित होने के लिये ग्रेटब्रिटेन तथा साम्राज्य के अन्य भागों से भी पक्ष विपक्ष के लोग दौड़ेंगे। इससे न तो आयरलैंड का कल्याण होगा और न साम्राज्य का, बल्कि पिछले मास में जिस भयंकर युद्ध की शान्ति हुई है उससे भी अधिक भयावह आग भड़केगी। सारे साम्राज्य के अन्दर वह प्रबल इच्छा है कि पशु-बल का समय समाप्त होना चाहिए और आयरलैंड के समस्त भागों के हितों और आदर्शों को ध्यान में रखते हुए ऐसा यत्न ढूंढ निकालना चाहिए कि जिससे वह ब्रिटिश राष्ट्र समूह का अपनी इच्छा से सहयोग करने वाला साझीदार बन जाय।

अतएव ब्रिटिश गवर्नमेंट इस बात को स्वयं आयरलैण्ड निवासियों ही पर छोड़ देगी, कि वे आपस में बातचीत करके निश्चय करें कि नये सुलहनामे के अनुसार जो नवीन अधिकार प्राप्त होंगे उन्हें आयरलैण्ड सम्मिलित रूप से ग्रहण करेगा और

एक आयरिश संस्था के द्वारा शासन करेगा अथवा उत्तरीय और दक्षिणी आयरलैण्ड उन्हें पृथक् पृथक् प्राप्त करेगा और क्या दोनों के समान हितों को एक सूत्र में बांधने के लिए कोई एक सम्मिलित शक्ति होगी या नहीं ? अगर आयरिश लोग चाहेंगे, तो ब्रिटिश गवर्नमेंट इस प्रकार को आपस की बातचीत में बड़ी प्रसन्नता से सहायता करेगी।

इन प्रस्तावों से ब्रिटिश गवर्नमेंट को हार्दिक विश्वास है कि वे उस प्राचीन घृणा और अविश्वास का मूलोच्छेद कर देंगे जिसने हम दोनों के इतिहासों को शताब्दियों तक कलंकित किया है। राष्ट्र-समूह के भीतर आयरलैण्ड का भविष्य बनाना आयर-लैण्ड निवासियों के हाथ में है। उपर्युक्त प्रस्तावों में ब्रिटिश गवर्नमेंट ने समझौते की मोटी मोटी बातों के अतिरिक्त और कुछ नहीं कहा। विवरण की बात उन्होंने उस वादविवाद के लिए छोड़ दी है जो उस समय होगा जब कि आयरिश जनता समझौते के सिद्धान्त को स्वीकार करने के लिए अपनी इच्छा प्रगट करेगी।

डेल एरन के मंत्रिमण्डल की ओर से १० अगस्त को डी वेलरा ने यह उत्तर भेजा:—

श्रीमन्,

अपनी पिछली मुलाकात के अवसर पर मैंने अपना यह निश्चय प्रकट किया था कि आपनी सरकार के २० जुलाई का मसविदे (drsaft) में लिखे हुए जो प्रस्ताव आप ने मुझे दिये थे उन्हें डेल एरन स्वीकार नहीं कर सकती और न आयरिश जनता उन्हें मानेगी। अपने साथियों से मशविरा करके और उनके साथ इन प्रस्तावों पर गम्भीर विचार करने के पश्चात् अब

म पुनः अपने निश्चय को पक्का करता हूं। आपके दिये हुए मसविदे में स्वयं विरोधी बातें हैं और "समझौते के सिद्धान्त" का निश्चय करना सरल नहीं है। जहां तक उसमें यह बात है कि वह आयरलैण्ड की पृथक् राष्ट्रीयता को स्वीकार करता है और उसके स्वभाग्य निर्णय के अधिकार को मानता है, हम उस की क़दर करते हैं और उसे मंजूर करते हैं।

किन्तु आवश्यकीय विषयों से सम्बन्ध रखने वाली शर्तें और दूसरे विचार उस सिद्धान्त को ठुकराते हैं और आपकी गवर्नमेंट हमारे मामलों में हस्तक्षेप करने तथा हमारे कामों पर अपना प्रभुत्व रखने का अधिकार पेश करती है, उसे हम स्वीकार नहीं कर सकते।

आयरलैंड अपने स्वभाग्य निर्णय का कौन सा मार्ग ग्रहण करेगा, इस अधिकार को अक्षुण्ण रूप से मानना परमावश्यक है। यह वह अधिकार है जो शताब्दियों के दमन होने पर भी स्थिर रहा है। इसके लिए अद्वितीय बलिदान हुआ है और अकथनीय कष्ट सहन किये गये हैं। इस अधिकार को समर्पित नहीं किया जा सकता। इसमें हम किसी प्रकार की वाधा नहीं आने देना चाहते। अपने स्वार्थ साधन के लिए इस अधिकार का प्रयोग करने में हस्तक्षेप करने का अधिकार न तो ब्रिटेन को है और न किसी अन्य विदेशी राष्ट्र या राष्ट्र समूहों को है।

आयरलैंड की जनता का विश्वास है कि साम्राज्यिक सम्बन्धों से अलग रह कर राजनीतिक पार्थक्य में ही आयरिश राष्ट्र का भाग्य उत्तम रूप से बनाया जा सकता है। साम्राज्य के गोरख धन्धों में पड़ कर आयरलैंड को ऐसे कार्य करने पड़ेंगे

जो उसके जातीय चरित्र के प्रतिकूल हैं और उसके आदर्शों के नाशक है। इससे विनाशकारी युद्ध कुचलने वाले भार, सामाजिक असन्तोष, और साधारण बेचैनी तथा कष्ट उत्पन्न होंगे। यूरोप के अन्य छोटे राष्ट्रों की तरह, नैतिक अधिकार पर, आयरिश जनता अपनी स्वतंत्रता की बाज़ी लगा सकती है। वे किसी जाति पर आक्रमण करना नहीं चाहते, इस लिए उन्हें विश्वास है कि वे स्वयं दूसरों के आक्रमणों से मुक्त रहेंगे।

कई बार प्रजा का मत लेकर उन्होंने इस नीति को घोषित किया है। दूसरी कोई भी नीति इससे जितनी दूर होगी, वह उतनाही बाहरी प्रभाव से मिश्रित होगी और बहु संख्यक जनता की इच्छाओं पर आघात करेगी।

जहां तक मेरा और मेरे साथियों का सम्बन्ध है, हमारा दृढ़ विश्वास है कि इंगलैंड के साथ सच्ची मित्रता, जिसे सैनिक दमन ने शताब्दियों से रोक रखा था, अब परस्पर के मेल से बहुत शीघ्र प्राप्त हो सकती है किन्तु पूर्ण पार्थक्य आवश्यक है। हमारा विश्वास है कि यह भय बिल्कुल निराधार है कि आयरिश देश को इंगलैंड की स्वतंत्रता पर आक्रमण करने का केन्द्र बनाया जा सकता है। इस डर को दूर करने के लिए आयरलैंड ऐसी न्याय-युक्त जिम्मेदारी (गेराण्टी) ले सकता है जो आयरिश राज्याधिकार के विरुद्ध न हों।

जो मनुष्य परिस्थिति को समझता है उसकी दृष्टि में आयरलैंड के लिए "औपनिवेशिक स्वराज्य" एक माया जाल है। अन्य ब्रिटिश उपनिवेशों को जो स्वाधीनता प्राप्त है वह कानूनों या सन्धियों का परिणाम नहीं है बल्कि वह उस दूरी के कारण है जो उन उपनिवेशो को ब्रिटेन से अलग किये हुए है और इंगलैंड के हस्तक्षेप को असम्भव बनाये हुए है। आयरलैंड

को भी उतनी ही स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि उसे पृथक् हो जाने का अधिकार प्राप्त हो, जो उपनिवेशों का स्वीकृत अधिकार है। आप के प्रस्तावों में इस प्रकार के आश्वासन का कोई संकेत नहीं है। यह न होकर परिस्थिति बिल्कुल उलट दी गई है। हमारी भौगोलिक स्थिति को उन रुकावटों और बन्धनों का कारण बनाया गया है, जो उपनिवेशों के सम्बन्ध में सुने भी नहीं जाते। छोटा द्वीप बड़े द्वीप को सैनिक रक्षा का आश्वासन दिलाये और स्वयं एक असहाय पराधीन देश की स्थिति को ग्रहण कर ले!

यह प्रत्यक्ष है कि हम अपनी जनता से इस प्रकार के प्रस्तावों को स्वीकार करने के लिए आग्रह नहीं कर सकते। ब्रिटिश राष्ट्र समूह के साथ स्वतंत्र सम्बन्ध की संधि की हम शिफारिश कर सकते हैं और एक सरकार के रूप में पत्र व्यवहार भी कर सकते हैं तथा उत्तरदायित्व भी ले सकते हैं, यदि हमें विश्वास दिला दिया जाय कि ऐसा सम्बन्ध करने से राष्ट्र को वर्तमान विरोधी अल्प-संख्यकों की भक्ति प्राप्त हो जायगी, क्योंकि उन्हीं के भावों का विचार करके हम ऐसा करने के लिए सोच सकते हैं।

जिस संधि का सम्बन्ध पारस्परिक स्वतंत्र व्यापार से और आपस के अस्त्र-शस्त्रों की सहायता करने से है, उसके विषय में बात चीत करने के लिए हम प्रत्येक समय तैयार हैं। हमें विश्वास है कि हवाई, रेलवे तथा अन्य सम्बन्धों की सुगमता का परस्पर समझौता भी हो सकता है। हमारी ओर से उस व्यापारिक सम्बन्ध की सरलता में कोई रुकावट न डाली जायगी, जो दोनों द्वीपों के जीवन के लिए आवश्यक हैं; क्यों कि वे परस्पर सबसे अच्छे ग्राहक हैं और एक दूसरे के लिए उत्तम

बिक्री के स्थान हैं। हां, वास्तव में यह बात समझ लेनी चाहिए कि सारी सन्धियां और समस्त राजीनामे सब से पहले राष्ट्रीय व्यवस्थापक सभा में स्वीकृति के लिए उपस्थित किये जायेंगे और फिर समग्र आयरिश जनता के सामने ऐसी स्थिति में पेश किये जायेंगे, जिससे यह प्रत्यक्ष प्रमाणित होगा कि उनका निश्चय एक स्वतंत्र निश्चय है और उनको बाध्य करने के लिए कोई भी सैनिक बल सर पर न रहेगा।

यह प्रश्न कि युनाइटेड किंगडम के वर्तमान ऋण में आयरलैंड का कितना भाग होगा, हम चाहते हैं कि एक पंचायत द्वारा निपटाया जाय, जिसमें एक पंच आयरलैंड की ओर से हो और दूसरा ग्रेट ब्रिटिन की ओर से। तीसरा दोनों मिलकर चुन लें। यदि मत भेद के कारण वे तीसरे को न चुन सकें, तो तीसरे को संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रेसीडेन्ट अगर वह स्वीकार करें, तो मनोनीत करें।

राजनीतिक अल्प संख्यक लोगों का और बहु संख्यक आयरिश जनता का प्रश्न स्वयं आयरिश जनता ही पर निर्णय करने के लिए छोड़ दिया जाय। हम ब्रिटिश सरकार के इस अधिकार को कदापि नहीं मान सकते कि उसे अपने स्वार्थ की दृष्टि से अथवा कुछ थोड़े से लोगों के कहने से यह अधिकार प्राप्त है कि वह हमारे देश का अंग भंग कर सके। हम पशु बलके प्रयोग करने की बात को नहीं सोचते। यदि आप की गवर्नमेंट अलग हट जाय, तो हम आपस में पूर्ण रूप से मेल मिलाप कर सकते हैं।

हम आपकी इस बात से सहमत हैं कि "पशु बल के ज़ोर से कोई सम्मिलित काम नहीं हो सकता।" हमें शोक है कि जिस बुद्धिमत्ता पूर्ण और सच्चे सिद्धान्त को आपकी सरकार

हमें अपने आपसी झगड़ों के निपटाने के लिए बतलाती है वह उसको हमारे और आपने देशों के सम्बन्ध के मूल प्रश्न के लिए लागू करने के लिए इच्छुक नहीं मालूम देती। जिस सिद्धान्त को हम एक प्रश्न के लिए उपयुक्त समझते हैं, उसे दूसरे के लिए भी उचित खयाल करते हैं। परन्तु यदि इस सिद्धान्त से कोई तात्कालिक परिणाम न निकले, तो हम इस बात के लिए राज़ी हैं कि वह भी किसी बाहरी पंचायत के सिपुर्द कर दिया जाय।

इस प्रकार हम आपको वे सारी बातें मानने को तैयार हैं जो न्याय-संगत और उचित हैं। प्रतिष्ठा युक्त शान्ति को कार्य रूप में लाने और उस का प्रारम्भ करने का उत्तर दायित्व मुख्यतः आपकी सरकार पर है न कि हमारी।

न तो हम कोई शर्त लगाते हैं और न कोई दावा पेश करते हैं सिवा इस बात के कि हम धींगा धींगी और छेड़ छाड़ से मुक्त कर दिये जायँ। आपने जो पारस्परिक और स्थायी मित्रता की बात कही है, हम भी उसे अपनी ओर से उसी निस्पृहता के साथ प्रकट करते हैं, जो केवल उन भयंकर कष्टों से नापी जा सकती है जिन्हें हम लोगों ने सहन किया है। "प्राचीन कलह" जिसका आपको खेद है, उसका एक मात्र कारण, जिसे हम जानते हैं और जिसे इतिहास प्रमाणित करता है, आयरिश स्वतंत्रता पर अंगरेजी शासकों का आक्रमण है। यदि आपकी सरकार चाहे, तो ये आक्रमण तुरन्त बन्द हो सकते हैं। शान्ति और समझौते का मार्ग खुला हुआ है।

मैं हूं श्रीमन्, आपका विश्वसनीय

ईमन डी वेलरा

१३ अगस्त को मिस्टर लायड जार्ज ने निम्नलिखित दूसरा पत्र भेजा:—

आपके पत्र का प्रथम भाग हमारी वास्तविक स्थिति के इतना विरुद्ध है कि हम अपना कर्तव्य समझते हैं कि आपको अपना तात्पर्य बतला दें जिससे आपको कोई शंका न रहे। आपने लिखा है कि आप अपने साथियों से सलाह करके इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि हमारे प्रस्ताव ऐसे हैं जिन्हें डेल एरन स्वीकार नहीं कर सकती और आयरिश जनता कभी न मानेगी, आप अपने एक एक निश्चय को दोहराते हैं। आपने यह भी लिखा है कि हमारे मसौदे की बातों में विरोधाभास है और जो समझौता आपके सम्मुख उपस्थित किया गया है उस के सिद्धान्त का निश्चित करना आपके लिए सुगम नहीं है। इसलिए हम अपनी स्थिति को बिल्कुल साफ कर देना चाहते हैं।

हमारी राय में इस सैद्धान्तिक वादविवाद का अधिक बढ़ाने से कोई लाभ न होगा कि ब्रिटिश राष्ट्र-समूह के स्व-शासन करने वाले बड़े बड़े उपनिवेशों के अधिकार की अपेक्षा आप कैसा राष्ट्रीय अधिकार युक्त पद स्वीकार करेंगे। किन्तु एक बात की ओर हम आपका ध्यान दिलाना चाहते हैं जिसपर आप अधिक जोर देते हैं और ब्रिटिश सरकार कभी स्वीकार नहीं कर सकती—अर्थात् हम आयरलैंड का यह दावा स्वीकार कर लें कि उसे सम्राट की वफादारी (allegiance) से अलग होने का अधिकार है। हम इस प्रकार के अधिकार को कदापि नहीं मान सकते।

ब्रिटिशद्वीप-समूह के समीप आयरलैण्ड का होना एक भौगोलिक वास्तविकता है। दोनों द्वीपों का शताब्दियों का इतिहास, वह चाहे जैसे भी क्यों न पढ़ा जाय, इस बात का काफी प्रमाण है कि दोनों देशों का भाग्य एक साथ अभिन्न रूप से गुथा हुआ,

है। सौ वर्षों से अधिक हो चुका कि ब्रिटिश पार्लिमेंट में आयर-लैंड अपने प्रतिनिधि भेज रहा है।

इस समय के भीतर उसके हजारों ही लोग स्वेच्छा से सम्राट की सेना में भर्ती हुए हैं और बड़ी वीरता से लड़े हैं। आयरलैण्ड के समस्त प्रान्तों के बहुत से लोग राजसिंहासन के प्रति पूर्ण रूप से अनुरक्त बने हुए हैं। इन सब बातों से एक और केवल एक ही परिणाम निकलता है कि ब्रिटेन आयरलैण्ड के साथ एक पृथक और बिदेशी शक्ति के रूप में बात चीत करे।

जब आप, आयरिश राष्ट्रीय आदर्शों के निर्वाचित प्रतिनिधि के रूप में, मुझसे बातचीत करने आये थे, तब मैंने आपसे अपनी एक मात्र शर्त का जिक्र कर दिया था, और जिसके परि-णाम का भी हमारे प्रस्तावों में साफ साफ वर्णन था—कि आयरलैंड को भौगोलिक और ऐतिहासिक घटनाओं के महत्त्व को स्वीकार करना होगा।

ये ही घटनाएं ब्रिटेन और आयरलैण्ड के प्रश्न पर शासन करती हैं। यदि ये न होतीं तो वादविवाद के लिए कोई प्रश्न ही न होता।

अतएव इन घटनाओं के कारण जो शर्तें प्रयुक्त होती हैं उनके विषय में कहना यह है कि हमने उन्हें अपने पिछले प्रस्तावों के अन्दर छः पैराग्राफों में स्पष्ट रूप से रख दिया है और यहां उनके दोहराने की आवश्यकता नहीं है, सिवा इसके कि जिन प्रश्नों से केवल आयरलैण्ड और ब्रिटेन का सम्बन्ध है उनको तय कराने के लिए ब्रिटिश गवर्नमेंट किसी विदेशी शक्ति को पंच मानने के लिए राजी नहीं हो सकती।

हम आपकी इस बात को स्वीकृति से बड़े प्रसन्न हैं कि उत्तरीय आयरलैण्ड दबाकर मजबूर नहीं किया जा सकता।

यह बात बड़े मार्के की है; क्योंकि जिस प्रकार हमारी जनता ने एक ओर यह निश्चय कर लिया है कि आयरलैण्ड के एक भाग के पृथक होने के प्रयत्न का वे अपनी पूर्णशक्ति से सामना करेंगे, उतनी ही दृढ़ता के साथ उन्होंने यह भी निश्चय कर दिया है कि यदि आयरलैण्ड के दूसरे भाग को सम्राट के प्रति राजभक्ति छोड़ने के लिए दबाया जायगा, तो वे उसका भी पूर्ण मुकाबिला करेंगे। हम बड़ी प्रसन्नता से आपको विश्वास दिलाते हैं कि यदि हमारी दी हुई छः शर्तों के अन्दर दक्षिणी और उत्तरीय आयरलैंड में आयरिश एकता के लिए कोई भी समझौता होगा, तो हम उससे सहमत होंगे। हमारी शर्तें दक्षिणी और उत्तरीय आयरलैंड दोनों के लिए एक सी लागू हैं। किन्तु हम इस बात के लिए राजी नहीं हो सकते कि उत्तरीय आयरलैंड के साथ आपके सम्बन्ध के विषय को किसी विदेशी पंचायत के सुपुर्द करें।

प्रस्तावित समझौते की शर्तों की उत्पत्ति का यह कारण नहीं है कि हम किसी दूसरी जाति के लोगों पर अपनी इच्छा को बलपूर्वक ठूसना चाहते हैं। किन्तु उनकी उत्पत्ति का कारण वे वास्तविक बातें हैं जो आयरलैंड के लिए उतनी ही आवश्यक हैं जितनी कि स्वयम् हमारे लिए। उनमें आयरलैंड की प्रतिष्ठा को उपनिवेश के दर्जे से घटाने वाली कोई बात नहीं है, न उनमें आयरलैंड पर ब्रिटिश सत्ता का प्रभुत्व जमाने की कोई इच्छा है और न आयरलैंड के राष्ट्रीय आदर्शों पर किसी प्रकार का आघात ही है।

हमारे प्रस्ताव आयरलैंड की जनता के सम्मुख एक ऐसा अवसर उपस्थित करते हैं जो आज तक कभी उनके इतिहास में नहीं उदय हुआ। हमने उन्हें शान्ति प्राप्त करने की सदिच्छा

से उपस्थित किया है । किन्तु इनके आगे हम नहीं जा सकते। हमें विश्वास है कि आप उन्हें सिद्धान्त रूप से मान लेंगे। जब सिद्धान्त रूप से मानने की आप की स्वीकृति मेरे पास आ जायगी, तब मैं आपसे उनके विस्तृत प्रयोग पर वादविवाद करने में बहुत प्रसन्न होऊंगा।

डी लायडजार्ज

१६ अगस्त को 'डेलएरन' की जो मीटिंग होने वाली थी उसका खयाल करके जेल में जो डेपुटी अर्थात् सभासद थे, वे सब छोड़ दिये गये, केवल 'सीन मेककीयन' बाकी रह गये, क्योंकि उन्हें मृत्युदण्ड की सजा थी। इस प्रसिद्ध कमान्डेन्ट की वीरता और मनुष्यता ने उसे एक लोकप्रिय वीर पुरुष बना दिया था। जब डी वेलरा को सूचना मिली कि वह रोक रखा गया है, तब उसने तुरन्त यह साफ तौर पर प्रकट कर दिया कि यदि उसके रोके जाने की जिद्द की गई, तो मैं शान्तिचर्चा को आगे बढ़ाने का उत्तरदायित्व नहीं ले सकता। दूसरे दिन कमान्डेन्ट मेककीयन छोड़ दिये गये।

१६ और १७ अगस्त को 'डेलएरन' की जो मीटिंग हुई और जिसमें अंगरेजी प्रस्तावों की छान बीन हुई, उसमें शान्ति चर्चा के विषय पर डी वेलरा के दो प्रभावशाली व्याख्यान हुए। उसने आयरलैंड की न्यायोचित मांग के विरुद्ध लुटेरेपन की स्वार्थपरता और लोलुपता का दिग्दर्शन कराया। उसने उस मांग की ओर संकेत किया जिससे न केवल आयरलैंड के लिए बल्कि इंगलैंड के लिए भी वास्तविक शान्ति और सुख प्राप्त होगा। उसने ऐसे शत्रु से खूब सचेत रहने के लिए आग्रह किया जिसकी चालें वे सब अच्छी तरह जानते थे। उसने आगे आने वाले खाई खन्दकों को जतला दिया। उत्तरीय आयरलैण्ड के विषय में

वह आपस में बहुत कुछ दबने को तैयार था ताकि आयरलैंएड ऐसी स्थिति प्राप्त कर ले जिससे भविष्य में गृह-कलह के प्रश्न न उपस्थित हों। चारों ओर के प्रोत्साहित किये जाने पर उसने सारी वर्तमान स्थिति को इन शब्दों में व्यक्त किया:—

"राष्ट्र की ओर से हम इन शर्तों को न तो स्वीकार कर सकते हैं और न स्वीकार करेंगे।"

डेलएरन ने सर्व सम्मति से अंग्रेजी प्रस्तावों को ठुकरा दिया। और २४ अगस्त को निम्न लिखित उत्तर मिस्टर लायड-जार्ज के पास भेज दिया गया :—

श्रीमन्,

डेलएरन के मत के जानने के पहले ही जो उत्तर १० अगस्त को मैंने भेजा था वह निश्चय और पक्का कर दिया गया। मैंने आपकी गवनमेंट के प्रस्ताव डेलएरन के सामने रखे और सर्व सम्मति से वे अस्वीकार किये गये। आपका १३ अगस्त का पत्र यह बतलाता है कि आयरलैंड की ब्रिटेन से भौगोलिक समीपता ही इंगलैंड को बाध्य करती है कि वह आयरलैएड पर शर्त लगाये जिससे ब्रिटेन के सोचे हुए, ब्रिटिन समर नीति के हितों की दृष्ठ से, आयरलैंड का अधिकार उसके अधीन किया जाय और दूसरे उस पत्र से यह भी साफ साफ जाहिर होता है कि उस बहु काल व्यापी और निरन्तर परिश्रम को देख कर जो आयरलैंड को विदेशी सत्ता के स्वीकार करने के लिए किया गया है यह आवश्यक प्रतीत होता है कि उस सत्ता को स्वीकार करने की शर्त अब भी लगाई जाय।

हम विश्वास नहीं कर सकते कि आपकी गवर्नमेंट केवल सैनिक पशु-बल के सिद्धान्त से प्रेरित हो कर कार्य करने की इच्छा रखती है। इस सिद्धान्त से तो अन्तर्राष्ट्रीय नीतिमत्ता का

विनाश हो जायगा और संसार की शान्ति भंग हो जायगी। यदि एक छोटे राष्ट्रकी स्वतंत्रता का अधिकार उस समय लुप्त हो जायगा जब की एक अधिक शक्ति शाली पड़ोसी उस देश के राज्य को सैनिक अथवा अन्य हितों की दृष्टि से अपहरण करना चाहता है, तब तो स्वतंत्रता का अन्त ही समझना चाहिए। फिर तो कोई छोटा राष्ट्र अपनी पृथक् स्वतंत्र सत्ता का अधिकार रख ही नहीं सकता। हालेण्ड और डेन्मार्क जर्मनी के अधीन किये जा सकते हैं, बेलजियम जर्मनी या फ्रान्स के अधीन, और पुर्तगाल स्पेन के अधीन। यदि वे राष्ट्र जो बल पूर्वक साम्राज्यों में मिला लिए गये हैं, अपनी स्वतंत्रता का अधिकार खोदेते हैं, तो उनके लिए पुनः स्वतंत्रता प्राप्त करना असम्भव हो जाता है। आयरलैंड ने जिस सम्बन्ध को कभी स्वीकार ही नहीं किया और न कभी राजभक्त रहने का प्रण किया, उसके विषय में यह कहना कि वह अब मित्रता या राजभक्ति से पृथक् होना चाहता है उसी प्रकार बिलकुल झूट है, जैसे कि ब्रिटिश (strategy) समरनीतिको दृष्टि से उसकी आयरलैण्ड की स्वतंत्रता दबाये रखना अन्याय-युक्त है। राष्ट्र के प्रतिनिधि को हैसियत से हम इन में से कोई भी बात स्वीकार नहीं कर सकते।

राष्ट्र ने अपनी प्रतिष्ठा का जो विश्वास हम में प्रकट किया है यदि उसके प्रति विश्वासघात करने से इन्कार करने को ग्रेट ब्रिटेन युद्ध के प्रश्न को एक बहाना बनाना चाहता है, तो हमें इसका बड़ा खेद है। जिस प्रकार जीवित लोगों के प्रति अपने उत्तर दायित्व को हम समझते हैं, उसी प्रकार मरे हुए वीरों के प्रति अपने कर्तव्य या सिद्धान्त को भी हम खूब अनुभव करते हैं। न तो हमने लड़ाई चाही है और न चाहते हैं, परन्तु यदि हमसे लड़ाई की जायगी, तो हम अपनी रक्षा अवश्य

करेंगे और इस विश्वास से करेंगे कि चाहे हम अपनी रक्षा में सफल हों या असफल, किन्तु आयरिश पुरुषों या आयरिश स्त्रियों की कोई भी प्रतिनिधि संस्था कदापि राष्ट्र के जन्म-सिद्ध अधिकार का आत्म-समर्पण न करेगी।

इंगलैंड और आयरलैंड के बीच में जो संघर्ष है उसे हम समाप्त करना चाहते हैं। यदि आपकी गवर्नमेंट ने पशु बलद्वारा हम पर अपनी मर्जी ठूसने का निश्चय कर लिया है, और बात चीत के पहले ही ऐसी शर्तों पर जोर देना चाहते हैं जिससे हमारी सारी राष्ट्रीय स्थिति का आत्म-समर्पण होता है और बात चीत का करना एक मखौल हो जाता है, तो संघर्ष को जारी रखने का उत्तर-दयित्व आप पर है।

शासितों की इच्छा से बनी हुई गवर्नमेंट के पथ प्रदर्शक सिद्धान्त के ही आधार पर शान्ति स्थापित हो सकती है—ऐसी शान्ति जो सब के लिए न्याय-युक्त और प्रतिष्ठा पूर्ण हो और जिससे मेल मिलाप बढ़े और स्वेच्छा पूर्वक स्थायी मैत्री उत्पन्न हो। इस प्रकार की शान्ति की बात चीत करने के लिए 'डेल एरन' अपने प्रतिनिधि मुकर्रर करने को तैयार है और यदि आप की गवर्नमेंट हमारे प्रस्तावित सिद्धान्त को स्वीकार करती है, तो डेल एरन अपने प्रतिनिधियों को पूर्ण अधिकार दे देगी कि वे आप से मिल कर इस बात का प्रबन्ध करें कि उसका व्यवहारिक प्रयोग किस प्रकार हो।

मैं हूं, श्री मन्, आपका

विश्वसनीय

ईमन डी वेलरा

इसका उत्तर मिस्टर लायड जार्ज ने यह दिया:—

श्री मन्,

आप का २४ अगस्त का जो पत्र मुझे प्राप्त हुआ उससे ब्रिटिश गवर्नमेंट बहुत ही निराश हुई। आप हमसे मिलने की शर्तों का उल्लेख करते हैं, मानो हम में और आप में कोई भेंट ही नहीं हुई। इस लिए मैं आप को स्मरण कराता हूं कि छः सप्ताह हुए जब मैंने आप से कहा था कि आप मुझ से भेंट करें, तब मैंने किसी प्रकार की प्रारम्भिक शर्तें नहीं लगाई थीं। आप उस निमंत्रण पर लण्डन आये और तीन मीटिंगों में काफी समय तक मुझसे विचार विनमय किया।

उन मीटिंगों के उपरांत मैंने जो प्रस्ताव उपस्थित किये थे, वे आप के प्रगट किये हुए विचारों का भली प्रकार और सहानुभूति पूर्ण ध्यान रख कर निर्धारित किये गये थे। जैसा मैं पहले कह चुका हूं वे किसी सौदे की नीयत से नहीं किये गये थे। बल्कि इसके विपरीत, मैं और मेरे साथी, ब्रिटिश और आयरिश हितों को मिलाने का प्रयत्न करने में अपनी शक्तियों की चरम सीमा तक पहुंच गये थे। हमारे प्रस्ताव इतनी दूर तक आगे बढ़ गये हैं जितना कि पहले कभी नहीं हुआ और उन्हें सारे सभ्य संसार ने पसन्द भी किया है।

उन स्थानों में, जहां कि आयरलैंड के बड़े से बड़े दावे के साथ सहानुभूति प्रकट की गई है, वहां भी यह समझा जाता है कि न्यायतः अधिक से अधिक इतना ही साम्राज्य दे सकता है या तर्क से आयरलैंड आशा कर सकता है। अपने प्रस्तावों के सम्बन्ध में आयरलैंड के बाहर से जिनलोगों की समालोचना अब तक मैंने सुनी है वे यही कहते हैं कि हमारे प्रस्ताव अपनी उदारता में सीमा और बुद्धिमत्ता से आगे बढ़गये हैं। आपका

पत्र इस बात को नहीं स्वीकार करता। अतएव मुझे भय है कि उस समय तक आगे और बात चीत करना कहीं व्यर्थ न सिद्ध हो, जब तक कि मूलाधार स्वीकार करने की ओर कुछ विशेष अग्रसरता न हो ले।

आप का यह कहना है कि हमारे प्रस्तावों में आयरलैंड की सारी राष्ट्रीय स्थिति का आत्म-समर्पण सम्मिलित है और वे उसे पराधीनता की ओर ले जाते हैं। वास्तविकता क्या है? जो समझौता हमने तैयार किया है उसके अनुसार आयरलैंड को अपनी राष्ट्रीय सत्ता के प्रत्येक रगोरेशे पर अधिकार होगा; वह अपनी भाषा बोलेगा और अपना धार्मिक जीवन बनायेगा। उसे कर लगाने और धन को व्यय करने की पूर्ण स्वच्छन्दता प्राप्त होगी, केवल इस शर्त के साथ कि जहाँ तक सम्भव हो उसमें और ग्रेट ब्रिटन में जो उसका सब से अच्छा बाजार है, व्यापार तथा आयात-निर्यात की स्वतंत्रता हो; उसे शिक्षा के ऊपर पूर्ण अधिकार होगा और अपनी जाति के नैतिक तथा आध्यात्मिक हितों की उन्नति में कोई बाधा न होगी; उसे अपने कानून और व्यवस्था पर, तथा भूमि और कृषिपर भी पूरा स्वत्व होगा; उसे अपने श्रम और उद्योग के विभागों को चलाने की स्वाधीनता होगी; और अपनी जनता के स्वास्थ्य और घरू कामों पर पूरा अधिकार होगा; और अपने देश की स्थल रक्षा का भी अख्तियार होगा। वास्तव में, आयरलैंड अपनी सीमा के भीतर भीतर राष्ट्रीय गति, राष्ट्रीय विचार और राष्ट्रीय उन्नति के प्रत्येक कार्य में पूर्ण रूप से स्वतंत्र होगा।

अमेरिकन युनियन के राष्ट्र यद्यपि स्वतंत्र हैं किन्तु उन्हें भी इतने अधिकार नहीं प्राप्त हैं, और हमारे प्रस्ताव तो और भी आगे जाते हैं, क्योंकि इनके द्वारा आयरलैंड को निमंत्रित

किया जाता है कि वह स्वतंत्र राष्ट्रों के उस महाराष्ट्र-समूह में साझेदार बन कर अपना स्थान ग्रहण करे, जो साम्राट के प्रति राज-भक्त रह कर एक सूत्र में सम्बद्ध हैं। हम समझते हैं कि हमारे ये प्रस्ताव आपकी वह इच्छा सर्वथा पूरी करते हैं, जिसके अनुसार 'शासितों की स्वीकृति से बनी हुई सरकार का सिद्धान्त' हमारे समझौते का पथ-प्रदर्शक सिद्धान्त हो और उसी के विषय में आपके अधिकारयुक्त प्रतिनिधि हम से बात चीत करेंगे।

इस सिद्धान्त का आविर्भाव पहले पहल इंगलैंड में हुआ था और उसने जितनी प्रतिनिधि संस्थाएं बनाई हैं, उनका यह मूलाधार है। इंगलैंड ने ही इसका प्रचार सारे संसार में किया है और यह अब भी ब्रिटिश राष्ट्र-समूह का जीवन मूल है।

अन्य किसी दूसरे सिद्धान्त पर हम आयरलैंड को निमंत्रण नहीं दे सकते थे कि वह आकर राष्ट्र-समूह में अपना स्थान ग्रहण करे, और हमें विश्वास है कि इसी सिद्धान्त के द्वारा हम प्राचीन वैमनस्य को दूर कर सकते हैं और ऐसी स्थायी मित्रता प्राप्त कर सकते हैं जो आयरलैंड तथा राष्ट्र-समूह की अन्य जातियों के लिए एक समान सम्मानार्ह हो।

किन्तु जब आप इस तरह की बहस करते हैं कि आयरलैंड और ब्रिटिश साम्राज्य के सम्बन्ध की तुलना सिद्धान्त रूप से हालेन्ड या बेलजियम और जर्मन साम्राज्य के सम्बन्ध से की जा सकती है, तब मुझे एक बार फिर यह कह देने की आवश्यकता होती है कि ये ऐसी बातें हैं जिन्हें कोई ब्रिटिश गवर्नमेंट वह चाहे जिस तरह की हो, कभी स्वीकार नहीं कर सकती। इस बात की मांग करना कि आयरलैंड के साथ एक ऐसी पृथक स्वतंत्र शक्ति का सा बर्ताव हो, जो न तो सम्राट के प्रति राज-

भक्त हो और न राष्ट्र-समूह की अन्य जतियों के साथ वफादार हो, ऐसे दावे हैं जिन्हें 'ग्रेटन' से लेकर 'पारनेल' और रेडमएड तक, आयरिश इतिहास के समस्त प्रसिद्ध नेताओं ने प्रत्यक्ष रूप से अस्वीकार किया है।

ग्रेटन ने अपने प्रसिद्ध वाक्य में कहा था कि, "वियोजन के विषय में महा सागर विरोध करता है और एकी करण के विरोध में समुद्र है।" आयरिश राष्ट्रीयता की ओर से बोलने वाले समस्त नेताओं में सब से प्रभावशालो वक्ता 'डैनियल ओ कानेल' ने सन् १८३० में 'हाउस आफ कमन्स' में इन शब्दों में अपना विरोध प्रकट किया था:—

"वर्तमान सम्राट की अपेक्षा किसो भी सम्राट ने आयरलैंड के उन लोगों से कभी भी अविभाजित राज-भक्ति नहीं प्राप्त की, जो 'युनियन' या एकी करण के विरूद्ध आन्दोलन कर रहे हैं। यह कहना कि ये लोग दोनों देशों को विल्कुल अलग अलग कर देना चाहते हैं ऐसी धूर्तता पूर्ण झूठ है, जैसी आजतक कभी नहीं बोली गई। और न इससे बड़ी भूल आजतक कभी की गई कि यह समझ लिया जाय कि हम सम्बन्ध विच्छेद करना चाहते हैं।"

डयूक आफ वेलिंगटन के नाम सन् १८४५ के अपने प्रसिद्ध पत्र में, नौजवान आयरलैंड के आदर्शों के प्रतिभाशाली व्याख्याता 'टामस डेविस ने कुछ माँगे पेश की थीं, जिनसे आयरलैंड को चुंगी तथा अन्य कर लगाने, अपनी सड़कें, बन्दर गाह, रेलें, नहरें और पुल बनाने, अपने व्यापार, उद्योग धंधे और कृषि आदि की उन्नति करने, का अधिकार प्राप्त हो।

'ओ कानेल' और 'टामस डेविस' की जो माँगें थीं वह सब कुछ, वल्कि उससे ज्यादा ब्रिटिश गवर्नमेंट आयरलैंड को

देने को तैयार है, किन्तु इसके उत्तर में हमारे सामने आयरलैंड को एक विदेशी शक्ति मानने की एक विस्पष्ट अविशिष्ट माँग पेश की जाती है। यह तो वाक्यों के साथ खेलना है कि "शासितों की इच्छा से बनी हुई सरकार" का सिद्धान्त हमें बाध्य करता है कि हम इस माँग को स्वीकार करलें, और यदि हम उसको नहीं मानते, तो हम भौगोलिक और ऐतिहासिक विचारों को, आयरिश जाति पर अपनी प्रभुता जमाने के लिए, तोड़ मरोड़ रहे हैं। ऐसा कोई भी स्पष्ट से स्पष्ट राजनीतिक सिद्धान्त नहीं है, जो भौतिक और ऐतिहासिक घटनाओं की सीमा का बिचार किये बिना ही प्रयुक्त हो सके।

जिस प्रकार प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र के संगठन के लिए यह सिद्धान्त आवश्यक है, उसी प्रकार सीमाँत भी जरूरी हैं। उनसे इन्कार करना समस्त प्रजा वादी राष्ट्रों को ध्वंस (dissolve) करना है।

इन्हीं प्रारम्भिक बातों की बुनियाद पर हमने आप का ध्यान उस कार्य-संचालिका शासन-शक्ति की ओर आकर्षित किया जो इन दोनों द्वीपों के भौगोलिक समीपता से और जाति तथा आचरण की भिन्नता होते हुए भी प्राचीन ऐतिहासिक सम्बन्ध से, दोनों पर अपना प्रभाव रखती है।

हमें इस बात का विश्वास नहीं है कि ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड में कभी भी स्थायी मेल हो सकेगा, जब तक कि दोनों की भौगोलिक और ऐतिहासिक पारस्परिक-निर्भरता स्वीकार न कर ली जाय। इस एक दूसरे की निर्भरता ही के कारण दोनों के लिए राजनीतिक और आर्थिक अलगाव अव्यवहारिक हो जाता है।

इस सम्बन्ध में ब्रिटिश दृष्टि कोण को स्पष्ट करने के लिए मुझे अब्राहाम लिंकन के शब्दों से अच्छे शब्द नहीं

मिलते, जो उन्होंने अमरीका के उत्तरीय और दक्षिणी राष्ट्रों के विषय में अपने प्रारम्भिक भाषण में कहे थे। ये शब्द अमेरिकन गृह-युद्ध के आरम्भ होने के पहले कहे गये थे, क्यों कि वह इस युद्ध को टालना चाहता था।

"भौतिक रूप से हम पृथक् नहीं हो सकते। हम एक दूसरे के पारस्परिक विभागों को हटा नहीं सकते, न उनके बीच में एक अभेद्य दीवार बना सकते हैं।.........अतएव अलगाव के पहले की अपेक्षा उसके पश्चात् उस सम्बन्ध को अधिक उपयोगी अथवा अधिक सन्तोष-जनक बनाना असम्भव हो जाता है। मान लो तुमने युद्ध छेड़ दिया। किन्तु तुम सदा लड़ते ही नहीं रह सकते। जब दोनों ओर हानि उठा कर और कोई लाभ न प्राप्त कर के, तुम लड़ाई बन्द करते हो, तब फिर सम्बन्ध के विषय में वही पुराने प्रश्न हू बहू तुम्हारे सम्मुख उपस्थित होते हैं।"

मैं नहीं समझता कि तर्क के साथ इस बात से इन्कार किया जा सकता है कि ग्रेट ब्रिटन और आयरलैंड के सम्बन्ध की बात किसी प्रकार भी इस से भिन्न है। मैं समझता था कि मैंने आप से अपनी बात चीत में और उसके पश्चात् अपने दोनों पत्रों में यह स्पष्ट कर दिया है कि हम किसी ऐसे समझौते पर वाद विवाद करने के लिए प्रस्तुत नहीं है जिस में आयरलैंड की ओर से इस बात से इन्कार हो कि वह एक सम्राट की छत्र छाया में ब्रिटिश राष्ट्र-समूह के अन्दर स्वतंत्र, समान और राजभक्त साझेदार बनने का हमारा निमंत्रण स्वीकार करता है।

इस प्रश्न के शीघ्रगामी बनाने में हमें संकोच है, किन्तु हम यह बतला देना चाहते हैं कि वर्तमान स्थिति को और अधिक दिनों तक चलाना भय कारक है। कई और ऐसे कार्य हो रहे हैं

जो यदि जारी रहे, तो क्षणिक सन्धि को हानि पहुंचेगी और अन्त में वह भंग हो जायेगी और वास्तव में यह बात बड़ी खेद-जनक होगी।

इस लिए यदि एक ओर हम शान्ति के उद्देश्य की वृद्धि के लिए हर प्रकार की रियायत करने को तैयार हैं, तो दूसरी ओर केवल पत्र परिवर्तन कर के हम समय को अधिक नहीं गवां सकते। यह आवश्यक है कि तुरन्त ही कोई निश्चित मूल मन्तव्य निर्धारित कर लिया जाय, जिससे भावी पत्र व्यवहार लाभ दायक प्रमाणित हो।

दुर्भाग्य से हमें आप के पत्र में इस प्रकार की कोई अग्रसरता नहीं दिखलाई पड़ती। मैंने इस पत्र में और अपने पिछले पत्रों में उन विचारों को उपस्थित कर दिया है, जो सम्राट की सरकार की प्रत्येक बात चीत में उसके कार्य को संचालित करते हैं। यदि आप इस बात की परीक्षा करने के लिए तैयार हैं कि ये विचार आप के लक्ष्य से कहां तक मेल खाते हैं, तो मैं आप से और आप के सथियों से भेंट करने में बहुत प्रसन्न होऊँगा।

मैं हूं, श्री मन्, आप का
विश्वसनीय
डी, लायड जार्ज

इसी समय में डी वेलरा सर्व सम्मति से पुनर्वार आयरिश प्रजातंत्र का प्रेसीडेन्ट चुन लिया गया। कमान्डेन्ट 'सीन मेक कीन' ने उसके पुनः चुने जाने का प्रस्ताव उपस्थित करते समय ये सार्थक शब्द इस्तेमाल किये थे:—

पिछले सौ वर्षों से किसी आयरिश नेता में ऐसी कार्य पटुता नहीं थी। किसी ने अपने लोगों का नेतृत्व करने की अधिक योग्यता नहीं दिखलाई और न किसी ने पौराणिक शत्रु से

व्यवहार करने का अधिक कौशल प्रकट किया। वह उनकी चालों से धोखे में नहीं आया और न उनकी धमकी से भयभीत हुआ। ईमन डी वेलरा ने पहले अंगरेजों का मुकाबिला एक सैनिक के रूप में किया और एक सैनिक की तरह उन्हें हटाया, अब वह उनसे एक राजनीतिज्ञ की तरह भेंट कर रहा है और वह उन्हें एक राजनीतिज्ञ की तरह परास्त करेगा। हमारे राष्ट्र की प्रतिष्ठा और कल्याण उसके हाथों में सुरक्षित हैं।

मिस्टर लायडजार्ज के २६ अगस्त के पत्र के उत्तर में ३० अगस्त को डी वेलरा ने यह लिखकर भेजा:—

श्रीमन्,

हमें भी विश्वास हो गया है कि ऐसा मूलाधार निश्चित करने के लिए तुरन्त कोई अग्रगति होनी चाहिए जिससे भविष्यत् की बात चीत कुछ उपयोगी सिद्ध हो सके और हम भी विवाद युक्त पत्र व्यवहार से "केवल विचार परिवर्तन" की अनुपयोगिता को स्वीकार करते हैं। अतएव मैं भी आपके पिछले पत्र के भ्रामक ऐतिहासिक संकेतों के ऊपर टीका टिप्पणी करने से विरत होता हूँ।

वर्तमान ही वास्तविकता है जिसके साथ हमें व्यवहार करना है। आज की स्थिति भूतकाल का परिणाम है, जो प्रश्न के आवश्यक मूल को सीधे सादे रूप में ठीक ठीक प्रदर्शित करता है। मूल बातें ये हैं:—

(१) आयरलैण्ड के लोग ग्रेटब्रिटेन के साथ स्वेच्छा से कोई एकता नहीं स्वीकार करते। वे अपने राष्ट्रीय भाग्य का निपटारा करने के लिए अपना मार्ग स्वतंत्र रूप से चुनने के प्राकृतिक अधिकार का दावा रखते हैं। उन्होंने एक बहुत बड़े बहुमत से

अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी है, प्रजातंत्र स्थापित कर लिया है और अपने निश्चय को कई बार दोहरा चुके हैं।

(२) इसके विपरीत ग्रेटब्रिटेन ऐसा व्यवहार कर रहा है मानों आयरलैण्ड ने उसके साथ बँधे रहने का ठेका ले लिया है जिससे वह सम्बन्ध-विच्छेद कर ही नहीं सकता। इस फर्जी ठेके की परिस्थितियाँ काफी बदनाम हैं । किन्तु उनकी सत्यता को मानकर ब्रिटिश गवर्नमेंट और पार्लिमेंट आयरलैण्ड पर शासन करने तथा उसके लिए कानून बनाने का यहां तक दावा करती है कि आयरिश जनता की इच्छा के विरुद्ध आयरिश भूमि को विभाजित कर देना चाहती है और जो आयरिश नागरिक राजभक्ति प्रदर्शित करने से इन्कार करते हैं उन्हें मार डालना या जेल में ठूंस देना चाहती है।

आपकी गवर्नमेंट के प्रस्ताव, जो २० जुलाई के मसविदे में दिये हुए हैं वास्तव में इसी पिछले सिद्धान्त पर निर्धारित हैं। हमने इन प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया है और हमारा निश्चय अटल है। आप का प्रस्ताव आयरलैण्ड के लिए ब्रिटिश राष्ट्र-समूह की स्वतंत्र जातियों के साथ "एक स्वतंत्र और इच्छुक" साझीदार की हैसियत से सम्मिलित होने का निमन्त्रण नहीं है।

वह आयरलैण्ड के लिए ऐसे रूप में और ऐसी शर्तों के साथ सम्मिलित होने का निमंत्रण है जो वास्तविक स्वतंत्र राष्ट्रों से बहुत नीचे दर्जे की स्थिति निर्धारित करता है। केनाडा, आस्ट्रेलिया' दक्षिण अफ्रीका, न्युजीलैण्ड, सब के प्रति बड़े राष्ट्र के प्रभुत्व से रक्षा होने की गेरेन्टी है; क्योंकि उनके माने हुए व्यवस्थित अधिकार ऐसे हैं जो उन्हें ग्रेटब्रिटेन की बराबरी का दर्जा प्रदान करते हैं और ब्रिटिश पार्लिमेंट और गवर्नमेंट के आधिपत्य से

पूर्णरूप से मुक्त कर देते हैं। साथ ही उनका ग्रेटब्रिटन से सहस्रों मील दूर होना भी उनकी रक्षा की एक बड़ी गेरेन्टी है। आयरलैण्ड को न तो दूरी की गेरेन्टी होगी और न अधिकारों की। जिन शर्तों के लगाये जाने का विचार किया जा रहा है, उनसे आयरलैण्ड दो नकली विभागों में बट जायगा। किसी सम्मिलित संस्था में प्रत्येक भाग दूसरे के प्रभाव को नष्ट करने का यत्न करेगा और दोनों हो ब्रिटिश गवर्नमेंट के सैनिक, सामुद्रिक और आर्थिक आधिपत्य में रहेंगे।

मुख्य ऐतिहासिक और भौगोलिक घटनाओं के सम्बन्ध में कोई विवाद नहीं है किन्तु आपकी सरकार उन्हें अपने दृष्टिकोण से देखने पर ज़ोर देती है। हमें भी अपने दृष्टिकोण से देखने की आज्ञा होनी चाहिए। जिस इतिहास से आप सम्मिलन का अर्थ लगाते हैं उसी से हम विच्छेद का अर्थ निकालते हैं। "भौगोलिक समीपता" की हमारी परिभाषाएं परस्पर एक दूसरे के बिल्कुल विरुद्ध हैं। हमें विश्वास है कि जो अर्थ हम लगाते हैं वही सत्य और उचित है और इसके प्रमाण स्वरूप हम इस बात पर सहमत हैं कि कोई तटस्थ और निष्पक्ष पंच न्यायाधीश मुकर्रर हो जाय। आप इस बात से इन्कार करते हैं और अपने विचारों को कार्यान्वित करने के लिए पशुबल का भय दिखलाते हैं। हमारा उत्तर यही होना चाहिए कि यदि आप उस मार्ग को ग्रहण करेंगे, तो हम केवल अपनी रक्षा करेंगे, जैसा कि हमसे पहले वाली पीढ़ियों ने अपनी रक्षा की है।

पशुबल इस प्रश्न का निर्णय नहीं कर सकता। पशुबल युक्ति और अधिकार पर कभी अन्तिम विजय नहीं प्राप्त कर सकता। यदि आप पुनः पशुबल का मार्ग ग्रहण करेंगे, और

यदि न्याय को विजय न प्राप्त होगी, तो जो प्रश्न हमारे सामने है, वही हमारे उत्तराधिकारियों के सम्मुख उपस्थित होगा।

साढ़े सात सौ वर्षों तक इस प्रश्न ने पशुबल का मुकाबिला किया है, यह बात काफी प्रमाण है और पर्याप्त सूचना है। अतएव यही सच्ची बुद्धिमानी और सच्ची राजनीतिज्ञता मुझे और मेरे साथियों को प्रोत्साहित कर रही है, न कि मिथ्या आदर्शवाद। पशुबल की धमकियों को हटाकर अलग कर देना चाहिए। इन्हें आरम्भ ही से दूर रखना चाहिए और बात चीत के बीच में भी इन धमकियों का प्रवेश न होना चाहिए।

दोनों ओर के अधिकार-युक्त प्रतिनिधि बिना किसी रोक टोक के मिलें और उनके बीच में वास्तविक घटनाओं के अतिरिक्त कोई भी शर्तें न हों। उन्हें आपस के अन्तिम भेद भावों का निपटारा करने के लिए किसी भी प्रकार के पशुबल का, चाहे वह छिपा हुआ हो और चाहे खुला हुआ, सहारा न लेना चाहिए किन्तु किसी सम्मिलित समझौते के पथ प्रदर्शक सिद्धान्त का आश्रय ग्रहण करना चाहिए। हम ने शासितों की इच्छा पर निर्भर सरकार का सिद्धान्त उपस्थित किया है और हम उसे केवल शब्दाडम्बर नहीं समझते।

यदि किसी प्रस्तावित निर्णय को वास्तविकता का रूप ग्रहण करना है तो उसकी परीक्षा इस सीधे सादे वाक्य से हो जायेगी और समग्र प्रश्न को तथा उसके विवरण को जांचने के लिए इसी माप का प्रयोग हो सकता है। इस सिद्धान्त को आप ब्रिटेन की विशेषता समझते हैं और खयाल करते हैं कि इसके संस्थापक ब्रिटिश लोग हैं तथा यह इस समय ब्रिटिश राष्ट्र समूह का जीवन मूल है, तब तो आप को इसे विशेष रूप से स्वीकार करना चाहिए। इस आधार पर और केवल इसी आधार पर

हमे उस समझौते की आशा दिखलाई पड़ती है, जिससे ब्रिटेन के प्रतिनिधियों और आयरलैंड के प्रतिनिधियों के विचारों में मेल खाने की सम्भावना है। इस आधार पर हम तुरन्त अपने अधिकार युक्त प्रतिनिधि मुकर्रर करने के लिए तैयार हैं।

मैं हूं श्री मन्, आप का शुभ चिन्तक
ईमन डी वेलरा

इस पत्र के पहुंचने पर बड़ी शीघ्रता से 'इन्वर्नेस' नामक स्थान पर ब्रिटिश मंत्रि मण्डल की एक बैठक हुई। सर हेमर ग्रीनउड, लार्ड फिटजएलन और जनरल मेकरेडी, आयरलैंड में ब्रिटेन के तीन मुख्य प्रतिनिधि बड़ी शीघ्रता से उत्तरी राजधानी की ओर चल पड़े। दोनों ओर से क्षणिक संधि का प्रतिष्ठा के साथ पालन हो रहा था। किन्तु बात चीत का क्या परिणाम होगा इसके विषय में बड़ी अनिश्चयता फैली हुई थी।

७ सितम्बर को मिस्टर लायड जार्ज ने डी वेलरा को यह उत्तर दिया:—

श्री मन्,

सम्राट की सरकार ने आप के ३० अगस्त के पत्र पर विचार किया और उसके सम्बन्ध में उन्हें यह कहना है:—शासितों की इच्छा से बनी हुई सरकार का सिद्धान्त ब्रिटिश व्यवस्थाओं की उन्नति का आधार है, किन्तु एक व्यवहारिक कान्फरेन्स के मूलाधार स्वरूप हम उसकी उस परिभाषा को नहीं स्वीकार कर सकते जिससे हमें आपकी प्रत्येक माँग स्वीकार करने के लिए वाध्य होना पड़े–यहाँ तक कि वह माँग एक प्रजातंत्र स्थापित करने और सम्राट को न मानने की भी हो सकती है। आपको सूचित हो जाना चाहिए कि इस आधार पर किसी कान्फरेन्स का होना असम्भव है। यदि शासितों की इच्छा से बनी हुई सरकार के सिद्धान्त का

इस प्रकार प्रयोग किया जाय, तो प्रत्येक लोक-सत्तात्मक राज्य के संगठन की जड़ खोखली पड़ जायगी और सभ्य संसार पुनः (tribalism) क्षुद्र गोष्ठियों की ओर लौट जायेगा। इसके विपरीत, हमने आपको इसलिए निमंत्रित किया है कि स्वयं हमारे प्रस्तावों के गुणों पर आप वादविवाद करें, ताकि आपको हमारे विचारों की उदारता और सत्यता पर तनिक भी सन्देह न रहे। इस कान्फरेन्स में स्वतंत्र होकर जिस विषय पर चाहें उस पर आप गेरेन्टी की बात उपस्थित कर सकते हैं, बशर्ते कि आप समझते हों कि उस बात से, हमारे प्रस्तावों के अनुसार आयरिश स्वतंत्रता में कोई बाधा आने की सम्भावना है।

सम्राट की सरकार यह विश्वास नहीं कर सकती कि आप, उनके प्रस्तावों को कान्फरेन्स में बिना परीक्षा किये हुए, अस्वीकार करने की हठ करेंगे। किसी ऐसे समझौते पर वादविवाद करने से इन्कार करना, जिससे साम्राज्य के अन्तर्गत आयरलैंड की जनता को राष्ट्रीय उन्नति करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त होती हो, यह प्रकट करता है कि आप सम्राट के प्रति राजभक्ति से और ब्रिटिश-राष्ट्र-समूह के सभासद होने से इनकार करते हैं। यदि आपके पत्र से हम यही परिणाम निकालें, तो हमारे परस्पर विवाद से कोई लाभ होने की सम्भावना नहीं और कान्फरेंस व्यर्थ होगी। यदि यह परिणाम निकालने में हम भूल करते हैं, जैसा कि हमें अब भी आशा है और हमारे प्रस्तावों के सम्बन्ध में यदि आपको वास्तव में यह आपत्ति है कि वे आयरलैंड को उस स्वतंत्रता से कम प्रदान कर रहे हैं जिसका हमने वर्णन किया है, तो उस आपत्ति के विषय में कान्फरेंस में काफी छान बीन की जा सकती है। आप इस बात से सहमत होंगे कि पत्र व्यवहार काफी समय तक चल चुका है। इसलिए सम्राट की सरकार एक

निश्चित उत्तर चाहती है कि क्या आप ऐसी कान्फरेन्स में सम्मिलित होकर यह तय करना चाहते हैं कि आयरलैंड और ब्रिटिश समाज्य के राष्ट्रों के समूह में कैसा सम्बन्ध स्थापित हो जो आयरलैंड के राष्ट्रीय उद्देश्यों से मेल रखता हो। यदि, जैसा कि हमें आशा है आपका उत्तर हाँ में है, तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि कान्फरेंस इसी मास की बीस तारीख को 'इन्वर्नेस' स्थान पर हो।

मैं हूँ, श्रीमन्, आपका विश्वसनीय

डी लायड जार्ज

१४ सितम्बर को डेल का एक गुप्त अधिवेशन हुआ, जिसमें लायड जार्ज के नाम मंत्रि मण्डल का उत्तर स्वीकृत हुआ और ब्रिटिश प्रतिनिधियों के साथ सम्मेलन होने की सम्भवना का विचार करके सर्व सम्मति से निम्नलिखित सज्जन अधिकार-युक्त प्रतिनिधि निर्वाचित हुए:—

मिस्टर आर्थर ग्रिफिथ, वैदेशिक मंत्री

(सभापति)

मिस्टर माइकेल कोलिन्स, अर्थ सचिव ; कमान्डेएट आर० सी० बार्टन, अर्थ-व्यवस्था मंत्री कमान्डेन्ट ई० डूगन, मीथ और लूथ के डिपटी मिस्टर जार्ज गेवन डफी, रोम के राजदूत और डबलिन के डिपटी

उत्त से मिस्टर लायड जार्ज प्रसन्न नहीं हुए। जो दूत पत्र को ले गये थे उनसे एक घण्ट बात करने के उपरान्त पत्र में कुछ सुधार कराने के लिए वे दोनों डबलिन लौटा दिये गये। पत्र में इच्छित परिवर्तन नहीं हुआ और असली रूप में पत्र प्रकाशित कर दिया गया। इससे अंगरेजों की तरफ बड़ी घबराहट

पैदा हुई और 'इनवर्नेस' में होने वाली कान्फरेन्स केन्सिल कर दी गई। मिस्टर लायडजार्ज ने यह कहा कि नई स्थिति के विषय में वह अपने साथियों से परामर्श कर के अपना कार्य क्रम निश्चित करेंगे।

पत्र इस रूप में प्रकाशित हुआ था:—

हमें यह घोषित करने में कोई संकोच नहीं है कि हम ऐसी कान्फरेन्स में भाग लेने के लिए तैयार हैं, जो यह निश्चय करे कि आयरलैंड अपने राष्ट्रीय उद्देशों को सुरक्षित रखते हुए राष्ट्रों के उस समूह के साथ, जिसे ब्रिटिश साम्राज्य कहते हैं, किस प्रकार का सम्बन्ध स्थापित करे जो दोनों बातों में परस्पर सामञ्जस्य उत्पन्न कर दे। इस प्रकार का सम्बन्ध स्थापित करने की तत्परता की सूचाना हम ने अपने १० अगस्त के पत्र में अपनी ओर से दे दी थी। इसी लिए हम ने डेल एरन का एक अधिवेशन निमंत्रित किया है कि वह इन प्रतिनिधियों के नाम स्वीकार कर ले जिन्हें हम प्रस्तावित करना चाहते हैं। हमें आशा है कि ये प्रतिनिधि सम्भवतः आपकी निश्चित की हुई तारीख, २० सितम्बर, को 'इन्वरनेस' पर पहुच जायँगे।

अपने इस अन्तिम नोट में हम पुनः यह कह देना अपना कर्तव्य समझते हैं कि हमारी वही स्थिति है और वही हो सकती है, जो हमने अपने इस पत्र में वर्णन की है।

हमारे राष्ट्र ने नियमित रूप से अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी है और वह अपने आपको एक स्वाधीन राज्य स्वीकार करता है। केवल एक ऐसे ही राष्ट्र के प्रतिनिधि स्वरूप और उसके निर्वाचित संरक्षक के रूप में हम को वह अधिकार या शक्ति प्राप्त है जिसके द्वारा हम जनता की ओर से कोई कार्य कर सकते हैं।

"शासितों की इच्छा से बनी हुई सरकार" के सिद्धान्त के विषय में हमें यही कहना है कि केवल इसी के आधार पर कोई समझौता हो सकता है जिससे हमारी हार्दिक इच्छा पूर्ण हो, अर्थात् हमारी और आपकी जाति का अन्तिम मेल मिलाप हो जाय। हमने उस सिद्धान्त का कोई नया अर्थ नहीं लगाया है, सिवा उस अर्थ के जो प्रति दिन व्यवहार में आता है—उदाहरणार्थ यह वही अर्थ है जो संसार के साधारण पुरुष और स्त्रियों ने सन् १९१८ की ५ जनवरी को समझा था, जब आपने कहा था कि, "नवीन युरोप का समझौता उस तर्क और न्याय के आधार पर अवलम्बित होना चाहिए जिससे स्थिरता की प्रतिज्ञा प्रकट होती हो।" अतएव हम समझते हैं कि इस युद्ध में सीमा निर्धारित करने का समझौता "शासितों की इच्छा पर बनी हुई सरकार" की बुनियाद ही पर होना चाहिए।

आपके पिछले पत्र में हमारी स्थिति की जो आलोचना की गई है, उसका यह उचित उत्तर है कि 'उस सिद्धान्त का यह अर्थ समझा गया था कि जो राष्ट्र अपनी इच्छा के विरुद्ध साम्राज्यों में सम्मिलित कर लिये गये हैं उन्हें गला घोटने वाले फन्दे से स्वतंत्र होने का अधिकार है'। यही उसका अर्थ है जो हम समझते हैं। चूंकि आपकी गवर्नमेंट हमारी प्राचीन जाति का अंग भंग करना चाहती है और उसकी भूमि को विभाजित करना चाहती है, इसलिए वही उक्त सिद्धान्त का ऐसा अर्थ लगाना चाहिती है, जो लोक सत्तात्मक राष्ट्र की जड़ को ढीला करता है और सभ्य संसार को प्राचीन कुटुम्ब प्रथा (tribalism) की ओर घसीट कर ले जाता है।

ईमन डी वेलरा

१५ सितम्बर को मिस्टर लायड जार्ज ने तार से यह उत्तर दिया:—

श्रीमन्,

आपके जो दूत मंगलवार १३ तारीख को मेरे पास आये थे, उन्हें मैंने सूचना दे दी थी कि आपका इस दावे को पुनः पेश करना कि आप सम्राट की गवर्नमेंट से एक पूर्ण स्वतंत्र और स्वाधीन राष्ट्र के प्रतिनिधि की हैसियत से बात चीत कर सकते हैं, हमारी और आपकी कान्फरेन्स को असम्भव कर देगा। वे मेरे पास आपका एक पत्र लाये थे जिसमें आपने उस दावे को विशेष रूप से दोहराया है; और यह लिखा है कि आपके राष्ट्र ने "नियमित रूप से स्वतंत्रता की घोषणा कर दी है और वह अपने को एक स्वाधीन राष्ट्र समझता है।" आपके पत्र में यह भी कहा गया है कि "उस राष्ट्र के प्रतिनिधि स्वरूप और उसके निर्वाचित संरक्षक के रूप में ही आपको जनता की ओर से कार्य करने का अधिकार या शक्ति प्राप्त है।" मैंने आपके दूतों को सूचना दे दी थी कि इस तरह के पैराग्राफ से बड़ी गम्भीर स्थिति पैदा हो जायगी और मैंने उस पत्र को अप्राप्त समझा ताकि आपको उसपर पुनः विचार करने का समय मिल जाय। इस सूचना के होते हुए भी आपने अब उस पत्र को उसके असली रूप में प्रकाशित कर दिया है। अतः आगामी सप्ताह 'इनवर्नेस' में होने वाली कान्फरेन्स के प्रबन्ध को मैं कौन्सिल (रद्द) करता हूँ और अपने सहकारियों से परामर्श करूंगा कि इस नई स्थिति के अनुसार हमें क्या करना चाहिए। जितनी शीघ्र सम्भव होगा मैं आपको इसकी सूचना दूंगा, किन्तु इस समय मैं कुछ असुस्थ हूँ अतएव कुछ दिनों का विलम्ब होना अनिवार्य है। परन्तु साथ ही मैं बिल्कुल स्पष्ट

रूप से यह कह देना चाहता हूँ कि जिस स्थिति का मैंने उल्लेख किया है उस पर सम्राट की सरकार पुनः विचार नहीं कर सकती । जिस दावे को आपने दोहराया है यदि उसके आधार पर हम आपके प्रतिनिधियों के साथ कान्फरेन्स करने के लिए सहमत हो जायँ, तो मानो सम्राट की गवर्नमेंट आयरलैण्ड का साम्राज्य से सम्बन्ध विच्छेद और एक पूर्ण स्वतंत्र प्रजातंत्र का अस्तित्व सरकारी तौर पर स्वीकार कर लेती हैं। इसके अतिरिक्त फिर तो आपको यह घोषित करने का हक हो जायगा कि हमने आपका अधिकार मान लिया कि यदि आप चाहें तो ब्रिटिश साम्राज्य के सम्बन्ध के मुकाबिले में किसी अन्य विदेशी शक्ति से एक घनिष्ट और निकटवर्ती सन्धि कर सकते हैं। इस प्रकार के दावे का केवल एक ही उत्तर सम्भव है। एक स्थायी समझौता करने के अभिप्राय से सम्राट की गवर्नमेंट ने आपकी जनता को जो सुविधाएँ दी हैं, मेरी समझ में उनका प्रत्योत्तर कुछ अधिक उदारता पूर्ण होना चाहिए था । किन्तु अब तक जो कुछ पेश कदमी हुई है वह हमारी ओर से हुई है। आप अपनी ओर से हमसे मिलने के लिए एक क़दम भी आगे नहीं बढ़े हैं किन्तु आपने वारम्बार केवल अपने मूल दावे के शब्दों और भावों को जोरदार चेलेंज से भरे हुए वाक्यों द्वारा दोहराया ही है।

मैं हूं, आपका विश्वसनीय
डी० लायड जार्ज

१६ सितम्बर को डी वेलरा ने इसका यह उत्तर दिय:—

श्री मन्,

मुझे आपका तार कल रात को मिला। मुझे आश्चर्य होता है कि आप यह नहीं समझते कि यदि हम आपके ७ सितम्बर

के पत्र के आधार पर कान्फरेंस को स्वीकार कर लेते और अपनी स्तिथि को स्पष्ट न करते, तो कान्फरेन्स में प्रवेश करने पर आयरलैंड के प्रतिनिधियों की स्थिति के विषय में भ्रम उत्पन्न हो जाता और आयरलैंड के अधिकार को अमिट क्षति पहुँच जाती।

जितना पत्र व्यवहार हुआ है उसमें आपने अपनी गवर्नमेंट की स्तिथि की परिभाषा कर दी है। हमने अपनी स्थिति को प्रकट कर दिया है। यदि दोनों की स्थितियां एक दूसरे के विरुद्ध न होतीं, तो वास्तव में वाद विवाद करने के लिए कोई प्रश्न ही न रहता। अतः प्रकट है कि ऐसी दशा में यदि कोई परिणाम निकलना है, तो बात चीत करने वालों को विना संकोच के और बन्धन विमुक्त हो कर मिलना चाहिए। शर्तें केवल वेही हों जो वास्तविकता के आधार पर हों।

ईमन डी वेलरा

डी वेलरा के १७ सितम्बर के पत्र के उत्तर में प्रधान मंत्री ने यह तार दिया:—

श्रीमन्,

आपका रात का तार मुझे प्राप्त हुआ। यह कहना व्यर्थ है कि यदि हम आपके डेलीगेटों को एक स्वतंत्र और स्वाधीन राष्ट्र का प्रतिनिधि मान कर एक वार एक कान्फरेन्स में मिल लें, तो वह कान्फरेन्स पक्षपात शून्य होगी और उससे कोई हानि न होगी। परन्तु उनसे इस रूप में भेंट करना नियमित और सरकारी तौर से सम्राट के राज्य से आयरलैंड का सम्बन्ध विच्छेद स्वीकार करना है। वास्तव में फिर तो आपको अधिकार होगा कि यदि आप उचित समझें, तो सम्राट से मित्रता की

संधिकर लें, परन्तु साथ ही आप को यह भी अधिकार होगा कि कोई भी संधि न करें, और जिस समय चाहें हमारी कान्फरेन्स को भंग कर दें, और जिस अधिकार को स्वयं हमने स्वीकार कर लिया है उसी के द्वारा किसी विदेशी शक्ति से आयरलैंड का सम्बन्ध स्थापित कर लें। इससे आपको यह भी अधिकार प्राप्त हो जायगा कि यदि आप पुनः पशुबल की शरण लें, तो आप को विदेशी शक्तियों के सम्मुख सम्राट के विरुद्ध कानूनी युद्ध के अधिकारों की माँग पेश करने का भी हक है, क्योंकि हमने उस अधिकार को मान लिया है। यदि हम आपके साथ एक स्वाधीन और पूर्ण स्वतंत्र राष्ट्र का सा व्यवहार करें, तो हमें अपने उदाहरण का अनुसरण करने के लिए अन्य शक्तियों के विरुद्ध शिकायत करने का कोई अधिकार न होगा। आप के डेलीगेटों को एक पूर्ण स्वतंत्र राष्ट्र के प्रतिनिधि मानने के यही परिणाम होंगे। अपने ७ तारीख के पत्र के शब्दों के अनुसार हम आप से इस विषय पर वाद विवाद करने के लिए प्रस्तुत हैं कि "राष्ट्रों के उस समुदाय से जिसे ब्रिटिश साम्राज्य कहते हैं आयरलैंड का सम्बन्ध कैसा हो, जिससे आयरिश राष्ट्रीय उद्देश्यों का मेल मिल जाय।" हम सम्राट के प्रति राज भक्ति के सिद्धान्त को केवल नाम मात्र के लिए भी किसी रूप में छोड़ने को तैयार नहीं हो सकते; क्योंकि साम्राज्य का सारा संगठन और उसकी और उसके अन्तर्गत सारी व्यवस्था इसी पर निर्धारित है। यह उस सिद्धान्त के लिए घातक होगा कि कान्फरेन्स में आप के डेलीगेट एक पूर्ण स्वतंत्र और स्वाधीन राष्ट्र के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हों। यदि आप इस माँग पर अड़ते हैं। तो हमारी और आप की कान्फरेन्स असम्भव है।

डी. लायडजार्ज

मिस्टर लायड जार्ज का तार पाकर डी वेलरा ने यह तार प्रत्युत्तर में भेजाः—

श्री मन्,

आप का अन्तिम तार अभी मिला। उसके उत्तर में मुझे केवल यही कहना है कि हमने आप का निमंत्रण ठीक उन्हीं शब्दों में स्वीकार कर लिया है जिन्हें आप अपने ७ तारीख के पत्र से पुनः उद्धृत करते हैं। हम ने आप से यह नहीं कहा है कि आप नाम मात्र के लिए भी कोई सिद्धान्त परित्याग कर दें, किन्तु आप को यह समझ लेना चाहिए कि जो कुछ हम हैं वैसा ही हम अपने को मानेंगे। अगर हमारा यह आत्म निर्णय कान्फरेन्स भंग होने का एक कारण बनती है, तो हमें खेद है, परन्तु यह असंगत प्रतीत होता है। मेरी आप के साथ कान्फरेन्स हो चुकी है। उस कान्फरेन्स में और अपने लिखित पत्र व्यवहार में मैंने कभी भी इस बात को स्वीकार करना नहीं छोड़ा कि मैं क्या था और क्या हूं। यदि इसी से आप की स्वीकृति सिद्ध होती है, तो आप हमें स्वीकार कर चुके। यदि हमारी यह इच्छा होती कि आयरलैंड के अधिकार के ठोस पदार्थ के साथ अन्तर्राष्ट्रीय विधियों के वाह्य पारिभाषिक शब्दों का एक हलका सा ढकन भी लगा दिया जाय, जैसा कि अब आपने आरम्भ कर दिया है, तो हम उन परिणामों के लाभ का दावा पेश कर चुके होते, जिनके विषय में आप को भय है कि अब हमारे प्रतिनिधियों को स्वीकार करने से उत्पन्न हो जायँगे।

आप मेरा विश्वास कीजिए, कि हमारे सामने केवल एक ही लक्ष्य है—और वह है कान्फरेन्स को सत्य और वास्तविकता के एक ऐसे अधार पर करना जिससे कान्फरेन्स के द्वारा ऐसा

परिणाम निकलना सम्भव हो जो इन दोनों द्वीपों की जनता की हार्दिक अभिलाषा है।

ईमन डी वेलरा

१८ सितम्बर को मिस्टर लायड जार्ज ने यह उत्तर भेजाः—

श्री मन्,

कल रात्रि का आप का तार मिला और मैं यह देखता हूं कि आप ने अपने इस दावे में कोई सुधार नहीं किया कि आप के डेलीगेट एक पूर्ण स्वतंत्र और स्वाधीन राष्ट्र के प्रतिनिधि के रूप में हमसे भेंट करेंगे। जब आप जुलाई में मुझ से भेंट करने आये थे, तब आपने पहले से इस प्रकार की कोई शर्त नहीं लगाई थी। उस समय मैंने आप को, अपने पत्र के शब्दों के अनुसार, "दक्षिणी आयरलैण्ड के बड़े बहुमत के निर्वाचित नेता" के रूप में निमंत्रित किया था और आपने उस निमंत्रण को स्वीकार कर लिया था। अपनी बात चीत के आरम्भ ही में मैंने आपसे कह दिया था कि हम आशा करते हैं कि आयरलैंड राज्य-सिंहासन के प्रति राज-भक्त बना रहेगा और ब्रिटिश राष्ट्र-समूह के एक सदस्य के रूप में अपना भविष्य निर्माण करेगा। हमारे प्रस्तावों का यह मूलाधार था और इसे हम उलट नहीं सकते। अब आप अपने प्रतिनिधियों के लिए जिस स्थिति की मांग कर रहे हैं वह वास्तव में उस मूलाधार का खण्डन करता है।

मैं आपके प्रतिनिधियों से उसी तरह भेंट करने को तैयार हूँ जैसा कि मैं आपसे जुलाई में मिला था, अर्थात् आपकी जनता के "चुने (Spokesmen) हुए मुखिया" के रूप में और ब्रिटिश राष्ट्रीय-समूह के साथ आयरलैंड के सम्बन्ध पर वादविवाद

करना चाहता हूँ। अपने साम्राज्य और सिंहासन की भक्ति छोड़े बिना मैं और मेरे साथी आपके प्रतिनिधियों से एक पूर्ण स्वतंत्र और स्वाधीन राष्ट्र के प्रतिनिधि मानकर भेंट नहीं कर सकते। इसलिए मुझे यह बात दोहराना आवश्यक है कि जब तक आपके १२ तारीख के पत्र का दूसरा पैराग्राफ हटा नहीं लिया जाता, तब तक हमारी आपकी कान्फरेन्स असम्भव है।

डी. लायड जार्ज

डी वेलरा का उत्तर यह था:—

श्री मन्,

हमारा यह विचार कभी नहीं था कि आप से कहें कि आप कान्फरेन्स के पहले कोई शर्त मान लें। हम आपसे यह आशा करना असंगत समझते थे कि आप पहले ही से, आयरिश प्रजातंत्र को सरकारी रूप से या गैर-सरकारी रूप से स्वीकार कर लें। ठीक उसी तरह आपका भी यह आशा करना अनुचित है कि हम, सरकारी या गैर-सरकारी रूप से, अपनी राष्ट्रीय स्थिति का आत्म-समर्पण (Surrender) कर दें। झगड़े का मुख्य कारण वास्तव में यही है कि दोनों ही पक्ष एक दूसरे की स्थिति (Position) को स्वीकार नहीं करते। और इसीलिए एक कान्फरेन्स करने की आवश्यकता है कि ऐसी बातें खोजकर निकाली जायँ और उन पर विवाद किया जाय जिनसे झगड़ा मिट जाय।

इन दोनों टापुओं की जनता में और आयरलैंड तथा ब्रिटिश राष्ट्र-समूह के राष्ट्रों में परस्पर सद्भाव और उचित सम्बन्ध की सन्धि हो जाने से हमें विश्वास है कि झगड़ा सदा के लिए समाप्त हो जायगा, दोनों जातियां शान्ति से रह सकेंगी, प्रत्येक जाति अपनी निजी उन्नति करने के साथ साथ सभ्यता की अग्रसरता में

अपना विशेष अंश अर्पित करेगी और समान सम्मिलित मामलों में स्वतंत्रता पूर्वक और मित्रता के सहयोग से काम करेगी। इस प्रकार की सन्धि की बात चीत करने के लिए दोनों जातियों के प्रतिनिधियों का मिलना परमावश्यक है। यदि आप ऐसी प्रारम्भिक शर्तें लगायेंगे जिन्हें हम अपनी राष्ट्रीय सत्ता का आत्म समर्पण समझते हैं तो कान्फ्रेंस नहीं हो सकती।

आपके अन्तिम तार से यह स्पष्ट प्रकट होता है कि यदि वर्तमान पत्र-व्यवहार जारी रहा, तो आपस का मतभेद घटने को अपेक्षा सम्भवतः बढ़ जायगा और शान्ति के उद्देश्य को उन्नति होने के बजाय उसकी अवनति होने की आशंका है। अतएव हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप यह बतलाइए कि क्या आपका ७ सितम्बर का पत्र हमसे यह चाहता है कि हम आत्म समर्पण कर दें या वह दोनों ओर के लोगों के लिए एक स्वतन्त्र कान्फरेन्स का निमंत्रण है जिसमें यदि समझौता न हो, तो दोनों पक्ष बन्धन से मुक्त रहेंगे। यदि पिछली बात है, तो हम आपके निमंत्रण को हृदय से स्वीकार करते हैं और हमारे मुकर्रर किये हुए डेलीगेट आपकी गवर्नमेंट के प्रतिनिधियों से किसी भी समय निकट भविष्य में जब आप चाहें, भेंट करने को तैयार हैं।

ईमन डी वेलरा

२९ सितम्बर को मिस्टर लायडजार्ज ने 'ग्रेटलाक' से यह उत्तर भेजा:—

श्रीमन्,

जब से इनवर्नेस की कान्फरेंस में आपको अपने प्रतिनिधि भेजने का निमंत्रण दिया गया था तब से हममें और आपमें जो पत्र व्यवहार हुआ है उस पर सम्राट की सरकार ने पूर्ण रूप से

और गम्भीरता के साथ विचार किया है। शान्ति के लिए उनकी प्रबल इच्छा होते हुए और आपके अन्तिम पत्र से मेल की अधिक ध्वनि प्रकट होते हुए भी, वे इस पत्र व्यवहार के आधार पर कान्फरेंस में सम्मिलित नहीं हो सकते। इसके विपरीत आपने व्यक्तिगत रूप से जो विश्वास दिलाया है उसकी वे सराहना करते हैं। किन्तु भविष्य में यह तर्क किया जा सकता है कि उपरोक्त आधार पर निर्धारित कान्फरेंस को स्वीकार करने से ब्रिटिश सरकार ने एक ऐसे सिद्धान्त को मान लिया था जो उन्हें कदापि न मानना चाहिए था। इस बात के सम्बंध में वह हर प्रकार की आशंका से अपनी रक्षा करेगी अब इस विषय पर तर्क युक्त और विवरण पूर्ण अधिक पत्र व्यवहार से कोई और लाभ होता नहीं मालूम देता। जिस स्थिति (Position) को सम्राट की सरकार ने ग्रहण किया है वह ब्रिटिश साम्राज्य के अस्तित्व के लिए आवश्यक है, अतः वे उसे बदल नहीं सकते। किन्तु तो भी मैं और मेरे सहकारी बड़े इच्छुक हैं कि आपके प्रतिनिधियों से सहयोग करके एक बार पुनः पूर्ण प्रयत्न करें कि समझौते की प्रत्येक सम्भावना को आपस में वादविवाद करके ढूंढ़ निकालें। जो प्रस्ताव हमने उपस्थित किये हैं उनको सारे संसार ने इस बात का प्रमाण मान लिया है कि मेल मिलाप और समझौते के लिए हमारे प्रयत्न केवल मात्र शब्द नहीं हैं। हम अनुभव करते हैं कि जिस समझौते पर पहुँचने की हमारी हार्दिक इच्छा है, वह कान्फरेंस से प्राप्त होगा, पत्र-व्यवहार से नहीं। अतएव लण्डन में ११ अक्टूबर को एक कान्फरेंस के लिए हम एक नवीन निमंत्रण भेजते हैं। इसमें हम आपके प्रतिनिधियों से जो आपकी जनता के (Spokesmen) मुख्य पात्र हैं भेंट करेंगे ताकि मिलकर ऐसा मार्ग निश्चित करें जिससे

ब्रिटिश साम्राज्य के राष्ट्रों के समूह के साथ आयरलैंड के सम्बन्ध और उसकी राष्ट्रीय भावनाओं में मेल बना रहे।

डी लायड जार्ज

३० सितम्बर को डी वेलरा ने लण्डन की कान्फरेन्स के मिस्टर लायड जार्ज का निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

मेन्शन हाउस, डबलिन

३० सितम्मर १९ २१

माननीय डी लायड जार्ज

गेरलाक

श्रीमन्,

११ अक्टूबर को लण्डन में कान्फरेन्स के लिए आप का निमंत्रण मिला, जिसका उद्देश्य होगा "ऐसे उपायों को ढूंढ़ कर निकालना जिनसे ब्रिटिश साम्राज्य के राष्ट्रों के समूह के साथ आयरलैंड के सम्बन्ध में और उसकी राष्ट्रीय भावनाओं में मेल बना रहे।"

हमने परस्पर अपनी स्थितियों का वर्णन कर दिया और उन्हें समझ लिया। हम इस बात से सहमत हैं कि समझौते का व्यहारिक और आशा जनक मार्ग कान्फरेन्स है न कि पत्र व्यहार। हम निमंत्रण को स्वीकार करते हैं और निश्चित तारीख पर हमारे प्रतिनिधि आप से लण्डन में भेंट करेंगे "ताकि व्यक्ति गत वाद विवाद से समझौते का प्रत्येक सम्भव मार्ग ढूंढ़ निकाला जाय।"

आप का विश्वसनीय

ईमन डी वेलरा

कान्फरेन्स के एक रोज़ पहले डी वेलरा ने आयरिश जनता के नाम निम्न लिखित घोषणा प्रकाशित की, जिसमें कई वाक्य बड़े मार्के के और महत्वपूर्ण हैं:—

नागरिक भाइयो! जिस कान्फरेन्स में राष्ट्र के सच्चे प्रतिनिधि ब्रिटिश गवर्नमेंट के प्रतिनिधियों के साथ भाग लेने वाले हैं, उसका देश के सारे भविष्य पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा और सम्भव है कि उससे देश का मार्ग निश्चित हो जाये। उससे जाति के प्रत्येक भाग का जीवन ओर भाग्य प्रभावित होगा। पिछले भेद भावों को भूल कर इस समय समस्त आयरलैंड निवासियों का यह कर्तव्य है और इसी में उनका कल्याण है कि वे सब एक साथ आयरलैंड के लिए दृढ़ रहें। हमारे प्रतिनिधि अपने उत्तर दायित्व को भली प्रकार अनुभव करते हैं। उन्हें यह और अनुभव करा देना चाहिए कि सारे राष्ट्र का संयुक्त रूप से उनमें पूर्ण विश्वास है और बिना हिच किचाहट के सब उनकी सहायता करेंगे। हम में से प्रत्येक व्यक्ति की तरह उनकी भी यह हर्दिक इच्छा है कि ब्रिटेन के अधिकारियों के साथ आयरिश जनता का यह अधार्मिक युद्ध सुखांत रूप से समाप्त हो जाये। किन्तु वे यह अनुभव करते हैं कि इस युद्ध को समाप्त करने का अन्तिम कार्य न तो उनकी इच्छा पर निर्भर है और न राष्ट्र की इच्छा पर। हमारी ओर से तो यह संघर्ष उस अधिकार के लिए रहा है, जो स्वाभविक रूप से अटल है, अतः उसे छोड़ने की बात या उसके सम्बन्ध में समझौता (Compromise) करने की बात हो ही नहीं सकती। जो शान्ति स्वाभविक रूप से इस संघर्ष को समाप्त कर सकती है, वह केवल वह शान्ति होगी जो राष्ट्र के अधिकार के अनुकूल हो और ऐसी स्वतंत्रता दिलाती हो जो जो उसे कष्ट और त्याग के योग्य हो जो उसके

प्राप्त करने के लिए सहन किया गया है। ऐसी शान्ति प्राप्त करना सरल नहीं हैं। जो मांग आयरलैंड के अधिकार के विरुद्ध रही है उस पर शताब्दियों के रक्त पात में बड़ी निर्दयता से जोर दिया जाता रहा है। इस बात की सम्भावना नहीं प्रतीत होती कि अब वह मांग छोड़ दी जायगी। शान्ति और उक्त मांग बे मेल हैं। प्रतिनिधि इस बात को जानते हैं कि उनकी बुद्धिमत्ता और उनकी योग्यता ही से काम न चलेगा। अतएव वे मूर्खता पूर्ण आशाओं का स्वप्न नहीं देखते, और न देश को ही ऐसे स्वप्न देखना चाहिये। जो शान्ति इस संघर्ष को समाप्त करेगी वह नेताओं की चतुरता और राजनितिज्ञता से नहीं प्राप्त होगी किन्तु वह प्राप्त होगी एक ऐसे सङ्गठित राष्ट्र के दृढ़ निश्चय से, जिसने यह पक्का इरादा कर लिया हो कि अधिकार युक्त स्वतंत्रता को छोड़ने की अपेक्षा मौत स्वीकार करना उचित है। जिन शक्तियों का सामना हमारे प्रतिनिधियों को करना होगा उनपर विजय प्राप्त करने के लिए हमारी जनता के उपर्युक्त निश्चय के अतिरिक्त और कोई दूसरा उपाय नहीं है। आयरलैंड ने अपनी वर्तमान स्थिति अपनी वीरता पूर्ण त्याग की सहनशक्ति ही की बदौलत प्राप्त की है। भविष्य की भीषणता के भय और आगामी त्याग के डर के कारण यदि वह डिग गया या एक क्षण के लिए भी अस्थिर हो गया, तो फिर सर्व नाश हो जायगा। जो भय बलपूर्वक उसे एक आवश्यक बात में दबा लेगा, दूसरी बात में दबाने के लिए उसी का सहारा लिया जायगा और फिर तीसरी में, यहां तक कि सब कुछ चला जायगा। आवश्यकता वश आयरलैंड को अपने वर्तमान स्थान पर डटे रहना चाहिए। अधिकार की चट्टान पर अटल और निर्भय खड़े रहो,

तुमसे कोई चालाकी नहीं कर सकता और तुम्हारी हार नहीं हो सकती।

अतः यदि कान्फ्रेंस में बात चीत के समय राष्ट्र के नैतिक आचरण में एक अणु मात्र भी कमी हुई, तो वह घातक होगी; और जो व्यक्ति अपने विचार या कार्य से इस कमी को करता है, वह शान्ति का शत्रु है—वह दोनों द्वीपों की जनता का दुशमन है—वह मनुष्यता के उद्देश का भी शत्रु है, क्योंकि इस उद्देश की अग्रसरता, पशुबल पर, अधिकार की प्रत्येक विजय के साथ लगी हुई है। हमारी विरोधी शक्ति हमको हतोत्साह करने, हममें फूट डालने और हमको निर्बल करने के लिए अपनी प्रत्येक चाल से काम लेगी। हम सब को सचेत रहना चाहिए। जिस एकता की आवश्यकता है वह तभी भली प्रकार स्थिर रहेगी, जब हम उन लोगों में अटल श्रद्धा रखेंगे जो राष्ट्र की ओर से कार्य करने के लिए नियुक्त किये गये हैं। इस विश्वास का प्रमाण यह होगा कि हम वैसा ही नियम पालन करते रहें जैसा कि अब तक करते रहे हैं। इसी बात की मैं आपसे अपील करता हूं।

ईमन डी वेलरा

डबलिन, १० अक्टूबर १९२१

डी वेलरा ने ये प्रारम्भिक पत्र व्यवहार और बात चीत जिस योग्यता से की उसके लिए उसे संसार के समस्त भागों से बधाइयां मिलीं।

चूंकि कान्फरेन्स के सामने काम अधिक था; अतः जितनी जल्दी हो सकता था, उसका कार्य शीघ्रता पूर्वक आगे बढ़ने लगा। ऐसे कई अवसर आये जब यह प्रकट होने लगा कि

अब कान्फ़रेन्स भंग हो जायगी। भंग होने का प्रथम लक्षण उन बातों से प्रकट हुआ जो 'पोप बेनीडिक्टर १५ वें' और 'किंग जार्ज ५ वें' के बीच में तार द्वारा हुईं।

पोप ने किंग जार्ज को यह तार भेजा:—

एंगलो-आयरिश सन्धि-चर्चा के प्रारम्भ होने से हम बहुत प्रसन्न हैं और अपने अन्तस्तल से ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह आप को बरकत दे तथा पीढ़ियों से होने वाले वाद-विवाद को समाप्त करने पर आपको अत्यन्त आनन्द और अमिट यश प्रदान करे।

किंग जार्ज ने पोप को यह तार भेजा:—

मैंने बड़े आनन्द से आप का सन्देश प्राप्त किया। मैं अपने हृदय से उस प्रार्थना में सम्मिलित होता हूं कि जो कान्फरेन्स इस समय लण्डन में हो रही है वह आयरलैंड के अभावों का स्थायी समझौता करा दे और मेरी प्रजा के लिए शान्ति और सुख का एक नया युग आरम्भ कर दे।

सम्राट के उत्तर से जो भाव प्रकट होता था उसने डी वेलरा को बाध्य किया कि वह पोप को यह तार भेजेः—

आप ने जो सन्देश ग्रेट ब्रिटन के सम्राट को भेजा था उसे आयरलैंड की जनता ने पढ़ा। आप ने जिस पवित्र भाव से प्रेरित होकर उसके कल्याण की कामना प्रकट की है उसका वह आदर और सम्मान करती है। मैं उसकी ओर से आप के प्रति कृतज्ञता अर्पित करता हूँ। आयरिश जनता को विश्वास है कि किंग जार्ज की ओर से उत्तर भी गया है। खयाल है कि इस उत्तर की गोल मोल बातें आप को ऐसे भ्रम में डालेंगी, जैसा कि वे किसी अनभिज्ञ व्यक्ति को डाल सकती हैं और आप को विश्वास हो जायगा कि

आयरलैंड 'में" कोई कष्ट है अथवा आयरलैंड के लोग ब्रिटिश सम्राट के भक्त हैं।

आयरलैंड की जनता के नियम पूर्वक निर्वाचित प्रतिनिधियों के द्वारा आयरलैंड की पूर्ण स्वतंत्रता की सरकारी रूप से घोषणा कर दी गई है और बाद में जनता का मत ले कर उस घोषणा की पुष्टि कर दी गई है। कष्ट आयरलैंड और ब्रिटन के बीच में है और उसका मूल कारण इस बात में है कि ब्रिटेन के अधिकारियों ने आयरलैण्ड पर अपनी इच्छा मढ़ने का प्रयत्न किया और पशुबल के द्वारा उसकी जनता की वह स्वतंत्रता अपहरण करनी चाही, जो उसका जन्म सिद्ध अधिकार है और प्राचीन मौरूसी हक़ है। हम ब्रिटेन की जनता के साथ शान्ति और मित्रता से रहने के वैसे ही इच्छुक हैं जैसे कि अन्य लोगों के साथ। दमन और बलिदान के बीच में जिस दृढ़ता ने अपने बुजुर्गों के धर्म के प्रति हमारी जनता की संलग्नता वास्तविक रूप से प्रमाणित की है, वही संलग्नता उनकी राष्ट्रीय स्वतंत्रता की वास्तविकता को प्रमाणित करती है। कभी कोई विचार इसको त्याग करने केलिए उन्हें उकसा नहीं सकता।

ईमन डी वेलरा

मैन्शन हाउस, डबलिन, २० अक्टूबर १९ २१

डी वेलरा के तार की आवश्यकता उस तूफान से जांची जा सकती है जो अंगरेजी प्रेस में उसके प्रकाशित होने से उत्पन्न हो गया था। आयरलैण्ड के भूत पूर्व ब्रिटिश चीफ सेक्रेटरी, मिस्टर आयन मेक फर्सन ने कहा कि वह तार बड़ा असम्भव और बुरी तरह द्वेष से भरा हुआ है और मिस्टर लायड जार्ज ने कहा कि उससे शान्ति कान्फरेन्स का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है।

शान्ति कान्फरेन्स के परिणाम की प्रतीक्षा करने के साथ साथ डी वेलरा ने 'क्लेर' और 'मेलत्रे' नामक स्थानों में वालन्टियर दलों का निरीक्षण किया। 'लेमिक' नामक स्थान पर उसे "नगर की स्वतंत्रता" की उपाधि प्रदान की गई।

प्रतिष्ठा की सब से बड़ी पदवी उसके लिए यह थी कि वह आयरलैण्ड के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय का 'चान्सलर' मुकर्रर किया गया। शिक्षित व्यक्ति होने के कारण यह पद उसे बहुत प्रिय था। इस पद को स्वीकार करते हुए मान पत्र के उत्तर में डी वेलरा ने कहा कि एक राष्ट्र के विश्वविद्यालय को अपने रूप के अनुरूप होने के लिए यह आवश्यक है कि उसमें राष्ट्र के जीवन की लहरें हिलोरें मारती हों, राष्ट्र की सजीव आत्मा की अग्नि प्रज्ज्वलित रहती हो, वह अपनी शक्ति-दायिनी किरणों की प्रभा का प्रतिबिम्ब राष्ट्र पर डालता हो और सारी मनुष्य जाति को अपनी उष्णता और प्रकाश से देदीप्यमान करता हो।

उसने एक दूसरे स्थान पर कहा था कि इन आदर्शों की पूर्ति आयरिश भाषा के माध्यम द्वारा बड़ी उत्तमता से हो सकती है। "यदि मुझसे पूछा जाय कि तुम स्वतंत्रता विहीन भाषा लोगे, या भाषा विहीन स्वतंत्रता, तो मैं भाषा विहीन स्वतंत्रता का लेना पसंद न करूँगा। "उपर्युक्त वाक्य डी वेलरा ने आयरिश भाषा में गेलिकलीग के एक अधिवेशन में कहे थे। इस वाक्य का कारण उसने अपने एक सन्देश में यह बतलाया था, कि "राष्ट्रीय भाषा की रक्षा करना वर्तमान पीढ़ी का मुख्य कर्तव्य है। अपने राज्य को पुनः प्राप्त करने में तो किंचितमात्र भी संदेह नहीं है, जल्दी हो या देर में आयरलैंड अपनी वह पूर्ण स्वतंत्रता अवश्य प्राप्त कर लेगा जिसका वह किसी समय आनन्द उठा चुका है। यदि हम

असफल भी हुए तो आने वाली दूसरा पीढ़ी सफल होगी । किन्तु भाषा ? इसकी तो हमें ही रक्षा करनी चाहिए, नहीं तो वह सदा के लिए जाती रहेगी । क्या हम जो अपने को आने वाली सन्तानों की स्वतंत्रता के लिए बलिदान करने को तैयार हैं, उन सन्तानों से वह वस्तु छीन लेंगे जिसकी उन्हें हृदय से चाह होगी, इसपर तो उन्हें अपनी स्वतंत्रता के ताज की तरह सबसे अधिक गर्व होगा । क्या हम वह कार्य करने वाले हैं जिसके लिए वे सदा रोया करें और जिसे वे स्वयं कभी पुनः प्राप्त न कर सकें ? उनका सुन्दर आयरिश भाषा, उनकी निजी विशेषता का चिन्ह, उनकी पैत्रिक सम्पत्ति है । लण्डन कान्फरेन्स के विषय में दिसम्बर के प्रारम्भ में बड़ी बेचैनी फैलने लगी और अनुमान होने लगा कि जो शर्तें ब्रिटिश गवर्मेंट ने पेश की हैं वे डेलएरन के मंत्रि मण्डल के अधिकतर सदस्यों को स्वीकार नहीं हैं । किन्तु शान्ति के लिए यथा सम्भव, भर सक प्रयत्न कर ने के अभिप्राय से ऐसे प्रतिपक्षी-प्रस्ताव (Counter-proposals) पुनः भेजे गये जिसमें अधिक से अधिक रियायत जो आयरलैंड कर सकता था वह दर्ज थे । इसके उपरान्त ही आयरलैंड में यह समाचार आये कि संधि चर्चा भंग हो गई और सोमवार ५ दिसम्बर ही को आयरिश प्रजातंत्र सेना को कमर कसने की आज्ञा दे दी गई ।

६ दिसम्बर को प्रातः काल ही ब्रिटिश प्रस्तावों पर समस्त अधिकार-युक्त प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर कर दिये । जब डी वेलरा ने यह समाचार सुना तब वह हर्ष से कहने लगा कि, "हमारी विजय हो गई ।" प्रतिनिधियों को मंत्रि मण्डल की जो हिदायतें थीं उसकी तीसरी वाक्यावलि के अनुसार उनका यह काम था कि वे हस्ताक्षर होंने वाले संधि के मसविदे की पूरी प्रतिलिपि डब्लिन भेजें और उत्तर की प्रतीक्षा करें । जब ऐसा

नहीं हुआ तो डी वेलरा ने स्वभावतः यह मान लिया कि डेलएरन के प्रतिपक्षी-प्रस्ताव स्वीकार कर लिए गये—अतः वह प्रसन्न हुआ किन्तु शीघ्र ही उसकी आशाओं पर पानी फिर गया। जब सन्धिका पूरा मविदा प्राप्त हुआ, तो मालूम हुआ कि उसमें कुछ ऐसे अंश (clauses) हैं जो आयरिश प्रजातंत्र के अस्तित्व को नाश करने वाले हैं। अधिकार युक्त-प्रतिनिधियों के स्वदेश लौटने पर डेलएरन के मंत्रि मण्डल की एक लम्बी मीटिंग हुई और जिस मत भेद की अफवाह थी वह डी वेलरा के मित्रों के नाम निम्न लिखित चिट्ठी से पक्का हो गयाः—

आयरिश जनता के नामः—

मित्रों—ग्रेटब्रिटेन के साथ होने वाली संधि के मसविदे को आपने समाचार पत्रों में पढ़ लिय होगा। पिछले तीन वर्षों के लगातार चुनाव के द्वारा राष्ट्र के अधिक बहुमत ने जिस इच्छा को प्रगट किया था, इस समझौते की शर्तें उसके बिल्कुल विरुद्ध हैं। मैं अपना यह कर्तव्य समझता हूँ कि आप को तत्काल सूचना दे दूँ कि मैं, न तो डेलएरन को और न देश को इस सन्धिको स्वीकार करने को शिफ़ारिश कर सकता हूँ। मेरे इस विचार का समर्थन करने वाले गृह-सचिव और रक्षा मंत्री हैं (आस्टिन स्टेक और केथल बूगा)। डेलएरन का एक आम अधिवेशन अगले बुधवार को ११ बजे किया जा रहा है, मेरा जनता से यह कहना है कि इस बीच में वह वैसी ही नियम बद्ध बनी रहे जैसी की वह अब तक रही है। यद्यपि मंत्रि मण्डल के सदस्यों के मतों में भेद है किन्तु वे सार्वजनिक सेवायें बराबर करने के लिए प्रस्तुत हैं। राजनीतिक परिस्थिति से सेना पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता अतः आशा है वह जिस अधिकार और आज्ञाओं के अधीन थी वैसी ही बनी रहेगी। हमारी जनता की सब से बड़ी

परीक्षा का समय आगया है। बिना कटुता और बिना ईर्षा-द्वेष के हमें योग्यता के साथ उसका सामना करना चाहिए। अपने राजनीतिक मत भेदों को हल करने का एक विशेष व्यवस्थित मार्ग है—हमें उस मार्ग का परित्याग नहीं करना चाहिए। इस विषय में मंत्रि मण्डल का आचरण समस्त राष्ट्र के लिए एक नमूना होना चाहिए। वन्दना।

ईमन डी वेलरा

लण्डन में जिस सन्धि पर हस्ताक्षर हुए थे उसकी शर्तें यह थीं:—

१

राष्ट्रों के उस समूह में जिसे ब्रिटिश साम्राज्य कहते आयरलैण्ड का भी वही व्यवस्थित स्थान होगा जो केनाडा के उपनिवेश, आस्ट्रेलिया के राष्ट्र समूह, न्युजीलेंड के उपनिवेश और दक्षिण अफ्रीका की युनियन को प्राप्त है। उसको अपनी एक पार्लिमेंट होगी जिसे आयरलैंड की शान्ति, व्यवस्था और उत्तम शासन के लिए कानून बनाने का अधिकार होगा, और उसके कार्य सञ्चालक वह होंगे जो उस पार्लिमेंट के प्रति उत्तर दायी होंगे और अब आयरलैंड आयरिश स्वतंत्र राष्ट्र के नाम से प्रसिद्ध होगा।

२

नीचे लिखे बन्धनों के साथ, आयरिश फ्री स्टेट का स्थान साम्राज्य की पार्लिमेंट और सरकार के प्रति अथवा अन्य प्रकार से, वैसा ही होगा जैसा कि केनाडा के उपनिवेश का है। ताज या ताज के प्रतिनिधियों और साम्राज्य की पार्लिमेंट का जो सम्बन्ध केनाडा के उपनिवेश के साथ है, वही सम्बन्ध (वही कानून, वही व्यवहार और वही संगठित व्यवस्था) आयरिश फ्री स्टेट के साथ होगा।

३

आयरलैंड में ताज के प्रतिनिधि उसी रीति से मुकर्रर किये जायँगे जैसे केनाडा के गवर्नरजनरल । इनकी नियुक्ति में भी एक सी ही परिपाटी वर्ती जायगी।

४

आयरिश फ्री स्टेट की पार्लिमेंट के सदस्यों की शपथ का रूप यह होगा:—

मैं........., शुद्ध हृदयता पूर्वक शपथ करता हूं कि मैं आयरिश फ्री स्टेट की संगठन-व्यवस्था (constitution) के प्रति जो नियम पूर्वक स्थापित हुई है, सच्चा भक्त रहूंगा, और मैं सम्राट किंग जार्ज पंचम और कानूनन उनके वारिस और उत्तराधिकारी के प्रति राज-भक्त रहूंगा, क्योंकि मैं आयरलैंड का ग्रेटब्रिटेन के साथ समान नागरिक अधिकार रखता हूं और इसलिए भी कि आयरलैंड ब्रिटिश राष्ट्र-समूह के राष्ट्रों से सम्बन्धित है और उसका सदस्य है।

५

आयरिश फ्री स्टेट युनाइटेड किंगडम के उस पब्लिक ऋण की जिम्मेदारी लेगा जो इस समय उसे देना है और युद्ध की जो पेन्शनें उसे अभी अदा करनी हैं उनका भी हिस्से रसदी तथा न्याय पूर्ण रीति से उत्तरदायी होगा। किन्तु इसके साथ ही आयरलैंड के उचित अधिकारों का ध्यान रखा जायगा और उसकी प्रतिपक्षी मांगों पर पूर्ण विचार किया जायगा और यदि रकम के सम्बन्ध में मतभेद होगा, तो रकम को एक या अधिक स्वतंत्र व्यक्तियों की पंचायत निश्चित करेगी और ये व्यक्ति ब्रिटिश साम्राज्य के नागरिक होंगे।

६

जब तक ब्रिटिश और आयरिश सरकारों में ऐसा समझौता न हो जाय जिसके द्वारा आयरिश फ्री स्टेट अपने समुद्री तट की रक्षा करने का भार आप ग्रहण करे, तब तक ग्रेटब्रिटेन और आयरलैंड की समुद्री रक्षा श्रीमान सम्राट की सेना द्वारा की जायेगी। किन्तु इससे आयरिश फ्री स्टेट के ऐसे जहाज़ तैयार करने में, उन्हें बनाये रखने में कोई बाधा न उपस्थित होगी, जो उसके राजस्व या मछली की आकरों (Fisheries) की रक्षा के लिए आवश्यक होंगे।

इस धारा की उपर्युक्त शर्तों पर आज की तारीख से पांच वर्ष के उपरांत ब्रिटिश और आयरिश सरकारों के प्रतिनिधियों की एक कान्फरेन्स में इस अभिप्राय से विचार होगा कि आयरलैंड अपने समुद्री किनारे की रक्षा के भार का एक अंश स्वयं ग्रहण करे।

७

आयरिश फ्री स्टेट की गवर्नमेंट श्रीमान सम्राट की सेना को यह देगी:—

(अ) शान्ति के समय में ऐसे बन्दरगाह और दूसरी सुविधाएं, जो इसके साथ की परिशिष्ट में लिखी हुई हैं या अन्य ऐसी सुविधाएं जो समय समय पर ब्रिटिश गवर्नमेंट और आयरिश फ्री स्टेट की गवर्नमेंट में तय होती रहेंगी; और

(ब) युद्ध के समय में या किसी विदेशी शक्ति से प्रेम सम्बन्ध विच्छेद होने पर ऐसे बन्दरगाह और दूसरी सुविधाएं जिनकी उपर्युक्त रक्षा के लिए ब्रिटिश गवर्नमेंट को आवश्यकता हो।

८

अस्त्र-शस्त्र की अन्तर्राष्ट्रीय मर्यादा के सिद्धान्त का पालन करने के अभिप्राय से यदि आयरिश फ्री स्टेट की सरकार अपनी रक्षा के लिए एक सेना स्थापित करती है और बनाये रखती है, तो उस सेना का आकार और संख्या ब्रिटिश सेना से उस अनुपात में न बढ़ेगी जो आयरलैंड और ग्रेटब्रिटेन की जन-संख्या में है।

९

ग्रेटब्रिटेन और आयरिश फ्री स्टेट के बन्दरगाह परस्पर एक दूसरे देश के जहाजों के लिए दस्तूर के अनुसार समुद्री चुङ्गी या अन्य कर देने पर स्वतंत्रता पूर्वक खुले रहेंगे।

१०

आयरिश फ्री स्टेट की गवर्नमेंट प्रतिज्ञा करती है कि वह उन जजों, अधिकारियों, पुलिस सेना के सदस्यों और अन्य पब्लिक सेवकों को, जिन्हें वह अलग करेगी या जो गवर्नमेंट के परिवर्तित होने के कारण अवसर ग्रहण करेंगे ऐसी शर्तों के साथ उचित मुआविजा (compensation) देगी जो सन १९२० के एक्ट की शर्तों से कम हितकर न हों।

किन्तु वह समझौता सहायक पुलिस फ़ोर्स के सदस्यों के लिए या ग्रेटब्रिटेन में भर्ती किये हुए रायल आयरिश कान्सटेबुलरी के उन व्यक्तियों के लिए न लागू होगा, जो आज की तारीख से ठीक दो वर्ष पहले तक भर्ती हुए होंगे। इस प्रकार के लोगों को जो मुआविजा या पेन्शनें मिलने वाली होंगी उनको चुकाने का उत्तर दायित्व ब्रिटिश गवर्नमेंट अपने ऊपर लेगी।

११

इस सन्धि-पत्र को स्वीकार करने के लिए पार्लिमेंट के एक्ट को पास हुए जब तक एक मास व्यतीत न हो ले तब तक

आयरिश पार्लमेंट और उसकी सरकार के अधिकार उत्तरी आयरलैंड पर लागू न होंगे, और जहां तक उत्तरी आयरलैंड का सम्बन्ध है, आयरलैंड की गवर्नमेंट के सन १९२० वाले एक्ट की धाराएं पूर्ण रूप से लागू रहेंगी और कोई चुनाव ऐसे मेम्बरों को चुनने के लिए न होगा, जो उत्तरी आयरलैंड के चुनावक्षेत्रों की ओर से आयरिश फ्री स्टेट की पार्लिमेंट में भेजे जायगे, जब तक उत्तरी आयरलैंड की पार्लमेंट के दोनों हौउसों से ऐसा प्रस्ताव न पास हो जाय, जो कथित एक मास के समाप्त होने के पहले ही इस प्रकार के चुनावों के होने का समर्थन करता हो।

यदि कथित एक मास के समाप्त होने के पहले ही उत्तरी आयरलैंड की पार्लीयामेंट के दोनों हौउसों की ओर से ऊपर कहे अभिप्राय से सम्राट के समक्ष एक आवेदन उपस्थित किया जायगा, तो आयरिश फ्रीस्टेट की पार्लिमेंट और गवर्नमेंट के अधिकार उत्तरी आयरलैंड पर लागू न होंगे और सन् १९२० के गवर्नमेंट आफ आयरलैंड एक्ट की धाराएं (और वे धाराएं भी जो आयरलैण्ड की कौंसिल के सम्बन्ध में हैं), जहां तक उत्तरी आयरलैण्ड से उनका सम्बन्ध है, पूर्ण रूप से अपना अधिकार और प्रभाव रखेंगी। और यह संधि-पत्र आवश्यक सुधारों के साथ लागू होगा।

किन्तु शर्त यह है कि यदि ऐसा आवेदन-पत्र पेश किया गया, तो तीन व्यक्तियों का एक कमीशन नियुक्त किया जायगा—

एक कमिश्नर आयरिश फ्री स्टेट की गवर्नमेंट द्वारा नियुक्त किया जायगा।

एक कमिश्नर उत्तरी आयरलैण्ड की गवर्नमेंट द्वारा नियुक्त किया जायगा और,

आर्थिक और भौगोलिक परिस्थितियों का विचार करते हुए, यह

कमीशन, यथा सम्भव लोगों की इच्छानुसार, उत्तरी आयरलैण्ड और शेष आयरलैण्ड की सीमा निश्चित करेगा, १९२० के गवर्नमेंट आफ आयरलैण्ड एक्ट तथा इस सन्धि-पत्र की उद्देश्य-पूर्ति के लिए उत्तरीय आयरलैण्ड की सीमा वही होगी जो उक्त कमीशन निश्चित करेगा।

१३

पिछली अन्तिम धारा की उद्देश्य-पूर्ति के लिए, १९२० के गवर्नमेंट आफ आयरलैण्ड एक्ट के अनुसार आयरिश फ्री स्टेट की पार्लिमेंट बन जाने के उपरान्त दक्षिणी आयरलैण्ड की पार्लिमेन्ट का, आयरलैण्ड की कौंसिल के लिए सदस्य चुनने का अधिकार उक्त पार्लिमेन्ट द्वारा प्रयोग किया जायगा।

१४

पूर्वोक्त एक मास के समाप्त होने पर, यदि कोई ऐसा आवेदन पत्र नहीं पेश किया जाता, जिसका वर्णन १२ वीं धारा में है, तो उत्तरी आयरलैंड के सम्बन्ध में, उत्तर आयरलैंड की पार्लिमेंट और गवर्नमेंट उन अधिकारों का प्रयोग करेगी जो उन्हें १९२० के गवर्नमेंट आफ आयरलैंड एक्ट के अनुसार मिले हैं। किन्तु उक्त एक्ट के अनुसार जिन विषयों के सम्बन्ध में कानून बनाने का अधिकार उत्तरी आयरलैंड की पार्लिमेंट को नहीं है (उन विषयों को सम्मिलित करते हुए जो कथित एक्ट के अनुसार आयरलैंड की कौंसिल के अधिकारों की सीमा के भीतर हैं) उनके सम्बन्ध में आयरिश फ्रीस्टेट की पार्लिमेंट औ गवर्नमेंट को वेही अधिकार प्राप्त होंगे जो शेष आयरलैंड को होंगे, परन्तु वे उन शर्तों के अधीन होंगे जो आगे लिखी हुई विधि से निश्चित होंगी।

१५

आज की तारीख के उपरान्त किसी भी समय उत्तरी आयरलैंड की गवर्नमेंट और दक्षिण आयरलैंड की अस्थायी गवर्नमेंट जो इस के पश्चात बनेगी, ऐसी शर्तों पर वाद विवाद करने के लिए मिल सकती हैं, उनके सम्बन्ध में पिछली अन्तिम धारा लागू होगी, यदि कोई ऊपर कहा हुआ आवेदन-पत्र न पेश किया जाय। वे शर्तें ये होंगी—

(ए) उत्तरी आयरलैंड की संरक्षता के सम्बन्ध के सुरक्षित अधिकार। (safeguards)

(बी) उत्तरी आयरलैंड में लगान एकत्रित करने के सम्बन्ध के सुरक्षित अधिकार।

(सी) उत्तरी आयरलैंड के उद्योग और व्यवसाय को प्रभावित करने वाली आयात और निर्यात की चुंगी के सम्बन्ध के सुरक्षित अधिकार।

(डी) उत्तरी आयरलैंड में अल्प संख्यकों के सुरक्षित अधिकार।

(ई) उत्तरीय आयरलैंड और आयरिश फ्री स्टेट के आर्थिक सम्बन्धों का समझौता।

(एफ) उत्तरीय आयरलैंड में स्थानीय सेना (Local militia) की स्थापना तथा अधिकार, और आयरिश फ्री स्टेट की और उत्तरीय आयरलैंड की संरक्षिणी सेनाओं का परस्पर सम्बन्ध।

और यदि उपर्युक्त प्रकार की किसी मीटिंग में कुछ शर्तें तय हो जायँगी, तो वे वैसा ही प्रभाव रखेंगी मानों वे वर्तमान शर्तों में सम्मिलित हैं। इन शर्तों के अधीन आयरिश फ्री स्टेट की पार्लिमेंट और गवर्नमेंट उत्तरीय आयरलैंड में १४ वीं धारा के अनुसार अपने अधिकारों का प्रयोग करेंगी।

१६

न तो आयरिश फ्री स्टेट की पार्लिमेंट और न उत्तरीय आयरलैंड की पार्लिमेंट, ऐसा कोई कानून बनयेंगी, जिससे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से,

किसी धर्म को स्वतंत्रता पूर्वक वर्ताव करने में सहायता, या रोक, या बन्धन हो; या धार्मिक विश्वास या धार्मिक पद के कारण कोई विशेषता प्रदान की जाय या कोई अयोग्यता लगाई जाय; या

बालकों के किसी ऐसे स्कूल में जिसे सार्वजनिक धन से सहायता मिलती हो पढ़ने के अधिकार पर यह बन्धन लगाया जाय कि उसको उक्त स्कूल में दी जाने वाली धार्मिक शिक्षा ग्रहण करना अनिवार्य है, या

भिन्न भिन्न धार्मिक सम्प्रदायों द्वारा संचालित स्कूलों को राज्य की ओर से आर्थिक सहायता देने के सम्बन्ध में भेदभाव करना; या किसी धार्मिक सम्प्रदाय से अथवा किसी शिक्षा संस्था से कोई जायदाद अलग करना, सिवा सार्वजनिक उपयोगिता के अभिप्राय से और पुरस्कार देकर।

१७

आज की तारीख से लेकर उस समय तक के लिए जब तक आयरिश फ्री स्टेट की पार्लमेंट और व्यवस्था (constitution) न बन जाये, दक्षिणी आयरलैंड के शासन का अस्थायी प्रबन्ध करने के लिए पार्लिमेंट के उन मेम्बरों की एक मीटिंग बुलाने का तुरन्त उपाय किया जायगा, जो १९२० के गवर्नमेंट आफ आयरलैंड एक्ट के उपरान्त दक्षिणी आयरलैंड के निर्वाचन क्षेत्रों से चुने गये हैं, और उनसे एक अस्थायी सरकार बनाने के लिए कहा जायगा। और ब्रिटिश गवर्नमेंट उक्त अस्थायी

सरकार को सारे अधिकार और अपने कर्तव्यों को पूरा करने की मशीनरी तुरन्त सिपुर्द करने के आवश्यक उपाय करेगी किन्तु इस शर्त के साथ कि उक्त अस्थायी सरकार का प्रत्येक सदस्य इस संधि-पत्र को स्वीकार करने के लिए अपनी लिखित प्रतिज्ञा दे। परन्तु यह प्रतिबन्ध आज की तारीख से बारह महीने समाप्त होने के उपरान्त लागू न रहेगा।

१८

इस सन्धि-पत्र को श्रीमान सम्राट की गवर्नमेंट तुरन्त पर्लिमेंट की स्वीकृति के लिए पेश करेगी और आयरिश हस्ताक्षरकर्ता इसी काम के लिए बुलाये हुए, उन मेम्बरों की मीटिंग में इसे उपस्थित करेंगे, जो दक्षिणी आयरलैंड के हाउस आफ कामन्स में बैठने के लिए चुने गये हैं। यदि यह संधि-पत्र स्वीकृत हो गया, तो आवश्यक कानून बनाकर इसे पक्का कर दिया जायगा।

हस्ताक्षरः—

ब्रिटिश प्रतिनिध मण्डल की ओर से

डी. लायड जार्ज
आस्टेन चेम्बरलेन
बर्किनहेड
विनस्टन एस० चर्चिल
एल० वर्दिङ्गटन इवेंस
हेमर ग्रीनउड
गार्डन हिवर्ट

६ दिसम्बर १९२१

आयरिश प्रतिनिधि मण्डल की ओर से

आर्थर ग्रिफिथ
माइकेल कालिन्स
आर० सी० बार्टन
ई० एस० डुगन
जी० गेवेन डफी

परिशिष्ट

१

निम्नलिखित विशेष सुविधाओं की जरूरत होगी:—

'बेरीहेवन' का डाक यार्ड बन्दर (ए)—जल-सेना का जो स्वामित्व और अधिकार आज की तारीख में हैं वे ही बने रहेंगे। बन्दरगाह की रक्षा ब्रिटिश देख रेख के अधीन रहेगी।

'क्वीन्सटाउन' (बी)—बन्दरगाह की रक्षा ब्रिटिश देख रेख के अधीन रहेगी। कुछ (moorings) सम्राट के जहाजों के प्रयोग के लिए रहेंगे।

'बेलफास्ट लौउ' (सी)—बन्दरगाह की रक्षा ब्रिटिश देख रेख के अधीन रहेगी।

'लउ उस्वीली' (डी)—बन्दरगाह की रक्षा ब्रिटिश देख रेख के अधीन रहेगी।

उड़ान (ई)—उपर्युक्त बन्दरगाहों के पड़ोस में समुद्री तट को वायु मार्ग द्वारा रक्षा की सुविधाएं।

तैल, ईंधन, कोश (एफ)—'हालबो लाइन' और 'राथमुलेन' व्यापारिक कम्पनियों को विक्रयार्थ इस शर्त के साथ सिपुर्द किये जायँगे कि खरीदने वाले एक निश्चित मात्रा जल-सेना के कामों के लिए सदा स्टाक में बनाये रखें।

२

ब्रिटिश गवर्नमेंट और आयरिश फ्री स्टेट की गवर्नमेंट में निम्नलिखित शर्तों को कार्यान्वित करने के लिए एक परिपाटी स्थापित की जायगी:—

(ए) बिना ब्रिटिश गवर्नमेंट से समझौता किये हुए न तो समुद्री तार लगाये जांयगे और न आयरलैंड के बाहर किसी

स्थान से सम्बन्ध करने के लिए बे-तार के स्टेशज बनाये जायँगे; वर्तमान समुद्री तारों के लगाने के अधिकार और बे-तार की सुविधाएं ब्रिटिश गवर्नमेंट से समझौता करने के सिवा, हटाई नहीं जायँगी; और ब्रिटिश गवर्नमेंट को यह अधिकार होगा कि आयरलैंड के बाहर किसी स्थान से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए वह अतिरिक्त समुद्री तार लगाये या अतिरिक्त बे-तार के स्टेशन खड़े करे।

(बी) मार्ग चिन्ह, (Buoy) आलोक मञ्ज (Beacon) तथा अन्य समुद्री संकेतों या समुद्री सहायताओं का बनाये रखने का भार आज की तारीख से आयरिश फ्री स्टेट की सरकार अपने ऊपर ग्रहण करेगी, और ब्रिटिश गवर्नमेंट से समझौता करने के सिवा इनमें से कोई भी न तो हटाया जा सकेगा और न बढ़ाया जा सकेगा।

(सी) युद्ध-संकेत-स्टेशन बन्द कर दिये जांयगे और ब्रिटिश देख रेख के अधीन छोड़ दिये जांयगे; यह आयरिश फ्री स्टेट की सरकार की इच्छा पर निर्भर होगा कि यदि वह चाहे, तो इन स्टेशनों को अपने अधिकार में ले और व्यापारिक कामों के लिए उनका प्रयोग करे, किन्तु समुद्री सेना को उनके निरीक्षण करने का अधिकार होगा, और उनके वर्तमान टेलीग्राफके सम्बन्ध को बनाये रखने की गेरेन्टी (जिम्मेदारी)करनी होगी।

३

वायु मार्ग द्वारा नागरिकीय (Civil) सम्बन्ध का नियमित संचालन करने के लिए उक्त दोनों सरकारों में एक परिपाटी (Convention) स्थापित की जायगी।

डेलएरन के एक प्राइवेट अधिवेशन में डी वेलरा ने मतैक्य प्राप्त करने के अभिप्राय से कुछ प्रस्ताव रखे। परन्तु चार दिन के बाद विवाद के पश्चात भी उसकी उद्देश-पूर्ति न हुई। फिर १९ दिसम्बर को डेलका खुला अधिवेशन इस अभिप्राय से किया गया कि या तो संधि को स्वीकार किया जाय या अस्वीकृत कर दिया जाय। स्वीकृति के पक्ष और विपक्ष में बराबर कई दिनों तक ओजस्वी भाषण होते रहे। संधि के विपक्ष में मिस मेरी मैक्स्वेनी का एक बड़ा ही प्रभाव शाली भाषण पौने तीन घंटे तक हुआ और उस में डी वेलरा के पक्ष का समर्थन किया गया। इस अवसर पर अनेक प्रतिनिधियों के व्याख्यान हुए। फलतः अधिवेशन जनवरी के लिए बढ़ाना पड़ा। संधि की स्वीकृति का प्रस्ताव उपस्थित करते हुए मिस्टर ग्रिफिथ ने कहा:—

"सन ११७२ से लेकर अज तक यह पहली संधि है जो आयरिश गवर्नमेंट के प्रतिनिधियों और ब्रिटिश गवर्नमेंट के प्रतिनिधियों में बरावरी के दावे पर हुई है। यह पहली संधि है जो आयरलैंड के पद को समान रूप से स्वीकार करती है। चूंकि यह समानता की सन्धि है इसी लिए मैं उसका समर्थन करता हूं। हम लण्डन से वह सन्धि लेकर आये हैं जो आयरलैंड के स्वतंत्र राष्ट्र को स्वीकार करती है। हम अपनी पताका को लौटा लाये हैं; और हम लाये हैं उस अधिकार को जिसके द्वारा ७०० वर्षों से रहने वाली ब्रिटिश सेना आयरलैंड को खाली कर देगी और हम आयरिश सेना बना सकेंगे, हम आयरलैंड के लिए आर्थिक स्वत्व के पूर्ण अधिकार और शक्ति लाये हैं, हम आयरलैंड के लिए इंगलैंड की बरावरी का पद लाये हैं और उन राष्ट्रों के साथ भी बरावरी का पद लाये हैं जो राष्ट्र-

समूह में सम्मिलित हैं, और शान्ति तथा युद्ध के समय विदेशी मामलों में समान विचार रखने का अधिकार भी लाये हैं।"

मिस्टर 'माइकेल कालिन्स' ने एक बड़े योग्य वक्तव्य के साथ सन्धि का समर्थन किया, और मिस्टर डगन ने भी उन्हीं की पुष्टि की। अब तक किसी ने धमकी का संकेत नहीं किया था। मिस्टर जार्ज गेवन डफी और कमान्डेन्ट आर सी बार्टन ने घोषित किया कि हमने अपनी इच्छा के विरुद्ध सन्धि पर हस्ताक्षर किये थे, क्यों कि अन्यथा तात्कालिक युद्ध का भय दिखलाया गया था। सारे प्रश्न का निचोड़ इस युद्ध के भय पर निर्भर है। क्या वास्तव में ऐसा हो सकता है या यह केवल धमकी ही है ? सैनिक और समुद्री अधिकारियों ने यह हिसाब लगा लिया है कि "आयरिश प्रजातंत्र सेना" को परास्त करने के लिए २००००० आदमियों की आवश्यकता है और दो करोड़ पचास लाख पौण्ड खर्च पड़ेगा। क्षणिक सन्धि के पश्चात् ब्रिटिश मंत्रि मण्डल के एक सदस्य ने कहा था कि यदि समझौते की बात चीत भंग हो जायगी, तो पुनः युद्ध आरम्भ करने के पहले गवर्नमेंट को देश के समक्ष अपनी माँग रखनी होगी। यह हो सकता है कि तात्कालिक युद्ध की धमकी केवल इसलिए दी गई थी कि जो दो प्रतिनिधि अड़े हुए थे वे भी राजी हो जायँ। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि सन्धि की शर्तों पर हस्ताक्षर कराने के लिए ब्रिटिश प्रतिनिधियों ने किसी अंश में राजनीतिक चालबाजी और धमकी से काम लिया। किन्तु कहां तक इस बात ने प्रत्येक प्रतिनिधि के दिलों पर अपना प्रभाव डाला, इसका वर्णन केवल स्वयं वही प्रतिनिधि कर सकते हैं। जो लोग मिस्टर लायडजार्ज के साथ डी वेलरा का पत्र-व्यवहार ध्यान पूर्वक मनन करते रहे थे वे

यह अनुभव करते थे कि ब्रिटिश प्रधान सचिवने वास्तव में आयरलैंड की स्वतंत्रता स्वीकार करली थी। दोनों राष्ट्रों का सम्बन्ध और उत्तरदायित्व आपस के समझौते से निश्चित होना था। सन्धिको स्वीकार करने के विरुद्ध डी वेलरा ने जो व्याख्यान दिया था उसका साराँश इस प्रकार है:—

मैं समझता हूँ कि यदि मैं सीधे तौर से सन्धि की अस्वीकृति का प्रस्ताव रखूं, तो सम्भवतः यह कार्य वर्तमान नियमों के अनुकूल न होगा। किन्तु यदि मैं परिषद् से प्रार्थना करूँ कि वह सन्धि को स्वीकार न करे, तो पर्याप्त होगा। हम आयरिश जनता के द्वारा निर्वाचित हुए हैं, और क्या आयरिश जनता उस समय यह समझती थी कि हम झूठे हैं, जब कि हमने कहा था कि हम प्रजातंत्र को बनाये रखना चाहते हैं। तीन वर्ष हुए तब जनता ने अपने वोट से इस प्रजातंत्र को पुष्ट किया था। और पिछले मई मास के चुनाव ने, जनता के वोट द्वारा इसे पुनः पुष्ट कर दिया और साफ तौर से पुष्ट कर दिया। जब ब्रिटिश गवर्नमेंट की ओर से बात चीत करने का प्रस्ताव आया जिसमें यह कहा गया था कि हम बात चीत द्वारा इस बात का प्रयत्न करें कि हमारी राष्ट्रीय अभिलाषाओं का ब्रिटिश साम्राज्य के राष्ट्रों के सम्बन्ध के साथ साम्य कैसे हो सकता है, तब यहाँ पर उपस्थित लोगों में से मुझसे अधिक दृढ़ और कोई नहीं था कि इस बात का निश्चय कर लेने के लिए प्रत्येक मानुषिक प्रयन्त कर लिया जाय कि क्या ऐसा साम्य होना सम्भव है।

मैं इस सन्धि के विरुद्ध इसलिए हूं कि यह आयरिश राष्ट्रीय अभिलाषाओं का ब्रिटिश-राष्ट्र-समूह के सम्बन्ध से साम्य स्थापित नहीं करती। मैं इस सन्धि के विरुद्ध इसलिए नहीं हूं कि मैं युद्ध प्रिय मनुष्य हूँ किन्तु इसलिए कि मैं शान्ति-प्रिय हूँ। मैं इस सन्धि

के विरुद्ध इसलिए हूं कि यह आयरलैंड और ग्रेट ब्रिटन दोनों राष्ट्रों के शताब्दियों के संघर्ष को समाप्त नहीं करती।

हम मेल स्थापित करने की इच्छा से गये थे और हम एक ऐसी वस्तु ले आये हैं जो स्वयं हमारी जनता में ही मेल नहीं पैदा करेगी, ग्रेट ब्रिटन और आयरलैंड के मेल की बात तो दूर रही।

यदि मेल होता है, तो यह प्रत्यक्ष है कि आयरलैंड के उस दल को जो शताब्दियों से राष्ट्रीय उद्देशों को अदर्श बनाये हुए है, सन्तुष्ट होना चाहिए। प्रत्येक समझौते की कसौटी यह है कि जनता उससे सन्तुष्ट है कि नहीं। युद्ध से थके हुए लोग ऐसी बातों को भी स्वीकार कर सकते हैं जो उनके उद्देशों के अनुकूल न हों।

आप इस समय विवेक हीन जल्दी के साथ चुनाव करवा सकते हैं और जनता के वोट भी आपको मिल सकते हैं किन्तु मैं आपसे कहता हूं कि यह सन्धि उस संघर्ष को पुनः आरम्भ करेगी जो युनियन के प्रारम्भ किये हुए इतिहास की पुनरावृत्ति होगी, और लायड जार्ज को अपने परिश्रम का वही फल प्राप्त होगा जो पिट को प्राप्त हुआ था। जिन प्रस्तावों को हमारा मंत्रि मण्डल सर्व सम्मति से स्वीकार कर लेता, उन्हें डाउनिंग स्ट्रीट में वस्तुतः पिस्तौल का भय दिखला कर ठुकरा दिया गया और हमारी जनता को एक तात्कालिक युद्ध की धमकी दी गई। हाँ, केवल ऐसी दशा में इस सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर हुए हैं, और अधिकार-युक्त प्रतिनिधियों ने इस सन्धि-पत्र पर, कदाचित् व्यक्ति गत धमकी के अधीन हस्ताक्षर नहीं किये हैं, किन्तु इस पर हस्ताक्षर धमकी के अधीन हुए हैं और धमकी के अधीन स्वीकृत की हुई सन्धि के अनुरूप ही इसका राष्ट्र पर प्रभाव होगा, यह राष्ट्र उसका पालन नहीं करेगा।

मैं चाहता था, और मंत्रि मण्डल चाहता था, एक ऐसा सन्धि-पत्र प्राप्त करना, जिसका हम आश्रय ले सकें और जो आयरिश लोगों को अंगरेजों से मिलने के योग्य बना दे और उन्हें संसार के समान-नागरिकों के रूप में हाथ मिलाने का अधिकार प्रदान करे।

यह सन्धि-पत्र ब्रिटिश अधिकार को आयरलैंड में हमारा स्वामी नियुक्त करता है। यह कहा गया है कि हमें समान नागरिक होने के उपलक्ष में ब्रिटिश राजा के प्रति केवल शपथ लेनी पड़ेगी, किन्तु आयरिश व्यवस्था के पक्ष में तुम्हारी शपथ पहले से मौजूद है और अब यह व्यवस्था एक ऐसी व्यवस्था होगी जिसके द्वारा ग्रेट ब्रिटिन का राजा आयरलैंड का प्रमुख होगा।

तुम्हें उस व्यवस्था के और उक्त राजा के पक्ष में एक निष्ठता की शपथ लेनी होगी। यदि प्रजातंत्र के प्रतिनिधि आयरलैंड की जनता से ऐसा काम करने को कहें जो प्रजातंत्र के प्रतिकूल है, तो मैं कहता हूँ कि वे प्रजातंत्र का नाश कर रहे हैं। यह एक ऐसा आत्म-समर्पण होगा, जो द्वतीय हेनरी के समय से आजतक सुना भी नहीं गया। और क्या आज की पीढ़ी के हम लोग, जिसमें संसार के विख्यात आयरिश मैन हुए हैं, ऐसे महानीच सन्धि-पत्र पर अपने हस्ताक्षर कर देंगे ?

जिस समय मैं कारागार के भीतर तन्हाई की कोठरी में था, हमारे वार्डरों ने हमसे कहा था कि यदि हम चाहें तो तन्हाई की कोठरियों से उस 'हाल' में जा सकते हैं जो पचास फुट लम्बा और ४० फुट चौड़ा है। हम कोठरियों से 'हाल' में गये किन्तु इस रियायत को प्राप्त करने के लिए हमने ब्रिटिश जेलर को अपना वचन नहीं दिया कि उसको हमें जेल में रखने का अधिकार प्राप्त है।

एक दूसरे अवसर पर हम से कहा गया था कि हम एक गार्डन पार्टी में जा सकते हैं, वहां से हम पुष्पों और पहाड़ियों को देख सकेंगे। किन्तु गार्डन पार्टी में जाने की सुविधा प्राप्त करने के लिए हमने किसी ऐसे पत्र पर हस्ताक्षर नहीं किये जिसके द्वारा हम अपनी आत्मा और शरीर को जेलर के सिपुर्द कर देते।

ऐसे पत्र पर हस्ताक्षर करने की अपेक्षा जिससे ब्रिटिश लोगों को आयरलैण्ड में अधिकार प्राप्त हो, हम उस समय तक गुलाम होने के लिए तैयार हैं जब तक कि सर्व शक्तिमान ईश्वर हमारे ऊपर अत्याचार करनेवालों का नाश न कर दे। (हर्ष ध्वनि)

यदि ब्रिटिश गवर्नमेंट कोई होमरूल एक्ट या उसी प्रकार का अन्य कोई कानून पास करती, तो मैं आयरिश जनता से यह न कहता कि "तुम इसे मत ग्रहण करो।" मैं यह कहता "अच्छी बात है, यह ऐसी घटना है कि जेलर आप को तन्हाई की कोठरी से निकाल कर 'हाल' (बड़ी बैरक) में लिये जा रहा है। किन्तु इस को प्राप्त करने पर हम ऐसा इकरार नामा नहीं लिख रहे थे जिससे हम अपने मन की सरकार बनाने का अधिकार छोड़ते हों।

यह कहा गया है कि प्रजातंत्र के बिना, समझौता न करने की टेक नहीं पकड़ी गई। कुछ लोग इस बात पर दृढ़ रहे कि प्रजातंत्र की सत्ता और सम्बन्ध के प्रश्न में सामञ्जस्य लाने का प्रयत्न किया जाय। इस 'हाउस' के समक्ष एक लिखत उपस्थित की गई थी जिससे सब का मत एक हो जाय और इस बात का प्रयत्न किया गया था कि मेरा मत उस दल के मत से मिल जाये जो शताब्दियों से आयरलैण्ड के राष्ट्रीय भावों का पक्षपाती है। इसी अभिप्राय से उक्त लिखत उनके सामने रखी गई थी

और यह कि मैं उस सम्मेलन के सम्मुख एक ऐसा मसविदा उप-स्थित करूंगा जो ग्रेट ब्रिटन और आयरलैण्ड में वास्तविक शान्ति उत्पन्न करेगा। ऐसा ही मसविदा प्राप्त करना हम चाहते भी थे और अगर ऐसा मसविदा न मिलता तो हम राज़ी भी न होते। इस मसविदे से ग्रेट ब्रिटन और आयरलैण्ड की जनता को वास्तविक शान्ति प्राप्त होती, किन्तु अधिकारियों को नहीं। मैं यह जानता हूँ कि उससे राजनीतिज्ञों की शान्ति नहीं होगी। मैं यह भी जानता हूँ कि जो उक्त मसविदे को स्वीकार करेगा वह अपने भविष्य को जोखिम में डाल देगा। किन्तु वह जनता में शान्ति स्थापित करेगा और इस बात के अनुकूल होगा कि आयरिश जनता स्वयं अपने देश के भीतर प्रत्येक वस्तु की पूर्ण स्वामिनी है।

इस दृष्टिकोण से सन्धि को आलोचना करना अनावश्यक है कि उसको स्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि उसका स्वीकार करना अनियमित है और हमारी स्थिति के प्रतिकूल है। हम स्वतंत्र आयरिश राष्ट्र के रक्षक के रूप में चुने गये हैं—यह एक ऐसा राष्ट्र है जिसने अपनी पूर्ण स्वतंत्रता घोषित कर दी है।

जब तक हम 'कोलोनियल पार्लिमेंट' के पतित उदाहरण का अनुकरण न करना चाहें, जिसने कि सन १८०० में जनता की स्वतंत्रता के विरुद्ध मत दिया था, तब तक हम इस सन्धि-पत्र को स्वीकार नहीं कर सकते।

यदि उक्त सन्धि-पत्र हमारे समक्ष स्वीकार होने के लिए आवे, तो हम उसको स्वीकार नहीं कर सकते।

इसलिए वह स्वीकृति के लिए नहीं उपस्थित किया, क्योंकि ऐसा करना असंगत होता, और उसका असंगत होना ही यह

प्रमाणित करता है कि वह आयरिश उद्देशों के प्रतिकूल है, क्योंकि आयरिश उद्देशों ने अपना एक रूप धारण कर लिया है और वह है उनकी वर्तमान गवर्नमेंट का रूप।

जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, कदाचित मैं अपना मत प्रगट करने में सब से अधिक स्वतंत्र हूँ। जब प्राइवेट अधिवेशन में मैं सभापति चुना गया था, तब मेरा काम आयरलैंड की पूर्ण स्वतंत्रता की रक्षा करना था, और अब भी मैं आयरिश जनता की भलाई का भरसक प्रयत्न करना चाहता हूँ अतः समस्त उपस्थित सज्जनों से मैं प्रार्थना करता हूँ कि वे इस सन्धि की अस्वीकृति के लिए अपना मत दें।

आपका यह कार्य आयरलैंड के हित के लिए न होगा यदि आप संसार के समक्ष यह बहाना करने वाले हैं, और यह केवल बहाना मात्र है, कि यह सन्धि स्थायी शान्ति की नींव डालेगी, तो आप इस बात को भली प्रकार जानते हैं कि यदि मिस्टर ग्रिफिथ और मिस्टर कॉलिन्स भी 'डबलिन कौंसिल' में अस्थायी गवर्नमेंट स्थापित करें और जब तक आयरिश जनता अपने वोट से उसे न चुने, तो उक्त गवर्नमेंट भी उसी प्रकार बलात् अधिकार आत्मसात् करने वाली समझी जायगी जैसी डबलिन कौंसिल की पिछली गवर्नमेंट समझी गई है।

हम यह भली प्रकार जानते हैं कि इस स्थान पर ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसने लण्डन जाने वाले प्रतिनिधियों के प्रति किसी प्रकार से किये जाने वाले अक्रमणों के विरुद्ध मुझसे ज्यादा जोर से अपनी आवाज उठाई हो। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो मुझसे अधिक अच्छी तरह से जानता हो कि जो काम उन्हें करना पड़ा वह कितना कठिन था। मैंने 'डेल' से प्रार्थना की थी और उनसे कहा था कि प्रतिनिधियों को ऐसा काम करना है

जिसे एक शक्तिशाली सेना और एक बलशाली जहाजी बेड़ा नहीं कर सकेगा।

मैं उपर्युक्त बात को मानता हूँ और इस बात को भी मानता हूँ कि जो कुछ उन्होंने किया है वह उन्होंने आयरलैंड के प्रति अपने अगाध प्रेम से प्रेरित होकर किया है।

जैसा कोई व्यक्ति हो सकता है, मैं भी आयरलैंड के और आयरिश जनता के सांसारिक कल्याज के लिए इच्छुक हूँ, किन्तु ऐसा कार्य नहीं करूँगा जिससे आयरिश जनता को लज्जा से अपना सिर झुकाना पड़े। मैं इस बात की अपेक्षा पुरानी स्थिति को पुनः देखना अधिक पसन्द करूँगा, कि आयरिश लोग ऐसे सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर कर के लज्जा से अपना सिर नीचा करें, जिसके द्वारा वे किसी अन्य देश के हाथ में अपना अधिकार सौंप दें। आयरिश जनता अपनी राष्ट्रीय प्रतिष्ठा गवाँकर अपने सांसारिक कल्याण की रक्षा नहीं करना चाहती।

यह बात आयरिश जनता के अधिकार में है कि यदि वे अन्य लोगों के साथ सम्बन्ध स्थापित करना चाहते हैं, तो वे ब्रिटिश साम्राज्य में भी प्रवेश कर सकते हैं; यह भी उनके अधिकार में है कि यदि वे चाहें, तो ब्रिटिश राजा को अपना सम्राट मान सकते हैं। किन्तु क्या यह सम्मेलन यह समझता है कि आयरिश जनता एक या दो वर्षों के भीतर इतनी बदल गई है कि सात शताब्दियों के युद्ध के पश्चात् अब वह ब्रिटिश साम्राज्य में प्रवेश करना चाहती है।

क्या हम लोग इतने परिवर्तित हो गये हैं कि ब्रिटिश राजा की उपस्थिति को स्वीकार करने के इच्छुक हैं, जिसकी सेना के विरुद्ध हम युद्ध करते रहे हैं और जिसका सम्बन्ध पिछले दो वर्षों के समस्त अत्याचारों से रहा है, क्या हममें ऐसा परिवर्तन

हो गया है कि वे ब्रिटिश राजा को अपना सम्राट स्वीकार करना चाहते हैं ? वह किंग जार्ज नहीं है जिसे वे अपना राजा स्वीकार करना चाहते हैं; वह लायडजार्ज हैं। खेद का विषय तो यह है कि इस समय महान शान्ति स्थापित हो सकती थी, और उसका अन्तर भी देखा जा सकता है। उदाहरणार्थ, यदि आयरिश जनता स्वीकार कर ले, और यदि मिस्टर ग्रिफिथ या जो कोई भी उनके स्थान पर हो, यह उचित समझें कि किंगजार्ज से पार्लियामेंट का उद्घाटन करावें, तो वह डबलिन की सड़कों पर काले झण्डे देखेंगे। मैं आप से पूछता हूं कि क्या आप समझते हैं कि इस से दो जनताओं में मेल उत्पन्न होगा ? ग्रेट-ब्रिटेन की जनता क्या कहेगी जब वह देखेगी कि जिस राजा को आयरिश जनता ने स्वीकार किया है उसका डबलिन में काले झण्डों से स्वागत हो रहा है ? यदि एक सन्धि हो जाती और वह सन्धि उचित होती तो उनको (राजा को) यहां लाया जा सकता था ("नहीं, नहीं")।

हां, वह लाये जा सकते थे (नहीं, नहीं की आवाजें) क्यों नहीं लाये जा सकते थे। मैं कहता हूं कि यदि उचित सन्धि हो गई होती, तो आप फ्रान्स के सभापति को, स्पेन के राजा को, या अमेरिका के प्रेसीडेन्ट को अथवा किसी अन्य मित्र राष्ट्र के प्रमुख को आयरलैंड के राष्ट्र के नाम पर यहां ला सकते थे और आयरिश जनता बिल्कुल भिन्न प्रकार से एक मित्र राष्ट्र के प्रमुख के रूप में उनका स्वागत करती, जो इनके देश में मित्रवत् यात्रा करने आया होता, नकि एक ऐसे राजा के रूप में जो आयर-लैंड को अपनी कानूनी मिल्कियत समझता हो। एक दशा में आयरिश जनता उसे लुटेरा (usurper) समझेगी और दूसरी स्थिति में उसे अपने देश में आया हुआ एक प्रतिष्ठित मेहमान

समझेगी। अतएव मैं इस सन्धि के विरुद्ध हूं, क्यों कि इससे मुख्य कार्य की पूर्ति नहीं होती और हमें शान्ति नहीं प्राप्त होती। इस सन्धि से हमारे देश में उसी प्रकार गृह-कलह बनी रहेगी जैसी 'युनियन एक्ट' से बनी रही है।

पिछली शताब्दियों में हमारे देश का यह एक बड़ा दुर्भाग्य रहा है कि हमारे आन्तरिक प्रश्नों और निजी घरेलू सवालों पर आयरलैंड और ग्रेट ब्रिटन के सम्बन्ध के कारण, पूरा ध्यान नहीं दिया जा सका। अमेरिका के पिछले सभापति के चुनाव में आन्तरिक मामले सब से मुख्य विषय न थे; दूसरी बातें सामने थीं। सबसे बड़ा प्रश्न अन्तर्राष्ट्रीय था। उस समय यह अमेरिका का दुर्भाग्य था और १२० वर्षों से आयरलैण्ड का भी बड़ा दुर्भाग्य रहा है, और यदि वर्तमान सन्धि स्वीकार करली गई, तो यह दुर्भाग्य प्रचलित रहेगा। मैं इसके विरुद्ध हूँ, क्योंकि वह हमारी स्थिति के प्रतिकूल है। और यदि डेल यह कहे कि आयरिश जनता की इच्छा उसका पालन करने की नहीं है, तो उसे अपने प्रतिनिधियों से कह देना चाहिए था कि हमारा अभिप्राय सन्धि के पालन करने का नहीं है।

यदि प्रतिनिधियों के चेयरमैन ने यह कहा होता कि जिन बातों को आप मानते हैं मैं उनको नहीं मानता, तो वह चुना न गया होता, यदि आयरिश जनता अपना संकल्प परिवर्तित करना चाहती तो वह ऐसा कर सकती थी।

आयरिश जनपद अपना स्वामी है, वह अपनी इच्छानुसार कार्य कर सकता है, किन्तु आयरिश जनपद ही ऐसा कर सकता है। आयरिश जनता को इस बात का यश मिलना चाहिए कि जो कुछ उसने कहा था वही उसका अभिप्राय भी

था, ठीक उसी तरह से आप के प्रतिनिधि जो कुछ कहते हैं वही उन का मतलब है।

मैं समझता हूँ कि मुझे इस विषय पर अब अधिक कहने की आवश्यकता नहीं। मैंने इस विषय में आम तौर पर अपने विचार प्रकट किये हैं और यदि आप चाहें, तो हम उसकी एक एक धारा पर विचार कर सकते हैं किन्तु प्राइवेट अधिवेशन में उन पर विचार हो चुका है, अतः मैं समझता हूँ कि फिर ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है।

इस लिए मैं आप से प्रार्थना करता हूँ कि आप दो मुख्य कारणों से इस सन्धि को अस्वीकार कीजिए, क्योंकि आप जानते हैं कि वह हमारी स्थिति के बिल्कुल प्रतिकूल है; वह आयरिश स्वतंत्रता को मिटा देती है; वह ब्रिटिश साम्राज्य के प्रमुख को, केवल एक सम्बन्धित संख्या के प्रमुख के रूप में नहीं किन्तु आयरलैण्ड का राजा स्वीकार करती है, जो आयरलैंड की कार्य्य कर्तृ मण्डल का मूल है। आयरलैण्ड के मंत्री सम्राट के मंत्री होंगे; जिस सेना के विषय में कमान्डेन्ट मेकीन ने कहा है वह सेना सम्राट की हो जायगी (आवाज "नहीं")। आप शब्दों पर हँस सकते हैं किन्तु मैं कहता हूँ कि शब्दों का अर्थ है और सन्धि में तो शब्दों का अर्थ कुछ अवश्य होता है अन्यथा वे रखे ही क्यों जाँय। उनका अर्थ होता है और उनमें कुछ वास्तविक घटनाओं का वर्णन होता है, उनके विरुद्ध आप अपनी आंखें नहीं बन्द कर सकते। इस सन्धि का यह अर्थ है कि आयरिश फ्री स्टेट के मंत्री श्री मान सम्राट के मंत्री होंगे और आयरिश सेना श्रीमान् सम्राट की सेना होगी। ("नहीं, नहीं")

समय बतलायेगा और मुझे आशा है कि आप ऐसा अवसर नहीं आने देंगे, क्योंकि आप इस सन्धि का तिरस्कार कर देंगे। अगर आप इसे स्वीकार करेंगे, तो समय आप को बतलायेगा। यह नहीं हो सकता कि इस सन्धि का एक परिणाम इस परिषद् में हो और दूसरा ब्रिटिश हाउस आफ कामन्स में। यह सन्धि दोनों ओर से स्वीकृत एक लिखत है और दोनो ओर से उसकी व्याख्या भी समान ही होनी चाहिए। यदि उसके अर्थों की व्याख्या में मतभेद है, तो हम जानते हैं कि उससे कौन लाभ उठायेगा ?

मेरा यह मत है, और यदि मेरे यह शब्द लेखबद्ध हो जायें तो उसकी चिन्ता नहीं हैं, कि आयरलैंड में मुख्य कार्य-वाहक और अधिकारी ब्रिटिश राजा है—ब्रिटिश अधिकारी। उस अधिकारी के द्वारा आयरिश मंत्री कार्य करेंगे। आयरिश सेना का कमान्डर इन चीफ अंगरेजी राजा होगा जिसके प्रति, आयरलैंड के सैनिक, राज भक्ति की शपथ लेंगे। यह कार्य उनकी स्थिति और प्राचीन राष्ट्रीय प्रथा के अनुपयुक्त होगा और चूंकि वह अनुपयुक्त होगा अतः वह शान्ति नहीं स्थापित कर सकता।

पार्नल से भी ऐसा ही करने को कहा गया था—और यह भी कहा गया था कि यह अंतिम समझौता है। किन्तु उसने कह दिया था कि किसी को यह अधिकार नहीं है कि वह राष्ट्र की उन्नति की सीमा को निर्धारित कर दे।

यदि आप इस सन्धि को स्वीकार करते हैं तो आप एक राष्ट्र की आगे बढ़ने वाली यात्रा की सीमा परिमित कर देते हैं।

डेलएरन ने सात के बहुमत से सन्धि को स्वीकार कर लिया—६४ मत पक्ष में थे और ५७ विपक्ष में। और ब्रिटिश हाउस आफ कामन्स में वह ४७ के विरुद्ध १६६ वटों से स्वीकृत हो गई

लण्डन में हस्ताक्षर की हुई सन्धि पर वोट लिए जाने के पहले डी वेलरा ने अपने वे प्रतिपक्षी-प्रस्ताव उपस्थित कर दिये, जिसका मसविदा प्राइवेट अधिवेशन में प्रतिनिधियों के सम्मुख आ चुका था। और मसविदे का नाम "सन्धि-पत्र संख्या २" रखा गया था और डी वेलरा के कथनानुसार उसमें सम्मिलित प्रस्तावों के कारण प्रजातंत्र एक खासी हद तक पहुँच गया था। एकता और शान्ति उत्पन्न करने की अभिलाषा से उसमें कुछ ऐसे विषय सम्मिलित कर लिये गये थे जिन्हें ब्रिटिश गवर्नमेंट ने स्वीकार कर लिया था। इन प्रस्तावों का आधार ब्रिटिश राष्ट्र-समूह के साथ, समान हित के लिए, वाह्य सम्बन्ध पर निर्भर था। इसकी छठी धारा के अनुसार ब्रिटिश सम्राट को उक्त सम्बन्ध का शिरमौर ठीक उस तरह से स्वीकार किया गया था जैसे जापान, इंगलैंड, फ्रान्स और दूसरी शक्तियां प्रेसीडेण्ट विलसन या इटेली के राजा को लीग आफ नेशन्स का शिरमौर या चेयरमैन मान या चुन सकती हैं।

यदि डी वेलरा के प्रतिपक्षी-प्रस्ताव स्वीकार कर लिये गये होते, तो स्थायी शान्ति और इंगलैंड के साथ मेल स्थापित हो गया होता। जहाँ तक आयरिश नौकरियों का सम्बन्ध है निस्संदेह यह सन्धि बड़ी उत्तम है, किन्तु वह उस स्थिति को लाने में असफल हुई है जिसे इंगलैंड सब से अधिक चाहता था—घर और बाहर, आयरिश जाति के साथ शान्ति, जिसके द्वारा अमेरिका से मित्रतापूर्ण सहयोग प्राप्त हो, ताकि वह अपने विश्वव्यापी प्रश्नों को हल कर सके।

यदि इंगलैंड और आयरलैंड में पूर्ण स्वतंत्र राष्ट्रों की तरह सन्धि हुई होती, तो दोनों देशों में शक्ति उत्पन्न हो गई होती। किन्तु जब तक आयरलैंड की पूर्ण स्वतंत्रता न स्वीकार की

जायगी, जिसके लिए डी वेलरा इतनी वीरता से लड़ा है, तब तक आयरिश जाति में स्थायी शान्ति नहीं हो सकती। कदाचित् मिस्टर लायडजार्ज जो अपने हृदय में संसार की शान्ति रखने का दावा करते हैं, अब भी इस अवसर से लाभ उठा कर और दोनों राष्ट्रों के समझौते और शान्ति के एक मात्र सच्चे मार्ग को ग्रहण करके अपने भविष्य को सबसे उच्च शिखर पर पहुँचा सकते हैं।

उसी दिन डी वेलरा का भविष्य भी उच्चतम शिखर पर पहुँचेगा।

उपसंहार

एंग्लो-आयरिश संधि का परिणाम यह हुआ कि आयरिश देशभक्तों और आयरिश रीपब्लिकन आर्मी में गहरी फूट पड़ गई। डी वेलरा ने स्पष्ट कह दिया कि 'आयरलैण्ड को हर्गिज ऐसी लज्जा जनक संधि स्वीकार न करनी चाहिये।' पर इसके विपरीत माइकेल कालिन्स और आर्थर ग्रिफिथ बार-बार लण्डन जाकर ब्रिटिश मंत्रियों से सलाह मशविरा कर रहे थे और समझौते को दृढ़ करते जाते थे। कुछ ही दिनों में दोनों दलों के विरोध ने भयंकर रूप धारण कर लिया और जो लोग अब तक कंधे से कंधा भिड़ा कर देश की स्वाधीनता के लिये अङ्गरेजों से युद्ध कर रहे थे अब आपस में ही मरने कटने लगे। आयरलैण्ड में गृह कलह आरम्भ हो गया और एक भाई दूसरे भाई का खून बहाने लगा। यद्यपि डी वेलरा अब भी केवल अङ्गरेजों और उनके पक्षपातियों से ही लड़ना चाहता था, पर फ्री स्टेट की नई सरकार पद-पद पर उसके दल वालों का विरोध कर रही थी, इसलिये उसे इन लोगों के विरुद्ध भी शक्ति का प्रयोग करना पड़ा। सन १९२२ का साल इसी प्रकार की मारकाट और अशान्ति में व्यतीत हुआ और आयरलैण्ड के बड़े-बड़े शूरवीर देश भक्तों के प्राण व्यर्थ में चले गये। २६ मार्च को डबलिन में आयरिश रीपब्लिकन आर्मी का एक वृहत अधिवेशन हुआ जिसमें स्पष्टरूप से घोषणा की गई कि रीपब्लिकन आर्मी प्रजातंत्र के पक्ष में है, नई सरकार से उसका कोई सम्बन्ध नहीं।

डी वेलरा के दल वालों ने फ़ोर कोर्ट और अन्य कई प्रसिद्ध इमारतों पर कब्जा कर के मोर्चाबन्दी कर ली और वहीं शिनफीन दल का हैडक्वार्टर कायम कर दिया गया। इन लोगों ने हथियारों

से भरा एक अङ्गरेजी जहाज भी, लूट लिया। ये हथियार इङ्गलैंड से नई सरकार की सेना के लिये भेजे गये थे। इस अवसर पर डी वेलरा को एक ही साथ दो भयंकर शत्रुओं का मुकाबला करना पड़ रहा था। संधि के समय ब्रिटिश सरकार ने वचन दिया था कि जैसे ही आयरलैण्ड की शासन सभा उसकी शर्तों को स्वीकार कर लेगी ब्रिटिश सेनायें पुलिस और अन्य पदाधिकारी उस देश से वापस बुला लिये जायेंगे। पर डी वेलरा को संधि के विरुद्ध देख कर यह नीति बदल दी गई और फ्री स्टेट के अधिकारी अङ्गरेजी सेना के साथ मिल कर शिनफोन दल का दमन करने लगे। पर डी वेलरा की हिम्मत इस तरह की बाधाओं से पस्त न हुई; उसने खुल्लम खुल्ला घोषणा कर दी।

we made it impossible for the British government to rule Ireland and we can also make it impossible for an Irish government working under British authority to rule Ireland.

(अर्थात्—हमने अङ्गरेजी सरकार के लिये इस देश पर शासन करना असम्भव कर दिया, और हम उस आयरिश गवर्नमेंट के लिये भी, जो ब्रिटिश सरकार की मातहत है, आयरलैण्ड पर शासन करना असम्भव कर सकते हैं।)

डी वेलरा और उसके साथियों के बढ़ते हुए प्रभाव से घबड़ा कर नई सरकार के अधिकारियों ने ब्रिटिश राज-नीतिज्ञों की सलाह से आयरलैण्ड की शासन सभा डेल एरियन का सार्वजनिक चुनाव करने का निश्चय किया जिसके द्वारा वे संसार को दिखला सकें कि देश का बहुमत उनके पक्ष में हैं और डी वेलरा अपने स्वार्थ के लिये अथवा जिद के कारण अशान्ति फैला रहा है। यह चुनाव १६ जून १९२२ को हुआ। शिनफोन दल ने इसमें

भाग लिया पर चुनाव का तमाम प्रबन्ध नई सरकार के अधिकारियों के हाथ में था और इङ्गलैण्ड की सरकार इनको सब प्रकार से सहायता कर रही थी, इसलिये सफलता उन्हीं को मिली। इस सफलता के आधार पर उन्होंने आयरिश रीपब्लिकन आर्मी को नष्ट करने का निश्चय कर लिया। २६ जून को सिनफीन दल के डबलिन के हैडक्वार्टर फोरकोर्ट और अन्य केन्द्रों पर आक्रमण आरम्भ हुआ और उन पर अङ्गरेजी तोपों से गोलों की वर्षा कराई गई। इसका फल यह हुआ कि रीपब्लिकन आर्मी का जोर डबलिन में घट गया, पर दक्षिणी आयरलैण्ड में वह और भी प्रबल होगई। और वहाँ एक प्रकार से उसी का शासन स्थापित हो गया। १५ अगस्त को नई सरकार का प्रधान समर्थक माइकेल कालिन्स मारा गया और उसके अतिरिक्त अन्य कितने ही सन्धि के पक्षपातियों की यही दशा हुई। अवस्था यहाँ तक भीषण हो उठी कि सरकार के सर्व प्रधानकार्यालय को काँटेदार तारों के पीछे छुपकर अपनी रक्षा करने को बाध्य होना पड़ा। अङ्गरेजी सिपाहियों और पुलिस के भूतपूर्व कर्मचारियों की हत्यायें बहुत बढ़ गई और स्थान-स्थान पर सरकारी सम्पत्ति नष्ट की जाने लगी। सन् १९२२ और १९२३ के कुछ महीनों में क़रीब १४० बड़े-बड़े भवन जला दिये गये और रेल के कितने ही पुलों को हानि पहुंचाई गई।

इसी बीच में नई सरकार के प्रेसीडेन्ट ग्रिफिथ का देहान्त हो गया और उसकी जगह विलियम कासग्रेव प्रेसीडेन्ड नियत हुआ। यह व्यक्ति कंजरवेटिव अर्थात् संकीर्ण विचारों का था। इसने देश के धनवान तथा प्रभावशाली प्रोटेस्टेण्ट लोगों को शामिल करके शासन करना आरम्भ किया। सीनफीन दल को नष्ट करने के लिये इसने मार्शल्ला की घोषणा कर दी। २९ सितम्बर को डेल में एक प्रस्ताव पास किया गया कि अब से

आगे विद्रोह सम्बन्धी मामलों का विचार साधारण अदालतों में न होकर फौजी अदालतों में होगा, यह फाँसी तक की सजा दे सकेंगी। कासग्रेव की सरकार ब्रिटिश सरकार से भी बढ़ कर नृशंसता और निर्दयता पूर्ण दमन करने लगी अन्त में डी वेलरा, ने यह देखकर कि इस प्रकार के गृह-युद्ध का परिणाम देश का सर्वनाश होगा, सन् १९२३ के आरम्भ में सशस्त्र संग्राम बन्द कर देने की घोषणा कर दी।

सन् १९२५ में अलस्टर और फ्री स्टेट की सीमा का झगड़ा खड़ा हुआ। संधि के समय आयरिश प्रतिनिधियों ने एक शर्त यह रखी थी कि अलस्टर और फ्री स्टेट की सीमा का फ़ैसला उस प्रदेश के निवासियों की इच्छानुसार किया जाय और इसके लिये एक कमीशन नियत किया जाय जिसमें दोनों पक्षों के प्रतिनिधि शामिल हों तथा जिसका चेयरमैन ब्रिटिश सरकार द्वारा चुना हुआ व्यक्ति हो। आयरलैण्ड के राष्ट्रवादियों को आशा थी कि इस कमीशन द्वारा अलस्टर की सीमा इस प्रकार संकुचित कर दी जायगी जिससे उसका पृथक् अस्तित्व रह सकना असम्भव हो जायगा और वह स्वयम् फ्रीस्टेट के साथ मिल जायगा। जब इस कमीशन का कार्य समाप्त होने लगा तो उसके सदस्यों में घोर मतभेद उत्पन्न हो गया और फ्री स्टेट के सदस्य उसके अधिवेशन को छोड़ कर उठ गये। इस पर ब्रिटिश सरकार ने फ्री स्टेट से समझौता किया कि सीमा का प्रश्न ज्यों का त्यों छोड़ दिया जाय और इस समय जिसका जहां तक अधिकार है वह पूर्ववत् बना रहे और इसके बदले में उसने युद्ध ऋण का वह अनिश्चित भाग जो आयरलैण्ड के जिम्मे रखा गया था छोड़ देने की प्रतिज्ञा की। डी वेलरा को यह अच्छा मौका मिला और उसने इस बेईमानी के सौदे की बड़ी निन्दा की। इस पर देश भर में बड़ा

आन्दोलन मचा और प्रेसीडेण्ट कासग्रेव की सरकार की बड़ी बदनामी हुई। पर इस समय डी वेलरा के समस्त अनुयायी शपथ न ले सकने के कारण 'डेल' से बाहर थे इसलिए वे कोई व्यावहारिक कार्रवाई इसके विरुद्ध न कर सके। सन् १९२७ के चुनाव में डी वेलरा के दल ने, जो अब सिनफीन के बजाय फ़िना फ़ेल के नाम से मशहूर था, निश्चय किया कि, उसके प्रतिनिधि बिना शपथ लिये 'डेल' में सम्मिलित हों। उन लोगों ने ऐसा ही किया, पर सरकारी अधिकारियों ने उनको प्रतिनिध मानने से इनकार कर दिया। इस पर फिर आपस में तनातनी हुई और 'डेल' का वाइस प्रेसीडेण्ट कौविन ओहिगन मार डाला गया। इस पर फ्री स्टेट की सरकार ने घोर दमन कारी कानूनों की सृष्टि की और शान्तिपूर्ण उपायों से काम लेने वाले प्रजातंत्र वादी भी दोषी ठहराये गये। डी वेलरा ने देखा कि इसके परिणाम स्वरूप फिर गृह-युद्ध छिड़ जायगा और समस्त देश को कष्ट सहना पड़ेगा। सुतराम् वह अपने साथियों सहित शपथ लेकर 'डेल' में सम्मिलित हो गया, पर साथ ही उसने यह भी स्पष्ट कह दिया कि वह इस शपथ को केवल एक दिखावटी चीज़ समझता है जिसका कोई अर्थ नहीं है।

इस प्रकार डी वेलरा की पार्टी को प्रबल होते देख कर कास ग्रेव ने 'डेल' को बर्खास्त कर दिया और नया चुनाव कराया। उसमें कासग्रेव की पार्टी के सदस्यों की संख्या प्रजातंत्र वादियों से कुछ अधिक हो गई। जब डी वेलरा ने देखा कि आयरलैण्ड के निवासी संधि को तोड़ने का महत्व पूरी तरह नहीं समझते और केवल इसी बात पर उसका पूर्णतया समर्थन नहीं करते तो उसने अपने कार्यक्रम को अधिक व्यवहारिक रूप देने का निश्चय किया। संधि के समय आयरलैण्ड की सरकार ने इङ्गलैण्ड

को ५० वर्ष या इससे भी ज्यादा समय तक प्रति वर्ष ३० लाख पौण्ड देने का वादा किया था। यह रक़म आयरलैण्ड के किसानों की जमीन खरीदने के लिये उनके जमींदारों को दी गई थी और किसानों से ही वसूल की जाती थी। डी वेलरा ने घोषणा की कि इस रक़म का दिया जाना न्याय अथवा नीति की दृष्टि से उचित नहीं है और जब तक ग्रेटब्रिटेन एक निष्पक्ष न्यायालय के सामने अपना दावा सिद्ध न कर दे तब तक इस रक़म को देना बन्द कर देना चाहिये। इसके अतिरिक्त उसने आयरलैण्ड को ग्रेटब्रिटेन के आर्थिक बन्धन से मुक्त करने और यथा सम्भव स्वावलम्बी बनाने की योजना भी प्रस्तुत की।

सन् १९३२ के आरम्भ में फिर नया चुनाव हुआ और डी वेलरा के दल ने इस अवसर पर शासनाधिकार प्राप्त करने के लिये पूरी चेष्टा की। उसका नया प्रोग्राम जनता को बहुत पसन्द आया और बड़ी बड़ी शक्तियों के विरोध करने पर भी उसे सफलता प्राप्त हुई। मार्च के आरम्भ में आयरलैंड के शासन की बागडोर फिनाफेल दल के अनुयाइयों के हाथ में आ गई और डी वेलरा आयरिश फ्री स्टेट की शासन सभा का प्रेसीडेण्ट नियत किया गया। अधिकार हाथ में आते ही उसने रायटर के प्रतिनिधि द्वारा निम्न लिखित कार्यक्रम की घोषणा की—

(१) पबलिक सेफ्टी बिल, जिसके अनुसार प्रजातंत्रवादियों को सजा देने के लिये विशेष अदालातें नियत की गई हैं, रद्द कर दिया जायगा।

(२) राजभक्ति की शपथ का नियम उठा दिया जायगा, ऐसा करना संधि की शर्तों के विरुद्ध नहीं है।

(३) गवर्नर जनरल का पद तोड़कर उसके अधिकार प्रजातंत्र के प्रेसीडेण्ट को दे दिये जायँगे।

(४) उत्तरी और दक्षिणी आयरलैण्ड की कृत्रिम सीमा को रद्द करके संयुक्त आयरलैण्ड की स्थापना की जायगी।

(५) इङ्गलैण्ड को जो ३० लाख पौण्ड सालाना दिया जाता है उसे रोक दिया जायगा और जो रकम भेजी जा चुकी है उसके लौटाने का दावा किया जायगा।

(६) आयरलैण्ड के उद्योग धन्धों की उन्नति की जायगी।

डी वेलरा प्रेसीडेण्ट होने के पहले ही भली प्रकार समझता था कि अपने कार्यक्रम को पूरा करने के लिये उसे अङ्गरेजों से काफ़ी लड़ना झगड़ना पड़ेगा और इसके लिये वह तैयार था। २३ मार्च को उसने ब्रिटिश सरकार के पास एक सन्देश भेजा जिसमें आयरलैण्ड का दावा जोरदार और स्पष्ट भाषा में प्रकट किया गया था। उसमें कहा गया था कि "राजभक्ति की शपथ का नियम उन लोगों के लिये, जिन्होंने अत्यन्त स्पष्ट रूप से उसके हटाने की प्रतिज्ञा कर ली है, एक बड़े भार के समान है। इङ्गलैण्ड और आयरलैण्ड के बीच में जो संधि हुई थी उसमें इस प्रकार का कोई नियम न था कि दोनों देशों को समान रूप से त्याग अथवा बलिदान करना पड़ेगा। आयरलैण्ड के निवासी हृदय से उस संधि के विरुद्ध थे, पर युद्ध के भय से उन्हें उसे स्वीकार करना पड़ा। संधि के कारण आयरलैण्ड का अङ्ग भङ्ग हो गया और उसका एक अत्यन्त पवित्र भाग उससे पृथक् हो गया। इङ्गलैंड ने आयरलैंड से जितना कर लेना निश्चय किया है वह अनुपात की दृष्टि से जर्मनी से लिये जाने वाले हर्जाने से भी अधिक था। राजभक्ति की शपथ का हटाया जाना शान्ति और सुशासन की दृष्टि से अत्यावश्यक है। इसलिये शीघ्र ही शासन सभा में एक बिल इस प्रस्ताव को कार्य रूप में परिणत करने के लिए पेश किया

जायगा। फ्री स्टेट के सामने ऐसा कोई बाकायदा इकरारनामा नहीं है जिसके अनुसार सालाना कर देना आवश्यक हो, पर यदि इङ्गलैंड कोई न्यायपूर्ण दावा पेश करेगा तो उसे मान्य किया जायगा।"

डी वेलरा की इस घोषणा ने इङ्गलैंड के राजनीतिक क्षेत्र में खलबली मचा दी और उसे दबाने के लिये तरह-तरह की धमकियां दी जाने लगीं। आरम्भ में अङ्गरेजी अधिकारियों ने ऐसा भाव प्रकट किया कि डी वेलरा के कार्य के फल से दोनों देशों की संधि भङ्ग हो जायगी और इङ्गलैंड फिर आयरलैंड से युद्ध छेड़ देगा। अन्य उपनिवेशों की सरकारों द्वारा भी डी वेलरा को धमकी दिलाई गई। ओटावा में होने वाली इम्पीरियल आर्थिक कान्फरेन्स के संचालकों ने लिखा कि अगर डी वेलरा शपथ को हटायेगा तो आयरलैंड के प्रतिनिधियों को कान्फरेन्स में स्थान न मिल सकेगा। इन तमाम धमकियों को डी वेलरा पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ा और उसने ११ अपरैल को एनिस नामक स्थान में भाषण देते हुए कहा—

"आयरलैंड इङ्गलैंड का उपनिवेश नहीं है। वह संसार का एक अत्यन्त प्राचीन राष्ट्र है और उसे राष्ट्रीयता के समस्त अधिकार प्राप्त हैं। अङ्गरेज राजनीतिज्ञों को आयरलैंड पर सत्ता जमाने की उन्मादपूर्ण आकांक्षा त्याग देनी चाहिये। हम इङ्गलैंड के साथ मित्रता का व्यवहार करने को तैयार हैं पर ऐसा होना पूर्ण समानता के आधार पर ही सम्भव है। पुराने जमाने में आयरलैंड का यह कह कर अपमान किया जाता था कि आयरलैंड निवासी अनुभव करना नहीं जानते और न उनमें इसकी शक्ति है। पर अब मैं स्पष्ट बतला देना चाहता हूँ कि

जब तक इङ्गलैंड अपने दावे को सिद्ध न कर देगा तब तक आयरलैंड कर की एक पाई भी नहीं देगा।"

इसी दिन आस्ट्रेलिया के प्राइम मिनिस्टर को उत्तर देते हुए उसने लिखा—

"मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि जैसे ही इङ्गलैंड यह समझ लेगा कि मित्रता का एकमात्र आधार समानता का व्यवहार है न कि तरह तरह की अनुचित शर्तें और अन्यायपूर्ण ढङ्ग से भार लादना उसी समय से हमारी और उसकी सच्ची मित्रता स्थापित हो जायगी।"

जब अङ्गरेज राजनीतिज्ञों ने देखा कि डी वेलरा इस तरह की धमकियों में आने वाला नहीं है तो उन्होंने आयरलैंड के माल पर भारी कर लगाकर उसे हानि पहुँचाने और अपनी बातों को मनवाने की चेष्टा की। पर डी वेलरा इससे भी विचलित न हुआ उसने इसके जवाब में इङ्गलैंड के माल पर भी उसी प्रकार की भारी चुङ्गी लगा दी।

डी वेलरा और अङ्गरेज राजनीतिज्ञों की यह खींचतान अभी तक चल रही है। इन समस्याओं को सुलझाने के लिये बार बार दोनों देशों के प्रतिनिधियों की बैठकें होती रहती हैं, पर अभी तक कोई नतीजा नहीं निकला। डी वेलरा आयरलैंड की शोचनीय आर्थिक अवस्था और संसार व्यापी उथल पुथल को दृष्टि में रखकर अपना दावा पेश करता है और अङ्गरेज राजनीतिज्ञ संधिपत्र की शर्तों का पालन करने पर जोर देते हैं। इस सम्बन्ध में हाल ही में (१९ अप्रैल को) डी वेलरा ने 'डेल' के अधिवेशन में भाषण देते हुये कहा—

"अगर हम भिखारी की तरह हाथ फैलाकर इङ्गलैंड के सामने जाते और उससे अनुग्रह और उदारता की याचना करते

तो सम्भव था कि वह छोटे मोटे सुधार कर देता और किसी तरह समझौता हो सकता। पर हम केवल न्याय के नाम पर अपना दावा पेश कर रहे हैं और इसे वह किसी अंश में मानने को तैयार नहीं है। इस प्रकार एक तरफ तो वह फ्री स्टेट के साथ शाईलाक का* सा वर्ताव कर रहा है और दूसरी तरफ अन्य योरोपियन राष्ट्रों तथा अमरीका से उस ऋण को भी माफ कराना चाहता है जो कानूनन जायज़ है। अब समस्त संसार इस बात को स्वीकार कर चुका है कि अगर दुनिया में फिर से आर्थिक शान्ति स्थापित करनी है तो उसके लिये आवश्यक है कि विभिन्न राष्ट्रों के भारी-भारी ऋण रद्द कर दिये जायँ। हम अपने देश वासियों पर ऐसा भार स्थिर नहीं रखना चाहते जो उन पर प्राचीन काल में लादा गया था। हमारा विश्वास है कि इङ्गलैण्ड का दावा न्याय और नीति की दृष्टि से उचित नहीं है और हम इसे सिद्ध करने को तैयार हैं।"

इस प्रकार डी वेलरा ने एक ऐसे महत् कार्य में हाथ लगाया है जो यदि सिद्ध हो गया तो आयरलैण्ड केवल राजनीतिक दृष्टि से ही पूर्ण स्वाधीन न हो जायगा वरन् आर्थिक दृष्टि से भी उसे दूसरों का मुँह ताकने की आवश्यकता न पड़ेगी। यद्यपि उसका मार्ग बड़ा कंटकाकीर्ण है, पर उसके अनवरत उद्योग, दृढ़ता और साहस को देख कर आशा होती है कि अन्त में वह अवश्य अपने उद्देश्य में सफल होगा।

---

*शेक्स पीयर के नाटक का एक रक्त शोषक महाजन, पात्र।